

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २७

समानान्तर दर्शन दोसर खण्ड

भाषा, सत्ता, ज्ञान आ आधुनिक दर्शनक पुनर्पाठ



एक सय अध्यायक मूल-पाठाधारित समीक्षा

सम्पादक आ समीक्षक
आशीष अनचिन्हार

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २७

समानान्तर दर्शन

दोसर खण्डक विस्तृत दार्शनिक समीक्षा

मूल मैथिली आ अंग्रेजी द्विभाषिक ग्रन्थाधारित अध्ययन

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X • २०२६

प्रकाशन आ प्रतिलिप्यधिकार

समीक्षाक विषय : गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन — खण्ड २

मूल दर्शनग्रन्थक लेखक आ मैथिली-अंग्रेजी पाठ : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादकीय समीक्षा : आशीष अनचिन्हार

मूल कृति : विदेह, २०२६। ISSN 2229-547X।

© २०२६ प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर। मूल रचना आ सम्पादकीय प्रकाशनसम्बन्धी अधिकार सुरक्षित।

ई पुस्तक मूल दर्शनग्रन्थक अनुक्रम आ उपलब्ध वास्तविक पाठपर आधारित पृथक् आलोचनात्मक अध्ययन अछि। मूल कृतिक वाक्यसभ उद्धरणक रूपमे चिह्नित अछि; समीक्षकक विवेचनसँ अलग राखल गेल अछि।

सम्पादकीय भूमिका

दर्शनक इतिहासकें मात्र सुदीर्घ मत-सूची मानल जाए तँ ओकर जिज्ञासाक प्रक्रिया ओझर भऽ जाइत अछि। समानान्तर दर्शनक प्रथम खण्ड प्रमाण, यथार्थ, गरिमा, लोकतन्त्र, धर्मबहुलता आ इतिहासक प्रश्न उठबैत अछि। दोसर खण्ड एहि प्रतिज्ञासभकें बीसम शताब्दीक भाषिक मोड़, संरचनावाद, विखण्डन, ज्ञान-सत्ता, स्त्रीवादी विचार, उत्तर-औपनिवेशिक इतिहास, मन-दर्शन, विज्ञान आ डिजिटल व्यवस्थाक कठोर प्रश्नक समक्ष राखैत अछि।

एहि अध्ययनमे सौ अध्यायक अपन-अपन समस्या, दार्शनिक प्रतिज्ञा, पूर्वपक्ष आ व्याख्यात्मक सीमा अलग देखल गेल अछि। एक विचारधाराक नाम पर दोसर विचारधाराक अभिप्राय आरोपित नहि कएल गेल। ऐतिहासिक प्रभाव सिद्ध करबाक दावा आ केवल समस्या-साम्य देखेबाक तर्क—ई दुनूकें अलग राखब आवश्यक रहल। मिथिला तथा भारतीय शास्त्रार्थक पद्धति आधुनिक विचारकसभक गढ़ल पूर्वज नहि, अपन स्वतंत्र बौद्धिक स्रोत रूपमे उपस्थित अछि।

मूल द्विभाषिक कृतिक मैथिली अध्याय आ अंग्रेजी समकक्षक शीर्षक मिलाओल गेल अछि; चयनित पाठ-अंश समीक्षाक सन्दर्भमे उद्धृत अछि। ई चयनित द्विभाषिक पाठ-समीक्षा सम्पूर्ण वाक्य-दर-वाक्य अनुवाद-प्रमाणनक पर्याय नहि। मूल उद्धरणक वर्तनी, पारिभाषिक पद आ प्रसंग समीक्षकीय मानकीकरण सँ पृथक् सुरक्षित रहबाक चाही। जतेक दाबी मूल पाठमे अछि, तकर प्रमाणभार मूल ग्रन्थक विषयानुसार बदलैत अछि।

समीक्षाक मूल कसौटी अछि—कोन प्रश्न उठल, ओकर मूल प्रतिज्ञा कोन अछि, प्रतिपक्ष कोना संगठित भेल, तर्कक निर्णायक सीमा कतय अछि, आ पूर्ववर्ती अध्यायसँ ओकर सम्बन्ध कोना बनेत। प्रमाणक अभावमे सुन्दर आलोचनात्मक पदावली मात्रसँ नव तथ्य सिद्ध नहि होइत। एहि कारण प्रत्येक अध्यायमे मूल पाठसाक्ष्य आ स्वतन्त्र समीक्षकीय विवेचन अलग रूपमे देल गेल अछि।

अनुक्रम

1. दर्शनक दोसर मोड़: चेतनासँ भाषा धरि	8
2. बीसम शताब्दीमे दर्शन किएक बदलल?	10
3. विश्लेषणात्मक आ महाद्वीपीय दर्शनक विभाजन	12
4. भारतीय दर्शन एहि नक्शामे कतय?	14
5. मिथिलाक समानान्तर प्रवेश-बिन्दु	16
6. तुलनात्मक दर्शनक खतरा	18
7. फ्रेगे: तर्क, अर्थ आ सन्दर्भ	20
8. रसेल: वर्णन, तार्किक रूप आ जगत	22
9. मूर आ सामान्य बुद्धि	24
10. आरम्भिक विट्गेन्स्टाइन	26
11. तार्किक प्रत्यक्षवाद	28
12. कान्ताप आ तत्त्वमीमांसाक प्रश्न	30
13. क्वाइन: विश्लेषणात्मक-संश्लेषणात्मक भेदक संकट	32
14. विश्लेषणात्मक दर्शन आ नव्य-न्याय	34
15. उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन: अर्थ प्रयोगमे	36
16. ऑस्टिन: कहब सेहो करब अछि	38
17. सर्ल आ भाषिक क्रिया	40
18. भाषा निजी भऽ सकैत अछि की?	42
19. शब्दक अर्थ: वस्तु, प्रयोग कि सम्बन्ध?	44
20. भारतीय शब्दमीमांसा	46
21. मिथिलाक भाषिक विश्लेषण	48
22. संरचना की अछि?	50
23. सस्यूर: संकेतक आ संकेतित	52
24. लेवी-स्ट्रॉस: मिथक आ संरचना	54
25. संरचना आ व्यक्ति	56
26. भारतीय भाषिक परम्परा आ संरचना	58

27. संरचनावादक सीमा	60
28. संरचनासँ उत्तर-संरचना धरि	62
29. देरिदा: उपस्थितिक तत्त्वमीमांसाक आलोचना	64
30. अर्थ-भिन्नताक स्थगित प्रक्रिया: अर्थक स्थगन आ भिन्नता	66
31. लेखन, वाणी आ केन्द्रक प्रश्न	68
32. विखण्डन की अछि—आ की नहि अछि?	70
33. भारतीय दर्शन आ विखण्डन	72
34. नव्य-न्याय विखण्डनक प्रतिपक्ष?	74
35. समानान्तर उत्तरपक्ष	76
36. ज्ञान आ सत्ता अलग अछि की?	78
37. फूकोक पुरातत्त्व	80
38. वंशावली: इतिहास लिखबाक दोसर ढंग	82
39. अनुशासन, निगरानी आ सामान्यीकरण	84
40. शरीर, संस्था आ ज्ञान	86
41. फूको आ समानान्तर इतिहास-दृष्टि	88
42. उत्तर-आधुनिकता की अछि?	90
43. ल्योटाक आ महाख्यानपर अविश्वास	92
44. बौद्धियार: प्रतिरूप, माध्यम आ अधि-यथार्थता (hyperreality)	94
45. सत्यक अन्त भेल की?	96
46. विज्ञान, इतिहास आ उत्तर-आधुनिक आलोचना	98
47. समानान्तर दर्शनक उत्तर	100
48. हर्मेन्यूटिक्स: बुझब स्वयं समस्या किएक?	102
49. गाडामर: परम्परा आ पूर्वबोध	104
50. रिकोयर: पाठ, प्रतीक आ व्याख्या	106
51. लेखकक अभिप्राय बनाम पाठकक अर्थ	108
52. भारतीय भाष्य-परम्परा	110
53. मिथिलाक शास्त्रार्थ एकटा व्याख्यात्मक अभ्यास (hermeneutic practice) केर रूपमे?	112

54. फ्रैंकफर्ट स्कूल	114
55. होर्खाइमर आ अडोर्नो: आधुनिक विवेकक आत्मालोचना	116
56. मार्क्यूजे: उपभोक्ता समाज आ एक-आयामी मनुष्य	118
57. हाबर्मास: संवादात्मक विवेक	120
58. सार्वजनिक क्षेत्र आ लोकतन्त्र	122
59. शास्त्रार्थ, वाद आ संवादात्मक विवेक	124
60. स्त्रीवादी दर्शनक अनेक स्वर	126
61. सिमोन द बोउवार: स्त्री बनाओल जाइत अछि	128
62. देह, अनुभव आ सत्ता	130
63. जूडिथ बटलर: लिंग (gender), प्रदर्शनात्मकता (performativity) आ पहचान	132
64. अन्तर्संबद्ध असमानता (intersectionality): जाति, वर्ग, लिंग, धर्म आ क्षेत्र	134
65. भारतीय स्त्रीवादी दर्शनक प्रश्न	136
66. मिथिलाक समानान्तर स्त्री-दृष्टि	138
67. औपनिवेशिक ज्ञान की करैत अछि?	140
68. एडवर्ड सईद: प्राच्यवाद (Orientalism)	142
69. गायत्री स्पिवाक: अधीनस्थ बोलि सकैत अछि?	144
70. होमी भाभा: संकरता आ औपनिवेशिक अन्तराल	146
71. अधीनस्थ अध्ययन (Subaltern Studies) आ इतिहासक हाशिया	148
72. उत्तर-औपनिवेशिकतासँ औपनिवेशिकता-मुक्त (decolonial) विचार धरि	150
73. भारतीय दर्शनक औपनिवेशिक वर्गीकरण	152
74. मिथिला: साम्राज्य, राष्ट्र आ क्षेत्रक बीच	154
75. मन-दर्शन (Philosophy of Mind) केर नूतन प्रश्न	156
76. मन-देह समस्या	158
77. व्यवहारवाद, तादात्म्य सिद्धान्त (identity theory) आ कार्यात्मकतावाद (functionalism)	160

78. चेतनाक कठिन समस्या	162
79. उद्देश्यता (intentionality) आ आत्मबोध (self)	164
80. भारतीय आत्मा-अनात्मा-चित्त विवाद	166
81. न्याय, बौद्ध आ आधुनिक मन-दर्शन (philosophy of mind)	168
केर त्रिकोणीय संवाद	
82. वैज्ञानिक यथार्थवादक नूतन विवाद	170
83. प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञान	172
84. तकनीक केवल औजार नहि	174
85. डिजिटल जगतमे सत्य	176
86. एल्गोरिदम, वर्गीकरण आ सत्ता	178
87. कृत्रिम बुद्धि: बुद्धि की अछि?	180
88. मशीन चेतना: प्रश्न खुलल अछि	182
89. कृत्रिम बुद्धि (AI) युगमे प्रमाण आ उत्तरदायित्व	184
90. बहुप्रमाणीय विवेकवादक दोसर रूप	186
91. सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद आ भाषिक मोड़	188
92. गरिमा-आधारित नैतिकता आ नूतन पहचान	190
93. बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र आ नेटवर्क-सत्ता	192
94. धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता आ उत्तर-धर्मनिरपेक्ष समाज	194
95. समानान्तर इतिहास-दृष्टि: वंशावली-पद्धति (genealogy), अभिलेखागार (archive) आ प्रमाण	196
96. आत्मसमीक्षा: समानान्तर दर्शन स्वयं अपन विखण्डन कोना स्वीकारत?	198
97. संरचना अछि, मुदा संरचना नियति नहि	200
98. भाषा सीमा अछि, मुदा कारागार नहि	202
99. सत्ता ज्ञानकेँ प्रभावित करैत अछि, सत्यकेँ मनमाना नहि बनबैत अछि	204
100. गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन: खण्ड-१ आ खण्ड-२ केर समेकित प्रतिपादन	206

अध्याय 1 — दर्शनक दोसर मोड़: चेतनासँ भाषा धरि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Philosophy's Second Turn:
From Consciousness to Language*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

बीसम शताब्दीक भाषिक मोड़केँ चेतनाक निषेधक रूपमे नहि, चेतनाक सार्वजनिक अभिव्यक्तिक परीक्षणक रूपमे पढ़ब एहि अध्यायक मुख्य बौद्धिक संयम अछि। देकार्तसँ कान्ट धरि ज्ञाताक प्रश्न आ फ्रेगे-वित्गेन्स्टाइनक भाषिक प्रश्नकेँ एक सरल उत्तराधिकार-रेखा बनौने बिना लेखक अर्थ, संदर्भ आ प्रमाणक भिन्न कार्य देखबैत छथि। भाषा ज्ञानक अनिवार्य माध्यम भेलहुँ वस्तुगत संसारक एकमात्र स्रष्टा नहि—ई दाबी पुस्तकक सम्पूर्ण यथार्थवादी आधार खोलैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

भाषाक नियम सार्वजनिक अछि, मुदा अनुभवक कष्ट निजी सेहो हो सकैत अछि। यदि अर्थकेँ सामाजिक मानदण्डक अधीन पूर्णतः राखल जाए तँ मौन पीड़ा, अव्यक्त अनुभव आ नव भाषा बनौनिहार कर्ताक स्थान कोना बुझायब? दोसर दिस, भाषा वस्तु-जगतक अवश्यम्भावी व्याख्या करैत अछि, से कहि भौतिक घटना भाषासँ बनैत अछि—एहन निष्कर्ष लेखक स्वयं रोकैत छथि। एही दू सीमाक अन्तर समीक्षा लेल निर्णायक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

प्रथम खण्डक संशोध्य प्रमाण-विवेक एतय भाषिक नियमनद्वारा नव कसौटी पबैत अछि। नव्य-न्यायक पदावली आ आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनकेँ एकहि ऐतिहासिक परम्परा नहि बनौनाइ महत्त्वपूर्ण अछि; तुलनाक वैधता समान प्रश्नक विश्लेषणमे, काल्पनिक पूर्वगामिता मे नहि अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे बीसम शताब्दीक भाषिक मोड़ चेतनाकेन्द्रित दर्शनक नकार नहि, ओकर विस्तार अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्ष ई कहि सकैत अछि जे भाषिक मोड़ दर्शनक वास्तविक प्रश्नसँ दूर लऽ जाइत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that the twentieth-century linguistic turn is not a negation of consciousness-centred philosophy but an extension of it. The knower is not merely a private mind; the knower is also a linguistic, social, historical, and rule-governed being. Human beings share meanings, learn ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 1; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 2 — बीसम शताब्दीमे दर्शन किएक बदलल?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Why Did Philosophy Change in the Twentieth Century?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

बीसम शताब्दीक परिवर्तनक पाछाँ विज्ञान, गणितीय तर्क, मनोविश्लेषण, भाषा, युद्ध आ औपनिवेशिक अनुभूतिक बहुकारणी परिस्थिति लेखक स्थापित करैत छथि। एतय “दर्शन बदलल” कथनक अर्थ एकटा विद्यालयक विजय नहि, प्रमाणक अधिकार आ आत्मबोधक आधारपर नूतन विवाद अछि। विश्वयुद्धक हिंसा आधुनिक विवेकक आत्मालोचना आवश्यक करैत अछि, मुदा विज्ञानक वैध पद्धतिक समग्र परित्याग नहि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

ऐतिहासिक दबाव आ दार्शनिक विचारक कारण-सम्बन्धक बीच भेद जरूरी अछि। युद्ध भेला मात्रसँ कोनो विशिष्ट सिद्धान्त अनिवार्य रूपसँ जन्मैत नहि; गणितीय खोजक सामाजिक प्रभाव दार्शनिक रूपान्तरणक एकमात्र कारण सेहो नहि। भारतक आधुनिक संस्थागत परिवर्तनकेँ यूरोपीय खाँचाक साधारण परिशिष्ट बनायब एहि बहुस्तरक तर्कसँ असंगत होयत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अध्याय प्रथम भाषिक प्रश्नकेँ दीर्घ इतिहासमे स्थापित करैत अछि, जाहि कारण अगिला विश्लेषणात्मक-महाद्वीपीय विभाजन स्थिर सीमा नहि रहि प्रवाहमान पद्धतिगत विवाद बनैत अछि। मिथिलाक ज्ञानपरम्पराकेँ आधुनिक राजनीतिक इतिहास सँ पूर्णतः अलग पढ़नाइ सेहो पर्याप्त नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे बीसम शताब्दीक दर्शनक परिवर्तन सात-आठ अलग धाराक संयोग मात्र नहि, वरन् ज्ञानक अधिकार, तर्कक स्वरूप, आत्मक पारदर्शिता, भाषाक भूमिका,

इतिहासक दिशा, राज्यक शक्ति आ सार्वभौमिकताक दाबीक एक साथ पुनर्परीक्षण छल।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “सातम तर्क—औपनिवेशिकता यूरोपीय सार्वभौमिकताक अन्तर्विरोध उजागर कएलक।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that the transformation of twentieth-century philosophy was not merely the convergence of seven or eight separate currents; it was a simultaneous re-examination of the authority of knowledge, the form of reason, the transparency of the self, the role of language, the direction of ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 2; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 3 — विश्लेषणात्मक आ महाद्वीपीय दर्शनक विभाजन

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : The Analytic-Continental Divide

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

विश्लेषणात्मक आ महाद्वीपीय दर्शनक विभाजनमे तर्कगत शैली, भाषा, संस्थागत इतिहास आ समस्याक चुनावक अन्तर एक संग उपस्थित अछि। लेखक एकरा मनगढन्त कहि नकारैत नहि, मुदा दू स्थायी, असम्पृक्त सभ्यताक रूपमे राखबाक विरोध करैत छथि। स्पष्ट वाक्य-विच्छेद आ ऐतिहासिक-अस्तित्वगत प्रश्नक अध्ययन प्रतिस्पर्धी भेला परो परस्पर अनुपूरक भऽ सकैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

‘विश्लेषणात्मक’ शब्दसँ सदा शुद्ध तार्किकता आ ‘महाद्वीपीय’ सँ सदा अस्पष्टता बुझब पूर्वाग्रह अछि; तथापि पद्धतिक वास्तविक अन्तर नकारलासँ विवादक बौद्धिक महत्व नहि बचत। विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम आ प्रकाशनक विभाजनकें दार्शनिक सत्यक मानदण्ड मानि लेबो त्रुटि अछि। लेखकक बहुमानदण्डीय निश्चयकें विशिष्ट दार्शनिक ग्रन्थसभपर उतारि परखबाक अपेक्षा रहैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

पूर्ववर्ती अध्यायक ऐतिहासिक मोड़ एहि अध्यायमे संस्थागत रूप ग्रहण करैत अछि। भारतीय दर्शनकें एहि दू नामक बीच बाँटबाक असुविधा आगामी अध्यायक आधार बनैत अछि; वर्गीकरण उपयोगी होयत, पर विचारक नियति नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे विश्लेषणात्मक आ महाद्वीपीय दर्शनक विभाजन पूर्णतः मनगढन्त नहि, मुदा ई मूलतः ऐतिहासिक, भाषिक, संस्थागत आ पद्धतिगत प्रवृत्तिक संक्षिप्त नाम

मात्र अछि; एकरा कठोर, पूर्ण, आत्मनिर्भर दार्शनिक राज्यसभमे बदलि देब उचित नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप ई कहैत अछि, जे विश्लेषणात्मक दर्शनक स्पष्टता, तर्कसंगति आ जाँचयोग्यता आधुनिक दर्शनक वास्तविक उपलब्धि अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that the analytic–continental division is not wholly invented, but it is primarily a shorthand for historical, linguistic, institutional, and methodological tendencies; it should not be turned into two rigid, complete, and self-contained philosophical states.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय ३; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 4 — भारतीय दर्शन एहि नक्शामे कतय?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Where Does Indian Philosophy Belong on This Map?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भारतीय दर्शनक न्याय, मीमांसा, बौद्ध, जैन आ वेदान्तक प्रश्न आधुनिक पाश्चात्य द्विभाजनमे समाहित नहि होइत। पद्धति, प्रमाण आ आत्मप्रकाशक भिन्न इतिहासक सम्मान करैत लेखक भारतीय ग्रन्थकेँ स्वायत्त तर्क-विवादक स्रोत मानैत छथि। एहि दृष्टिमे “विश्व-दर्शन” बराबरीक सम्मानक नारा मात्र नहि, समान कठोर प्रमाण-परीक्षाक माँग अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

भारतीय परम्पराक स्वतंत्रता पर बल देबैत ओकर आन्तरिक असहमति देखौनाइ अनिवार्य अछि। न्याय आ बौद्ध प्रमाणमीमांसाकेँ एक समान “भारतीय दृष्टि” कहि मिलाओल जाए तँ मूल संघर्ष छिपि जाएत। औपनिवेशिक वर्गीकरणक आलोचना पर्याप्त नहि; इतिहास, सम्प्रदाय, टीकापरम्परा आ ग्रन्थक समय-सीमाक प्रमाणो आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

पाश्चात्य दर्शनक दू भागक रेखा एतय तुलनाक अनुशासित उपकरण मात्र रहैत अछि। मिथिलाक नव्य-न्याय कि एक पद्धतिगत समकक्ष प्रश्न उठा सकैत अछि, तकर आधार लेखकीय स्थापनामे अछि—पूर्वरूप होयबाक मनगढ़न्त दावा बिना।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे भारतीय दर्शनकेँ “विश्लेषणात्मक” अथवा “महाद्वीपीय” कोनो एक श्रेणीमे रखब अनुचित अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहि सकैत अछि जे भारतीय दर्शनकें विश्व-दर्शनक “बराबरीक पक्ष” बनौनाइ आधुनिक पहचान-राजनीतिक आग्रह अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that it is inappropriate to place Indian philosophy wholly within either the ‘analytic’ or the ‘continental’ category. Indian traditions possess their own independent historical questions, methods, linguistic instruments, textual traditions, and institutional lives. Yet their ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 4; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 5 – मिथिलाक समानान्तर प्रवेश-बिन्दु

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Mithila's Parallel Points of Entry

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मिथिलाक समानान्तर प्रवेश-बिन्दु केँ “महान अतीत”क घोषणा सँ हटाकऽ सूक्ष्म प्रश्न, विरोधी मतक निष्पक्ष स्थापना, परिभाषा आ प्रमाणक अनुशासनमे राखल गेल अछि। गार्गी, याज्ञवल्क्य, उदयन, वाचस्पति आ गङ्गेशक उल्लेखक बौद्धिक उपयोग एकर कारण मिथिलाक परम्परासभक अन्तःसंगति खोजनाइ अछि। स्थान-गौरवकेँ ज्ञानक विशेषाधिकार नहि देल गेल।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

‘मिथिला’क ऐतिहासिक भूगोल, दार्शनिक परम्पराक स्थान आ वर्तमान क्षेत्रीय अस्मिता तीन विभिन्न स्तर छथि। केवल नामक समानता सँ प्राचीन विचार आ वर्तमान संस्था बीच सतत निर्बाध विकास सिद्ध नहि होइत। जैविक उत्तराधिकारक रूपकक बदला प्रमाणित अभिलेख, परम्पराक परिसंचरण आ भाषिक अनुवादक इतिहास चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

एहि दृष्टि पुस्तकक क्षेत्रीय विशेषताकेँ वैज्ञानिक आत्मसंयम दैत अछि। गङ्गेशक परिभाषा-पद्धति आ सार्वजनिक प्रमाण-परीक्षा आगामी तुलनात्मक आलोचनामे कसौटी बनेत, जतय क्षेत्रीय स्रोतक मान्यता अपनहिसँ सिद्ध नहि मानल जाएत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे मिथिलाक समानान्तर दर्शनक शक्ति कोनो एक ‘महान सिद्धान्त’मे नहि, वरन् प्रश्नकेँ सूक्ष्म करबाक पद्धतिमे अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणंश : “छठम तर्क—परिभाषा केवल शब्दार्थ नहि, तर्कक सीमा-निर्धारण अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणंश : “The central thesis of this chapter is that the strength of Mithila’s Parallel Philosophy lies not in any single ‘great theory’ but in a method of making questions precise. Mithila is not the sole source of philosophy in this book; it is an important methodological home ground.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 5; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 6 — तुलनात्मक दर्शनक खतरा

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Dangers of Comparative Philosophy*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

तुलनात्मक दर्शनक पाँच स्तर—प्रभाव, समस्या-साम्य, अवधारणा, कार्य आ मौलिक अन्तर—अध्यायक सबसँ उपयोगी विधिगत वर्गीकरण अछि। दुनू ग्रन्थमे एकहि प्रश्न भेटलासँ ऐतिहासिक सम्बन्ध प्रमाणित नहि होइत; एकहि शब्द भेटलासँ अर्थ-समानता सेहो नहि। लेखकक तुलनाक औचित्य प्रतिपक्षकें कमजोर रूपमे बना कऽ जीतब नहि, तर्क-पद्धतिक भिन्न अवस्थान देखब अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

पश्चाद्दृष्टिसँ प्राचीन ग्रन्थमे आधुनिक विचार “खोजि” लेब कालभ्रम उत्पन्न करैत अछि। एकर विपरीत भारतीय ग्रन्थकें केवल आधुनिक सिद्धान्तक कसौटीपर तोलल जाए तँ स्वतंत्र दार्शनिक लक्ष्य दबि जाइत अछि। तुलना ठीक केलापर सेहो निर्णायक प्रश्न बचैत अछि: ग्रन्थक ऐतिहासिक प्रसंग आ तर्कक प्रयोजन केना सत्यापित होयत? केवल रूपात्मक समानता ई उत्तर नहि देत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

ई अध्याय सम्पूर्ण खण्डक नियन्त्रण-बिन्दु अछि। फ्रेगे सँ उत्तर-संरचनावाद धरि आ मिथिलाक प्रमाणमीमांसा सँ डिजिटल नैतिकता धरि जे तुलनासभ आगाँ आबत, तिनका सभकें एहि पाँच भेदसँ पुनः जाँचबाक होयत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे तुलनात्मक दर्शन तभी विश्वसनीय अछि जखन तुलना पाँच स्तर अलग राखय: ऐतिहासिक प्रभाव; समस्या-साम्य; अवधारणात्मक साम्य; कार्यगत साम्य; आ मूलभूत भिन्नता।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “चारिम तर्क—पश्चाद्दृष्टि-दोष
अत्यन्त सामान्य अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that comparative philosophy is reliable only when it distinguishes five levels of comparison: historical influence; similarity of problems; conceptual similarity; functional similarity; and fundamental difference. Confusion arises when these five levels are mixed together.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 6; मूल मैथिली
आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 7 — फ्रेगे: तर्क, अर्थ आ सन्दर्भ

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Frege: Logic, Sense and Reference

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

फ्रेगेक अर्थ आ सन्दर्भक अन्तर ज्ञानात्मक मूल्यक समस्या स्पष्ट करैत अछि: दू अभिव्यक्ति एक वस्तुक ओर संकेत करितहुँ सूचनात्मक योगदान भिन्न दऽ सकैत अछि। तर्कक औपचारिक रूपक महत्त्व केवल प्रतीकक नवता नहि, वाक्यक सतही व्याकरण आ तर्कगत कार्य अलग देखब अछि। एहि कारण आधुनिक अर्थमीमांसाक नूतन अनुशासन आरम्भ होइत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

शब्दक सन्दर्भ आ विचारक वस्तुनिष्ठता पर बल देबैत भाषाक सामाजिक प्रयोग, प्रसंग तथा अप्रत्यक्ष संप्रेषणक स्थान कतेक बचैत अछि? केवल अर्थ-सन्दर्भ भेद सभ भाषिक व्याख्याकें पूर्ण नहि करैत। नव्य-न्यायक अवच्छेदक अथवा सम्बन्धनिर्धारणक पदकें फ्रेगेक “sense”क सरल अनुवाद घोषित कएल जाए तँ अनुचित समतुल्यता बनत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फ्रेगे पर चर्चा पछिला तुलनात्मक सावधानीक पहिल ठोस परीक्षा अछि। परिमाणक औपचारिक समस्या आ मिथिलाक अर्थ-सम्बन्धक सूक्ष्मता संवाद करैत अछि, मुदा ग्रन्थपरम्परा आ प्रयोजन अलग रहलहुँ।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे फ्रेगे आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक एक निर्णायक मोड़ अछि, किएक तँ हुनकर कार्य तीन स्तरपर परिवर्तन अनलक: तर्कक औपचारिकीकरण; अर्थकें मनोवैज्ञानिक अनुभूतिसँ अलग करबाक प्रयास; आ भाषिक अभिव्यक्तिक सन्दर्भ आ प्रस्तुति-ढंगक भेद।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणंश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहि सकैत अछि जे अर्थ-बोध आ सन्दर्भक भेद अत्यधिक अमूर्त अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणंश : “The central thesis of this chapter is that Frege marks a decisive turn in modern analytic philosophy because his work introduced change at three levels: the formalisation of logic; the attempt to separate meaning from psychological experience; and the distinction between the reference of a linguistic expression and ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 7; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 8 — रसेल: वर्णन, तार्किक रूप आ जगत

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Russell: Descriptions, Logical Form and the World

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

रसेलक निश्चित वर्णनक सिद्धान्त देखबैत अछि जे भाषिक सतहपर जकरा व्यक्ति-विषयक नाम बुझल जाइत अछि, ओ तर्कगत विश्लेषणमे अस्तित्व, अनन्यता आ गुणक संयुक्त दाबी भऽ सकैत अछि। एहि विश्लेषणसँ कोनो काल्पनिक अथवा अस्तित्वहीन नामक वाक्य बिना निरर्थक घोषणाक जाँचा जा सकैत अछि। वाक्यक तार्किक रूपको लेखक दार्शनिक विवादक केन्द्र बनबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

दैनिक भाषा अर्थक काज अनेक बेर सन्दर्भ, संकेत, सामाजिक अपेक्षा आ अपूर्ण वर्णनद्वारा करैत अछि। प्रत्येक प्रसंगकेँ औपचारिक परिमाणक रूपमे अनवाक खर्च बुझब आवश्यक अछि। अस्तित्वक प्रश्न सुलझबैत भावनात्मक, व्यवहारिक आ संस्थागत अर्थक अवशेष बचि सकैत अछि, जकर परीक्षण केवल प्रतीकात्मक रूपसँ नहि होइत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फ्रेगेक अर्थ-सन्दर्भ भेद रसेलक वाक्य-विश्लेषणमे नूतन परीक्षा पवैत अछि। भाषा “जगतकेँ चित्रित करैत अछि” प्रस्तावक पूर्वप्रसंग एतय बनेत, मुदा आधुनिक विश्लेषणात्मक पद्धतिसँ नव्य-न्यायक ऐतिहासिक पहचान स्थापित नहि होइत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे रसेलक वर्णन-सिद्धान्त दर्शनमे ‘विश्लेषण’क शक्तिशाली उदाहरण अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहि सकैत अछि जे रसेलक विश्लेषण सामान्य भाषाकेँ अनावश्यक रूपसँ औपचारिक बनबैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Russell’s theory of descriptions is a powerful example of ‘analysis’ in philosophy. By rewriting a complex or misleading grammatical sentence into a clearer logical form, unnecessary metaphysical claims concerning existence, uniqueness, predication and reference can be ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय ८; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 9 – मूर आ सामान्य बुद्धि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Moore and Common Sense

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मूरक सामान्य-बुद्धि सम्बन्धी प्रतिवादक बल अन्धविश्वासमे नहि, दार्शनिक संशयवादीक प्रमाणभारकेँ प्रश्नांकित करबामे अछि। यदि बाह्य जगतक साधारण ज्ञान छोड़बाक लेल अत्यधिक जटिल दार्शनिक तर्क प्रस्तुत हो, तँ ओ तर्कक विश्वसनीयता सेहो परीक्षणयोग्य अछि। “हम जानैत छी”क दाबी आ ओकर प्रमाण-रचना एकहि वस्तु नहि, ई फर्क समीक्षा लेल निर्णायक अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सामान्य-बोध सामाजिक परम्परा, जाति, लिंग आ युगक पूर्वधारणा सेहो उठा सकैत अछि। अतः सहज विश्वासकेँ सुरक्षित राखब कतय उचित आ कतय आलोचना आवश्यक, ओकरा केवल बहुसंख्यक सहमति निर्धारित नहि करत। जकर अनुभूति परम्परागत “सामान्य” मान्यता सँ अलग होइत अछि, ओकर साक्ष्य सुनबाक पद्धति स्पष्ट रहबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फ्रेगे-रसेलक औपचारिक विश्लेषणसँ मूरक प्रमाण-भारक विवेक अलग दिशा खोलैत अछि। समानान्तर दर्शनमे संशयवादी प्रश्न प्रासंगिक अछि, मुदा संशयक अधिकार स्वतः सभ अनुभव नकारबाक अधिकार नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे मूरक दर्शनक शक्ति ‘सामान्य बुद्धि’क अंध समर्थनमे नहि, वरन् दार्शनिक तर्कक प्रमाण-भार उलटि देबामे अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे सामान्य-बोध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक आ सामाजिक रूपेँ बदलैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that the strength of Moore’s philosophy lies not in blind support for common sense, but in reversing the burden of proof in philosophical argument. If a philosophical theory reaches the conclusion that “we do not know that our own hands exist,” Moore asks whether that theory is ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 9; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 10 – आरम्भिक विट्गेन्स्टाइन

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Early Wittgenstein

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

आरम्भिक विट्गेन्स्टाइनक चित्र-सिद्धान्त भाषाक सत्य-असत्यक शर्तकें सम्भावित तथ्यक तार्किक रचना सँ जोड़ैत अछि। जगतकें वस्तुक सूची नहि, तथ्यक संरचित समष्टि मानबाक दाबी वाक्यक सीमा स्पष्ट करैत अछि। अर्थपूर्ण कथन आ दार्शनिक सीमा-वचनक बीच उत्पन्न तनाव स्वयं ग्रन्थक ऐतिहासिक विशिष्टता बनैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

यदि केवल चित्रणयोग्य तथ्यक वाक्य अर्थपूर्ण हो, तँ नीतिशास्त्र, सौन्दर्य, मूल्य आ भाषाक सीमा पर कएल गेल दार्शनिक कथनक स्थिति की? “कहब” आ “देखायब”क अन्तर एहि आपत्तिक सहज अन्तिम उत्तर नहि: निषेधक आत्मसन्दर्भ सँ मन बचि नहि सकैत। एतय लेखकक आत्म-विरोध चिन्हबाक क्षमता ओकर समीक्षात्मक सतर्कता अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

रसेलक तार्किक रूप-विश्लेषण एहि अध्यायमे कथनीयताक सीमाबद्ध परियोजना बनैत अछि। उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइनक बहुविध प्रयोग-सिद्धान्त अगिला चरणमे एहि कठोर सीमाक एक आवश्यक पुनर्विचार प्रस्तुत करत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे आरम्भिक विट्गेन्स्टाइन भाषा-दर्शनक एक संरचनात्मक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि: जगत वस्तुसभक केवल संग्रह नहि, तथ्यसभक समष्टि अछि; वाक्य सम्भावित तथ्यक चित्र अछि; चित्र आ तथ्यकें एक तार्किक रूप साझा करबाक चाही; आ सार्थक कथनक सीमा एहि चित्रण-सामर्थ्यसँ जुड़ल अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “दसम तर्क—एहि समस्त परियोजनामे एक आत्मविरोधक संकट सेहो अछि: यदि ग्रन्थ स्वयं भाषा-सीमाक बारेमे कथन करैत अछि, तँ की ओकर आफ्न कथन ओहि सीमा पार नहि करैत?”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that early Wittgenstein presents a structural model of philosophy of language: the world is not merely a collection of objects but the totality of facts; a proposition is a picture of a possible fact; picture and fact must share a logical form; and the limit of meaningful ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 10; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 11 — तार्किक प्रत्यक्षवाद

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Logical Positivism

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

तार्किक प्रत्यक्षवादक अर्थ-परीक्षाक आग्रह दार्शनिक वाक्यकेँ तर्क, अनुभव आ सत्यापनक कसौटी पर अनैत अछि। एहि आन्दोलनक योगदानकेँ केवल “तत्त्वमीमांसाक निषेध” कहि छोड़ब इतिहासक अन्याय होयत; वैज्ञानिक भाषाक स्पष्टता आ निरर्थक कथनक भेदक महत्त्व छल। मुदा आन्दोलनक अनेक रूपसभक बीच वैधता-मानदण्ड स्वयं विकसित होइत रहल।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सत्यापन सिद्धान्त यदि अनिवार्य सार्वत्रिक नियम अछि, तँ ओ नियम स्वयं कोन अनुभवसँ सत्यापित होइत? नैतिक, ऐतिहासिक आ सामान्य वैज्ञानिक सार्वत्रिक कथनक स्थिति सेहो सीधा अनुभवजन्य कडीमे नहि अटैत। सिद्धान्तक आन्तरिक संशोधनक इतिहास पढ़लासँ एहि कठिनाईकेँ बाहरी विरोधी द्वारा कल्पित दोष मानबाक आवश्यकता नहि रहैत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

विट्गेन्स्टाइनक भाषा-सीमा केँ वैज्ञानिक ज्ञानक संस्थागत कार्यक्रममे बदललापर नूतन शक्ति आ नूतन अतिरेक दूनू उत्पन्न होइत अछि। कानापक सूक्ष्म विश्लेषण आ क्वाइनक आलोचना एहि अध्यायक परिणामक अगिला परीक्षा होयत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे तार्किक प्रत्यक्षवाद आधुनिक दर्शनमे एक आवश्यक बौद्धिक शुद्धिकरणक प्रयास छल।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “तेसर तर्क—तत्त्वमीमांसा-विरोधक उद्देश्य केवल धर्म वा पारम्परिक दर्शनक आलोचना नहि छल।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that logical positivism was an important attempt at intellectual purification in modern philosophy. It sought to make philosophical language answerable to evidence, logic, science and public testing.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 11; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 12 — कार्नाप आ तत्त्वमीमांसाक प्रश्न

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Carnap and the Question of Metaphysics

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

कार्नापक दार्शनिक काजमे भाषिक रूपरेखाक निर्माण, वैज्ञानिक कथनक तार्किक पुनर्संरचना आ तत्त्वमीमांसक वाक्यक अर्थ-समस्या स्वतंत्र योगदान अछि। तत्त्वमीमांसा-विरोध केवल दार्शनिक परम्पराक अपमान नहि; अस्पष्ट अवधारणा सँ उत्पादित छद्मप्रश्नक परीक्षण सेहो अछि। एहि दृष्टिमे भाषाक चयन आ वैज्ञानिक उद्देश्यक सम्बन्ध विशेष गम्भीर अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

कथनकेँ भाषिक ढाँचाक भीतर अर्थपूर्ण मानलासँ ढाँचाक चयन ककर अधिकारमे रहत? भाषिक नियमक व्यवहारिक उपयोग आ वस्तुगत सत्यक निर्भरता एक नहि। यदि अनेक रूपरेखा सम्भव अछि तँ बाहरी निर्णायक प्रश्नकेँ मात्र “व्यवहारिक” कहब सामाजिक प्रभुत्वक वास्तविक अवस्थासँ मुक्त नहि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

प्रत्यक्षवादक सामान्य उद्देश्य कार्नापक कार्यमे सूक्ष्म रूप ग्रहण करैत अछि; क्वाइनक समग्रतावादी आपत्ति तकर कठोर सीमा पर प्रश्न उठबैत अछि। एहि क्रममे शब्दक अर्थक नियम आ वैज्ञानिक अनुभवक सम्बन्ध ग्रन्थक केन्द्रीय विवाद बनैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे कार्नापक दार्शनिक योगदान तत्त्वमीमांसाक साधारण निषेधसँ अधिक सूक्ष्म अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “दोसर तर्क—कार्नाप तत्त्वमीमांसाक एक पैघ हिस्साकेँ विज्ञान-विरोधी नहि, वरन् अर्थ-अस्पष्ट मानैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that Carnap’s philosophical contribution is subtler than a simple rejection of metaphysics. His principal strength lies in insisting that the linguistic form, logical category, truth-conditions, and method of testing a philosophical statement be made explicit.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 12; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 13 — क्वाइन: विश्लेषणात्मक-संश्लेषणात्मक भेदक संकट

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Quine: The Crisis of the Analytic-Synthetic Distinction

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

क्वाइनक विश्लेषणात्मक-संश्लेषणात्मक भेद पर प्रश्न आधुनिक अनुभववादक भीतरे उठैत अछि। “अर्थक कारण सत्य”क व्याख्या पुनः पर्यायता, परिभाषा वा भाषिक नियमपर आश्रित होइत अछि—एहि चक्रीयताक समस्या अध्यायक मुख्य पाठ अछि। पुष्टि-समग्रताक दाबी व्यक्तिगत कथनक अनुभवसँ पृथक एकल न्यायालयमे प्रस्तुत करबाक सरल आदर्श चुनौती दैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

समग्र विश्वासजाल बदलय योग्य भेलापर तार्किक नियम आ साधारण प्रेक्षणक संशोधन-स्वर्च समान होएब अनिवार्य नहि। सिद्धान्तक परस्पर सम्बन्ध मानब आ कोनो अवधारणात्मक भेदक उपयोगिता पूर्णतः नकारब अलग दाबी छथि। क्वाइनक आलोचनाकें भाषिक सभी भेद बिलायल मानब लेखकक मूल विवेकक प्रतिकूल होयत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

कार्नापक रूपरेखासँ क्वाइनक आपत्ति ज्ञानक संशोध्यता कें नूतन आयाम दैत अछि। न्याय-नव्यन्यायमे अभाव, सम्बन्ध आ व्याप्तिक परिभाषा सन्दर्भमे एहि विवादक तुलना उपयोगी अछि, समान ऐतिहासिक उत्तर नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे क्वाइन आधुनिक अनुभववादकें भीतरसँ पुनर्गठित करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “क्वाइनक पुष्टि-समग्रता (confirmation holism) कहैत अछि जे अनुभवक परीक्षणसमक्ष पूरा विश्वास-जाल अबैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Quine reconstructs modern empiricism from within. He does not reject the importance of experience; rather, he argues that the relation between language, theory, and experience is not as simple as one sentence–one experience.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 13; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 14 — विश्लेषणात्मक दर्शन आ नव्य-न्याय

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Analytic Philosophy and Navya-Nyāya*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

विश्लेषणात्मक दर्शन आ नव्य-न्यायक संगति अस्पष्टताकें घटेबाक अभिप्राय, संबंध-निर्धारणक सूक्ष्मता आ आपत्ति-समाधानक अनुशासनमे देखायल अछि। मुदा नव्य-न्यायक अवच्छेदक-पदावली आ आधुनिक प्रतीकात्मक तर्कक अभिव्यक्ति अलग ग्रन्थसंस्कृति आ ज्ञानलक्ष्य सँ संबंधित अछि। समस्या-संवाद स्वीकारब लेखकक पद्धतिक प्रमुख उपलब्धि अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

एकहि रूपमे व्याख्यायित नियम भिन्न ऐतिहासिक प्रयोजनमे अलग तर्कफल देत; ओही लेल युक्तिक तकनीकी साम्य सिद्धान्तगत तादात्म्य नहि। परम्पराक कालक्रम, शिक्षक-शिष्य परम्परा आ पाठ-भेदक प्रमाण बिना प्रभावक अनुमान बनायब अनुचित अछि। आधुनिक “analytic” शब्दकें परम्पराक मूल नामक विकल्प नहि बनयबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

आरम्भिक छओ अध्यायक तुलनात्मक सावधानी एतय वास्तविक अर्थमय होइत अछि। फ्रेगे-क्वाइनक शब्दार्थ-विवाद आ गड्गेशक अनुमान-प्रमाणक अनुसन्धानकें समान चर्चा-मेजपर राखब सम्भव अछि, मुदा फैसला मूल दाबीकें देखि करबाक होयत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे नव्य-न्याय आ विश्लेषणात्मक दर्शनक बीच गहिर ‘समस्या-संवाद’ सम्भव अछि, मुदा ऐतिहासिक पहचान अथवा पूर्वगामिता-दाबी अनुचित अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल तर्क—दुनू परम्परामे अस्पष्टता-विरोध केन्द्रीय अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that a deep “dialogue of problems” is possible between Navya-Nyāya and analytic philosophy, but claims of historical identity or precedence are inappropriate.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 14; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 15 — उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन: अर्थ प्रयोगमे

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Later Wittgenstein: Meaning in Use*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन अर्थक प्रश्नकेँ एक सार्वभौम चित्र-सिद्धान्तसँ हटा भाषा-खेल, साझा अभ्यास आ नियमक विविधतामे अनैत छथि। शब्दक प्रयोगक नाना परिस्थिति देखलासँ परिभाषा मात्रमे अर्थक पूर्णता मानबाक आग्रह ढीला पड़ैत अछि। भाषिक शिक्षा आ सार्वजनिक त्रुटि-सुधारक महत्त्व एहि अध्यायसँ स्पष्ट होइत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

प्रयोग अर्थक शर्त भेलासँ सभ प्रचलित प्रयोग समान न्यायसंगत नहि भऽ जाइत। सत्ता-संबंधित संस्थामे “प्रयोग” स्थिर ककरा द्वारा कएल जाइत अछि? नव भाषा-निर्माता, वंचित समुदाय आ असहमत अर्थप्रयोगक मान्यता कोना बनत? एहि प्रश्न लेल नियमक वर्णनक संग आलोचनाक नैतिक कसौटी आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

आरम्भिक विट्गेन्स्टाइनक चित्र-विधिक संग तुलना परिवर्तनकेँ उन्नति-क्रमक एक सरल कथा नहि बनबैत। ऑस्टिनक क्रिया-सिद्धान्त आ निजी भाषाक प्रश्न एहि प्रयोगवादी मोड़केँ आगाँ खोलैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन अर्थक प्रश्नकेँ वस्तु-सन्दर्भक एकरूप सिद्धान्तसँ हटाकऽ नियमबद्ध सामाजिक प्रयोगक विविधतामे रखैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणान्श : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे ‘अर्थ प्रयोगमे’ सिद्धान्त सापेक्षतावाद दिस लऽ जाइत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that later Wittgenstein relocates the question of meaning from a uniform theory of object-reference to the diversity of rule-governed social use. “Meaning = use” is not a complete definition; it is a philosophical methodological instruction: look at what a word does in actual ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 15; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 16 – ऑस्टिन: कहब सेहो करब अछि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Austin: Saying Is Also Doing*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

ऑस्टिनक भाषिक क्रिया-विवेचन कहैत अछि जे कथन केवल तथ्यक चित्र नहि; वचन देब, आदेश देब, नामकरण करब अथवा क्षमा माँगब सामाजिक काम सेहो अछि। सफल क्रियाक शर्त, भूमिका आ प्रसंग तर्क-व्याकरणसँ बाहरक संस्था पर निर्भर होइत अछि। एहि अन्वेषणमे भाषाक व्यवहारिक शक्ति मूर्त होइत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

कथन सफल किएक मानल जाए, जँ वक्ताक सामाजिक अधिकार असमान रूपसँ बाँटल अछि? बिना वैध अधिकार कएल घोषणा, दबावमे देल सहमति आ सत्ता द्वारा लादल नामकरणक अर्थ भिन्न होइत अछि। केवल औपचारिक सफलताक शर्त गिनला सँ नैतिक न्याय नहि निश्चय होइत। असफल क्रियासभक विवेचन एहि दृष्टिसँ केन्द्रीय बनैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

विट्गेन्स्टाइनक भाषा-खेल आ ऑस्टिनक संस्थागत क्रिया परस्पर सम्बद्ध रहितहुँ समान सिद्धान्त नहि। सर्लक नियमबद्ध अभिप्राय-विश्लेषण अग्रिम अध्यायमे एहि क्रियाक वर्गीकरणक प्रयत्न करत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे भाषा केवल जगतक चित्र अथवा तथ्य-वर्णनक साधन नहि; भाषा सामाजिक क्रिया करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे ‘कहब = करब’ सामान्य तथ्य अछि, दार्शनिक सिद्धान्त नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that language is not merely a picture of the world or an instrument for describing facts; language performs social actions. Saying a sentence can itself be a rule-governed act—promising, ordering, permitting, warning, declaring, naming or apologizing.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 16; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 17 — सर्ल आ भाषिक क्रिया

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Searle and Speech Acts*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

सर्लक भाषिक क्रिया-वर्गीकरण सामाजिक नियम आ वक्ताक अभिप्रायक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अछि। घोषणा, प्रतिज्ञा, अनुरोध आ वर्णनक तार्किक कार्य भिन्न होइत अछि; भाषिक क्रियाकें केवल शब्दक रूपसँ अलग करबाक लेल प्रसंगगत नियम आवश्यक अछि। संस्थागत तथ्य पर बहस मूल प्रश्न उठबैत अछि, जे समाज सम्मतिक आधारे वस्तुसमूहकें कतेक नूतन दर्जा दैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सामाजिक नियमद्वारा निर्मित तथ्य तर्कगत रूपसँ सुसंगत भेला परो न्यायपूर्ण होएब अनिवार्य नहि। सम्पत्ति, पद, पहिचान वा नागरिकताक नियम अधिकारक असमानता ढँक सकैत अछि। अभिप्रायक निजी क्षेत्र आ सार्वजनिक संस्थागत परिणाम अलग जाँचब जरूरी अछि; “सामूहिक स्वीकार” बिना असहमत समूहक आवाज सुनने पर्याप्त मानदण्ड नहि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

ऑस्टिनक सफलताक शर्त सर्लमे संस्थागत संरचनाक विचार बनैत अछि। खण्डक आगाँक सत्ता-विमर्श एहि बातक परीक्षण करत जे भाषिक नियम राजनीतिक परिणति सँ कोना जुड़े छथि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि, जे सर्ल भाषिक क्रियाकें नियमबद्ध सामाजिक-अभिप्रायात्मक व्यवहार रूपमे व्यवस्थित करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणश : “नवम तर्क—सामाजिक तथ्य प्राकृतिक तथ्यक विरोधी नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that Searle systematizes speech acts as rule-governed social-intentional behaviour. The meaning of a sentence is not merely lexical meaning; illocutionary force, the speaker’s intention, social rules, and recognition by the hearer together constitute a speech act.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 17; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 18 — भाषा निजी भऽ सकैत अछि की?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Can Language Be Private?

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

निजी अनुभवक निर्विवाद उपस्थिति आ पूर्ण निजी भाषा-पद्धतिक सम्भावना समान दावा नहि। पीडाक आन्तरिक अनुभूति व्यक्ति केँ ज्ञात भऽ सकैत अछि, मुदा “सही प्रयोग” आ “गलत प्रयोग”क भेद यदि कोनो साझा अथवा पुनर्परीक्षणीय कसौटी बिना बचि नहि सकैत तँ निजी नियमक अवधारणा कठिन होइत अछि। अध्याय अनुभवकेँ नकारैत नहि, अर्थक नियम-संरचना जाँचैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अनुभूति-विशेषक प्रमाणक सीमा स्वीकारते दोसर व्यक्तिक दर्द पर प्रभुत्वक दावा रोकल जाए। सार्वजनिक भाषिक मानक चिकित्सा, न्याय आ पहचानक संस्थामे वंचित अनुभवकेँ कखनो न सुनि सकैत अछि। नियमक सार्वजनिकता केना अनुभवक साक्षीकेँ मान देत, से केवल निजी-भाषा-विरोधसँ निर्धारित नहि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अर्थकेँ नियमबद्ध प्रयोग मानब एहि अध्यायमे निजता आ सामाजिकता बीच कठिन सन्तुलन बनैत अछि। मिथिलाक मौखिक रूपक, बोलि-भेद आ लिखित पारिभाषिक अनुशासनक तुलना अगिला अध्यायमे एहि आधारपर होइत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणः “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे निजी अनुभव सम्भव आ वास्तविक हो सकैत अछि, मुदा भाषिक अर्थक पूर्णतः निजी नियम-व्यवस्था आत्मनिर्भर रूपेँ टिकब कठिन अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे हमरा अपन दर्द पर प्रत्यक्ष अधिकार अछि; दोसर व्यक्ति हमर अनुभव जानि नहि सकैत।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that private experience may be possible and real, but a wholly private rule-system of linguistic meaning cannot easily sustain itself independently. Meaning requires a practice in which a distinction between correct and incorrect use is possible, and this distinction cannot rest ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 18; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 19 — शब्दक अर्थ: वस्तु, प्रयोग कि सम्बन्ध?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : The Meaning of a Word:
Object, Use, or Relation?

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

शब्दक अर्थकेँ वस्तुक नामकरण, सामुदायिक प्रयोग अथवा संकेत-सम्बन्धमे सँ केवल एकमे घटौनाइ भाषा-विमर्शक समृद्धि नष्ट करैत अछि। अर्थक विभिन्न पक्ष विशेष प्रश्नक उत्तर दैत छथि: सन्दर्भ ककरा कहब, प्रयोग केना स्थिर होयत, वर्ग केना बनत, वाक्यक प्रसंग कोना असर करत? बहुस्तरीय मॉडल एहि परस्पर अवलम्बनक स्वीकार अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

बहुस्तरीयता स्वयं अस्पष्टताक आश्रय बनि सकैत अछि, जँ भिन्न विवेचनक टकरावमे निर्णायक कसौटी नहि देल जाए। कोन प्रसंगमे सन्दर्भ मुख्य, कोनमे प्रयोगक नियम, कोनमे सामाजिक निषेध—ई भेदक सार्वजनिक नियम आवश्यक अछि। “अर्थ अनेक” कथनसँ परस्पर विरोधी अर्थ-दाबी स्वतः वैध नहि भऽ जाइत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फ्रेगेक सन्दर्भ, उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइनक प्रयोग आ सल्लोक संस्थागत नियम एतय एक तुलनात्मक चौखट प्राप्त करैत अछि। भारतीय शब्दमीमांसा एहि ढाँचाक सरल उदाहरण नहि, स्वतंत्र ऐतिहासिक प्रतिद्वन्द्वी बनि आगाँ अबैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे शब्दक अर्थकेँ एकहि तत्त्वमे घटाबयब कठिन अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणान्श : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे बहुस्तरीय अर्थ-मॉडल अत्यधिक ढीला अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The central thesis of this chapter is that it is difficult to reduce the meaning of a word to a single element. Meaning is multilayered: sometimes objective reference is essential, sometimes cognitive presentation, sometimes social use, sometimes linguistic relation, sometimes sentence context, and sometimes community ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 19; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 20 – भारतीय शब्दमीमांसा

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Indian Theories of Linguistic Meaning

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भारतीय शब्दमीमांसामे शब्द-वस्तु सम्बन्ध, जाति, वाक्यबोध, तात्पर्य, अपोह आ प्रमाणक भिन्न बहससभकें संगठित कएल गेल अछि। न्याय, मीमांसा, व्याकरण आ बौद्ध चिन्तनक बहुविधता “भारतीय अर्थ-सिद्धान्त”क एकवचनकरण असम्भव बनबैत अछि। विशेषतः अपोहक निषेधात्मक कार्य बौद्ध ज्ञानमीमांसाक व्यापक जगतदृष्टिसँ अलग कऽ नहि बुझल जा सकैत।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

भर्तृहरिक वाक्यकेन्द्रिता, न्यायीय पद-वाक्य सम्बन्ध आ मीमांसाक तात्पर्य-विचारकें आधुनिक अर्थ-प्रयोगक पदक पर्याय बना देब बौद्धिक कालभ्रम अछि। भाषिक अर्थक सन्दर्भमे एक सम्प्रदायक स्थापना दोसरक सर्वमान्य व्याख्या नहि; प्रत्येक मतक विरोधी तर्क राखबाक आवश्यकता अछि। उपलब्ध अनुवादक शब्दसँ मूल संस्कृत पदक अनेक अर्थ छिपि सकैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फ्रेगे सँ सर्ल धरि पाश्चात्य विमर्शक पाछाँ एहि अध्यायक स्थान अत्यन्त अर्थपूर्ण अछि: विश्व-दर्शनक संवाद अपन पृथक स्रोत आ मतभेद सुरक्षित राखि होइत अछि। अगिला मिथिलाक भाषिक विश्लेषण एही पृथकता भीतर क्षेत्रीय पद्धतिक विशिष्ट योगदान खोजत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे भारतीय शब्दमीमांसा अर्थक कमसँ-कम छह आयाम अलग-अलग तीव्रतासँ विकसित करैत अछि—शब्द-वस्तु सम्बन्ध, जाति/वर्ग, वाक्यबोध, प्रसंग-तात्पर्य, निषेध/अपवर्जन, आ शब्दक ज्ञानमीमांसक विश्वसनीयता।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “आठम तर्क—अपोह केवल नकारात्मक शब्दकोशीय तकनीक नहि; ई बौद्ध ज्ञानमीमांसा, प्रत्यक्ष-कल्पना भेद आ सार्वभौम-विरोधक व्यापक दार्शनिक परियोजनासँ जुड़ल अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Indian theories of linguistic meaning develop, with different degrees of emphasis, at least six dimensions of meaning: the word–object relation, universal/class, sentence cognition, context and purport, negation/exclusion, and the epistemic reliability of verbal testimony.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 20; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 21 — मिथिलाक भाषिक विश्लेषण

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Mithila's Linguistic Analysis

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मिथिलाक भाषिक विश्लेषण नाम एकटा जातीय विशिष्टताक स्थिर सार नहि, सात कार्यकारी अनुशासनक समुच्चय अछि—परिभाषा, सम्बन्ध, सीमा, प्रमाण, प्रसंग, प्रतिपक्ष आ पुनर्परीक्षण। नव्य-न्यायीय सूक्ष्म पद-निर्धारणक महत्त्व समस्या स्पष्ट करबमे अछि, केवल गूढ़ पारिभाषिक शब्दक प्रदर्शनमे नहि। लेखक परम्पराक स्वतन्त्र आन्तरिक शास्त्रार्थकेँ वर्तमान मैथिली ज्ञान-लेखनसँ जोड़बाक प्रस्ताव दैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

क्षेत्रीय संज्ञा जखन पद्धतिक नाम बनैत अछि, तखन ओकरा बाहरी परम्परासँ पृथक आवश्यक गुण मानबाक खतरा रहैत अछि। परिभाषाक गम्भीरता मिथिलाक धरोहर भऽ सकैत अछि, मुदा केवल मिथिले एहन विचार करैत अछि—एहन विशिष्टता साबित नहि। बोलि, लिपि आ अनुवादक भिन्न समसामयिक स्वरूपकेँ एकहि शास्त्रीय अनुशासनसँ मापब सेहो अपर्याप्त हो सकैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

भाषिक मोडक तेसर विभाग एतय क्षेत्रीय स्रोतपर पहुँचैत अछि। अगिला संरचनावादक वर्गीकरणक संग एहि पद्धतिक संवाद सम्भव होयत, जँ मिथिलाक पदसंज्ञाकेँ आधुनिक यूरोपीय विचारक प्रतिरूप नहि मानल जाए।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे ‘मिथिलाक भाषिक विश्लेषण’ कोनो एक सिद्धान्त नहि, वरन् सात परस्पर जुड़ल पद्धतिगत अनुशासनक नाम हो सकैत अछि—परिभाषा, सम्बन्ध, सीमा, प्रमाण, प्रसंग, प्रतिपक्ष, पुनर्परीक्षण।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे ‘मिथिलाक भाषिक विश्लेषण’ नाम स्वयं क्षेत्रीय सारवाद (essentialism) उत्पन्न करि सकैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis is that “Mithila’s linguistic analysis” is not one theory but can name seven interconnected methodological disciplines: definition, relation, limit, evidence, context, opposition, and re-examination.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 21; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 22 — संरचना की अछि?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : What Is Structure?

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

संरचनाक अर्थ वस्तुसभक निर्जीव जोड़ नहि, सम्बन्धसभक नियमबद्ध जाल अछि जाहिमे घटकक कार्य ओकर स्थान आ विरोधसँ निर्धारित होइत अछि। ई अवधारणा भाषा, मिथक, सम्बन्ध-व्यवस्था आ संस्था पर उपयोगी होइत अछि, किएक तँ दृश्यमान एकल घटनाक पाछाँ नियमबद्ध पुनरावृत्ति खोजबैत अछि। लेखक संरचनाकें आत्मनिर्भर रहस्यमय पदार्थ नहि कहैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

प्रणालीक एक कालखण्डक स्थिर चित्र देखबैत ओकर ऐतिहासिक उत्पत्ति, टकराव आ परिवर्तन अनदेखल होबाक खतरा अछि। संरचना के निर्दिष्ट करैत अछि, कोन सम्बन्धक मापन करैत अछि, आ उपलब्ध अपवाद कतय अछि—ई प्रश्न पद्धतिक अनिवार्य हिस्सा बनबाक चाही। वर्गीकरण अनुकूल कऽ बनायल गेल संरचना स्वयं प्रमाण नहि होइत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

शब्दार्थ-विवादसँ सम्बन्धात्मक विश्लेषण धरि आगू बढ़बाक ई मोड़ अछि। भाषा, समाज आ मिथकक भिन्न पदार्थकें एकहि औजार सँ पढ़ब एक बौद्धिक सम्भावना अछि, मुदा एतय सँ लेखकक “सीमा” विषयक आगामी बहस शुरू होइत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे संरचना कोनो लुकायल पदार्थ नहि; ई तत्वसभक एहन नियमबद्ध सम्बन्ध-व्यवस्था अछि जाहिमे प्रत्येक तत्वक अर्थ वा कार्य बहुत हद तक ओकर स्थान, भेद आ अन्य तत्वसँ सम्बन्धसँ निर्धारित होइत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “चारिम तर्क—संरचनावाद प्रायः समकालिक विश्लेषण (synchronic analysis) पर बल दैत अछि: कोनो निश्चित समयपर प्रणाली कोना काम करैत अछि?”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that structure is not some hidden substance; it is a rule-governed arrangement of relations among elements in which the meaning or function of each element is determined to a large extent by its position, its differences, and its relations to other elements.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 22; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 23 — सस्यूरः संकेतक आ संकेतित

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Saussure: Signifier and Signified*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

सस्यूरक संकेतक-संकेतित भेद भाषाकेँ वस्तुपर नामक टैग मात्र नहि मानि संकेतसभक सामाजिक अन्तर-सम्बन्धक रूपमे बुझबैत अछि। संकेतक मूल्य दोसर संकेतसभसँ भिन्नता द्वारा निर्मित होइत अछि; ताहि कारण व्यक्तिगत शब्दार्थक सूची सँ भाषिक प्रणालीक अर्थ नहि खुलैत। समकालिक विश्लेषण आ ऐतिहासिक विकासक पृथक काज लेखक उचित रूपसँ देखबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

यदि संकेतमूल्य भाषा भीतर उत्पन्न होइत अछि तँ बाह्य वस्तुक प्रतिरोध आ राजनीतिक वास्तविकताक मानक कोना सुरक्षित रहत? “संकेतित”केँ अवधारणा मानव वस्तुक लोप नहि, मुदा भौतिक जगतसँ सम्बन्धक प्रश्न टारि नहि सकैत। अनेक बोलि, सामाजिक श्रेणी आ ऐतिहासिक बल प्रयोगक पारस्परिक प्रभाव नापबाक कार्य एहि शुद्ध प्रणाली-दृष्टिसँ बाहर पड़ैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फ्रेगेक अर्थ-सन्दर्भसँ सस्यूरक संकेतक-प्रणाली मिललजुलल नाम प्रतीत भेला परो अलग समस्या हल करैत अछि। एहि भेदक स्पष्टता बौद्ध अपोह वा नव्य-न्यायपर काल्पनिक समतुल्यता थोपबाक विरुद्ध रक्षा अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे सस्यूर भाषाकेँ संकेतसभक सामाजिक प्रणाली रूपमे बुझैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे संकेतितकेँ अवधारणा बनौने बाह्य जगत बहुत दूर भऽ जाइत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The central thesis of this chapter is that Saussure understands language as a social system of signs. The signifier is the acoustic/formal aspect; the signified is the conceptual aspect; and the sign is the unified linguistic unit formed by the two. The external object is not a direct component of this definition, ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 23; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 24 — लेवी-स्ट्रॉस: मिथक आ संरचना

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Lévi-Strauss: Myth and Structure

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

लेवी-स्ट्रॉस मिथककें पात्रक सूची वा एकटा घटनाक कथा नहि, परिवर्तनीय सम्बन्ध-प्रणालीक रूपमे पढ़ैत छथि। विरोधी पद, सांस्कृतिक मध्यस्थता आ कथान्तरक क्रमबद्ध रूपान्तरण एक समृद्ध विश्लेषण खोलैत अछि। मिथकक सामाजिक अर्थ मात्र ओकर कथानकक नैतिक संदेश नहि; भिन्न संस्करणक सम्बन्ध सेहो समीक्षनीय बनैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

द्वैध-विरोधक नक्सा विश्लेषक द्वारा चुनल जाएत अछि। यदि मूल श्रवण-प्रसंग, कथाकारक जाति/लिंग, स्थानीय परिवर्तित अर्थ आ अनुष्ठानक व्यवहार छोड़ि केवल अमूर्त संरचना बचाओल जाए, तँ जीवित परम्परा ठोस आधार सँ दूर पड़ि सकैत अछि। समतुल्य मिथक-रूपक चयनक प्रमाण सार्वजनिक राखब आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मिथिलाक लोककथा आ मौखिक परम्परापर एहि विधिक उपयोग सम्भव अछि, मुदा पाठक स्थानीय भाषा आ कथकक अधिकारक परीक्षण बिना “विश्वव्यापी मिथकीय संरचना”क दावा जाँचल नहि जाइत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणंश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे लेवी-स्ट्रॉस मिथककें कथा-सामग्रीक संग्रह नहि, सम्बन्धात्मक प्रणाली रूपमे पढ़ैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “द्वैध-विरोध (binary opposition) संरचनात्मक विश्लेषणक उपयोगी औजार अछि, अन्तिम सत्य नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Lévi-Strauss reads myth not as a collection of story-material but as a relational system. The meaning of mythical units becomes clearer less by reading them separately than through their combinations, oppositions, repetitions, and transformations.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 24; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 25 — संरचना आ व्यक्ति

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Structure and the Individual*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

संरचना आ व्यक्ति के परस्पर निषेध नहि, व्याख्याक भिन्न स्तर मानब एहि अध्यायक केन्द्रीय प्रस्ताव अछि। व्यक्ति भाषा, जाति, वर्ग, परिवार आ संस्थागत नियमक बीच निर्णय करैत छथि; मुदा पुनरावृत्ति वा प्रतिरोधद्वारा एहि सम्बन्धसभमे परिवर्तनो अनैत छथि। एहि द्विपक्षीय व्याख्याकेँ एकतरफा नियतिवादसँ लेखक अलग करैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सामाजिक बाधा देखला पर व्यक्तिगत उत्तरदायित्व समाप्त नहि मानल जा सकैत, आ किछु व्यक्तिक सफल अपवादद्वारा संरचनात्मक असमानता असत्य सेहो नहि बनैत। मुख्य कठिनाई अछि—संरचनाक प्रभावकेँ नापब कोना, आ कर्तृत्वक प्रभावकेँ भ्रमित वीर-कथासँ अलग केना करब? ई दूनू परीक्षण अलग स्रोत माँगैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

एहि अध्यायकेँ अन्तिम उपसंहारक “संरचना अछि, मुदा नियति नहि” कथनक प्रारम्भिक रूपमे पढ़ल जाए। एहि प्रारम्भिक आधारकेँ लेखक उत्तर-संरचनावादक प्रश्नपर पुनः परीक्षित।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे संरचना आ व्यक्ति परस्पर विरोधी पदार्थ नहि, वरन् परस्पर निर्भर विश्लेषणात्मक स्तर अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “नवम तर्क—पहचान संरचनात्मक श्रेणी आ व्यक्तिगत अनुभवक संयुक्त क्षेत्र अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The central thesis of this chapter is that structure and the individual are not mutually opposed substances but interdependent levels of analysis. Structure shapes the individual’s possibilities, language, roles, resources, constraints, and expectations; individuals, through action, repetition, deviation, resistance, ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 25; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 26 — भारतीय भाषिक परम्परा आ संरचना

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Indian Linguistic Traditions and Structure*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भारतीय व्याकरण, मीमांसा, न्याय आ बौद्ध भाषा-विचारमे संरचना-सम्बन्धी समस्या भेटैत अछि, मुदा सभ सम्प्रदाय अपन पृथक अर्थप्रणाली स्थापित करैत अछि। पाणिनीय रूपनिर्माणक नियम, वाक्यार्थक भर्तृहरि-विमर्श आ नव्य-न्यायक सम्बन्ध-परिभाषाकें एक साझा “प्राचीन संरचनावाद” नाम देब उचित नहि। लेखक परम्परागत अवधारणाक स्वतन्त्र इतिहासपर बल दैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

आधुनिक “structure” शब्द अपन ऐतिहासिक उपयोगसहित आबैत अछि; ओकर मददसँ प्राचीन पाठमे प्रश्न पूछब सम्भव, मुदा मूल ग्रन्थकारक अभिप्राय बदलि देब अनुचित। तुलनाक विशिष्ट दावा भाषिक उद्धरण, व्याख्यात्मक प्रयोजन आ प्रतिपक्षद्वारा सत्यापित होयत। केवल नियम-व्यवस्था उपस्थित होएब संरचनावादी सिद्धान्तक पूर्ण पूर्वरूप नहि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अध्याय २०क शब्दमीमांसाक परिचय एतय संरचनावादक संग संवाद करैत अछि। सस्यूर आ पाणिनि बीच ऐतिहासिक दावीक स्वतंत्र अभिलेखीय प्रमाण चाही; समस्या-तुलना अधिक सुरक्षित अनुशासन अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे भारतीय भाषिक परम्परासभमे “संरचना” एक साझा सिद्धान्त रूपमे नहि, वरन् अलग-अलग प्रश्न-रूपमे उपस्थित अछि—रूप-निर्माणक नियम, वाक्यीय समग्रता, पदार्थीय सम्बन्ध, वाक्यार्थक शर्त, वर्गीय सीमांकन, प्रमाणिक संप्रेषण आ अवधारणात्मक अवच्छेदन।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे आधुनिक “संरचना (structure)” शब्दक आधारपर प्राचीन भारतीय परम्पराक पुनर्पाठ स्वयं अनिवार्य रूपेँ अनाकालिक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that in Indian linguistic traditions ‘structure’ is not present as one common doctrine, but as a set of distinct problems: rule-governed form-generation, sentential wholeness, object-relations, conditions of sentence-meaning, class-delimitation, reliable communication, and ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 26; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 27 — संरचनावादक सीमा

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Limits of Structuralism*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

संरचनावादक उपलब्धि जटिल घटनाक पाछाँ पुनरावृत्त नियम आ भिन्नता खोजब अछि, मुदा एकरा सम्पूर्ण विश्वदृष्टि बना देलासँ व्यक्ति, सत्ता, इतिहास आ अनिश्चितता गौण भऽ सकैत अछि। लेखक एहि सफल औजारक दायरा स्पष्ट करैत छथि। पद्धति जतए विश्लेषण करैत अछि, ओतए व्याख्याकारक स्वयं चुनल सीमाक प्रकाशन आवश्यक अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

संरचनाक नामपर चयनक पक्षपात अनदेखल हो सकैत अछि: कोन पाठ मुख्य, के अपवाद, के प्रतिनिधि? यदि गलत प्रत्युदाहरण भेटितो संरचना न टूटय तँ सिद्धान्तकी जाँचनीयता क्षीण पड़ैत अछि। परिवर्तन, संघर्ष आ कार्यकर्ताक पहलकें संरचनाक भीतर रखब मात्र पर्याप्त नहि; इतिहासगत सिद्धि चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

एहि सीमा-समीक्षासँ उत्तर-संरचनावादक प्रवेश स्वाभाविक भऽ रहल अछि। मुदा एक पद्धतिक सीमा दोसर पद्धतिक अन्तिम विजय सिद्ध नहि करैत; ई लेखकक संशोध्य विवेकक महत्वपूर्ण कसौटी अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणंश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे संरचनावाद एक शक्तिशाली विश्लेषणात्मक पद्धति अछि, पूर्ण दार्शनिक विश्वदृष्टि नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणंश : “तेरहम तर्क—संरचना-विश्लेषणक चयन स्वयं विश्लेषकक निर्णय पर निर्भर होइत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The central thesis of this chapter is that structuralism is a powerful analytical method, not a complete philosophical worldview. Relation, difference, system, rule, and transformation are useful analytical categories, but they do not replace historical causation, moral value, lived experience, power, matter, or ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 27; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 28 — संरचनासँ उत्तर-संरचना धरि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *From Structure to Post-Structure*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

उत्तर-संरचनावाद संरचनाक सर्वथा अभाव नहि कहैत; स्थायित्व, केन्द्र, अर्थ-नियन्त्रण आ बहिष्कारक शर्त जाँचैत अछि। संकेतक अन्तर सम्बन्ध मात्र सूची नहि, पदानुक्रम आ ऐतिहासिक परिस्थिति द्वारा अर्थक असमान वितरणक प्रश्न बनैत अछि। लेखक एहि संक्रमणकें विचारक पद्धतिगत निरन्तरता आ आलोचनात्मक भिन्नता दूनू रूपमे देखबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

स्थिर संरचना पर संशय राखलासँ कोनो पाठक अर्थ मनमाना होएब सिद्ध नहि होइत। यदि सभ केन्द्र संदिग्ध अछि तँ आलोचकक अपन अर्थ-निर्णय केहेन सार्वजनिक परीक्षण सँ गुजरत? पदानुक्रम उलटब मात्र नूतन पदानुक्रम बना सकैत अछि। विखण्डनक उत्तरदायित्वक प्रश्न एतहि उत्पन्न होइत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

संरचनावादक अन्तिम आलोचनाकें यहि प्रकार नूतन आरम्भ भेटैत अछि। आगामी देरिदा-अध्यायसभमे समीक्षीय कसौटी विचारक भिन्नताक सूक्ष्मता बनि रहल अछि; सम्पूर्ण सत्यक परित्याग नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे उत्तर-संरचनावाद संरचनाक अस्तित्व नकारैत नहि; ओ संरचनाक स्थिरता, केन्द्र, सीमा, उत्पत्ति, बहिष्कार आ अर्थ-नियन्त्रणक दाबीपर प्रश्न उठबैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “तेसर तर्क—द्वैध-विरोध प्रायः सममित नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that post-structuralism does not deny the existence of structures; it questions claims about their stability, centre, boundary, origin, exclusions, and control of meaning.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 28; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 29 — देरिदा: उपस्थितिक तत्त्वमीमांसाक आलोचना

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Derrida: Critique of the Metaphysics of Presence*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

देरिदाक उपस्थितिक तत्त्वमीमांसाक आलोचना “उपस्थिति नहि अछि” सन सरल नकार नहि। शुद्ध तत्कालिक अर्थक दाबी जखन लेखन, अनुपस्थिति, पूरक आ पुनरावृत्ति पर आश्रित भेटैत अछि तखन ओकर स्वतन्त्रता प्रश्नांकित होइत अछि। वाणी-लेखनक पदानुक्रमक भीतरे दूनूक सहनिर्भरता चिन्हनाइ एहि अध्यायक दार्शनिक काज अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

पद-उलटावक बाद निर्णयक सार्वजनिक आधार केना बचत? यदि मूल/पूरकक भेद अस्थिर अछि, तँ अभिलेखीय प्रमाण वा ऐतिहासिक घटनाक वास्तविकता केना परखी जाए? देरिदाक आलोचनाकेँ “जे मन हो अर्थ निकालू” कहब अनुचित, मुदा विखण्डनक अपन दावीक मापदण्ड स्पष्ट रहबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

सस्यूरक अन्तर-सम्बन्धक चिन्ता एतय उपस्थितिक दार्शनिक विशेषाधिकारपर पहुँचैत अछि। वैदिक वाणी अथवा भर्तृहरिक शब्द-तत्त्वक संग तुलना अनैत मूल ऐतिहासिक भेदसँ दूरी राखब लेखकक पद्धतिक कर्तव्य अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे देरिदा उपस्थितिकेँ नकारैत नहि; ओ उपस्थितिक आत्मनिर्भरता पर प्रश्न उठबैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “वाणी/लेखन, मूल/पूरक, उपस्थिति/अनुपस्थिति, भीतर/बाहर जकाँ द्वैध-विरोधमे देरिदा देखबैत अछि जे विशेषाधिकारित पहिल पद प्रायः ओहि गौण मानल दोसर पदपर निर्भर अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Derrida does not deny presence; he questions its self-sufficiency. What is taken as 'fully present' often depends for its meaning upon absent signs, earlier traces, future repetition, difference, and context.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 29; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 30 — अर्थ-भिन्नताक स्थगित प्रक्रिया: अर्थक स्थगन आ भिन्नता

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Deferred Process of Meaning-Difference: Deferral and Difference*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

अर्थ-भिन्नताक स्थगित प्रक्रियामे संकेतक अर्थ अन्य संकेतसँ भिन्नता आ अगिला प्रयोगक सम्भावना द्वारा जीवित रहैत अछि। अर्थ सदा पूर्णतः बन्द नहि होइत, तथापि व्यवहारमे अनेक वाक्य सफल संप्रेषण करैत अछि। लेखक एहि दू स्थितिक भेद स्पष्ट करैत छथि आ स्थगनक संप्रेषणक सम्पूर्ण विफलता नहि मानैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अनन्त सम्भावित पुनर्पाठक चर्चा ककरा द्वारा कएल वास्तविक निर्णयक महत्व कम नहि करैत। न्यायालयक भाषा, चिकित्साक संकेत अथवा इतिहासक स्रोत मे निश्चित निर्णय करब आवश्यक होइत अछि; निर्णय पुनर्परीक्षणीय होएब आ मनमाना होएब समान नहि। व्याख्याक अन्तहीनता केँ सामाजिक उत्तरदायित्वसँ अलग कएल जाए तँ तर्क व्यवहारसँ काटल जाइत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

एहि सूक्ष्म अवधारणाक संग नव्य-न्यायक परिभाषा आ आधुनिक विज्ञानक स्थिर अस्थायी संज्ञा तकर बाद संवाद करैत अछि। देरीसँ अर्थ बनब विश्वक अस्तित्वक विलम्ब नहि—एहि सीमा पर लेखक सजग छथि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे (différance) अर्थक उत्पादनक एक गतिशील शर्त सूचित करैत अछि: संकेत जे अछि ओ अन्य संकेतसभसँ भिन्न होइत अछि, आ ओकर अर्थ पूर्णतः एक क्षणमे बन्द नहि, वरन् अन्य सम्बन्ध आ संभावित पुनरावृत्तिमे स्थगित/विस्तारित होइत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्षक उत्तर—स्थगन संप्रेषण-असम्भवता नहि ।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that *différance* indicates a dynamic condition of the production of meaning: a sign is what it is by differing from other signs, and its meaning is not completely closed in a single moment, but is deferred/extended through other relations and possible repetitions.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 30; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 31 — लेखन, वाणी आ केन्द्रक प्रश्न

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Writing, Speech, and the Question of the Centre

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

वाणीकें सजीव उपस्थिति आ लेखनकें मृत प्रतिलिपि मानबाक मूल्य-क्रम इतिहासमे बहुत प्रभावशाली रहल अछि। लेखक देखबैत छथि जे वाणी सेहो नियम, स्मृति आ पुनरावृत्तिपर निर्भर अछि; लेखन सेहो अर्थक सक्रिय निर्माणक स्थल अछि। केन्द्रक प्रश्न ककर अभिप्राय वा उपस्थितिकें अर्थक अन्तिम अधिकारी मानल जाए, ताहिपर केन्द्रित अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

लेखकक अभिप्राय पूर्णतः त्यागि देलासँ अभिलेख, वचन, न्यायिक उत्तरदायित्व आ पाठसम्पादनक कार्य कठिन होयत। ओहि उलट अभिप्रायकें अन्तिम सत्य मानलासँ पाठक सामाजिक जीवन आ नूतन प्रसंगक व्याख्या बिसरल जायत। लिपिक आधिकारिक स्थिति ऐतिहासिक सत्ता-संघर्षसँ घनिष्ठ सम्बन्ध रखैत अछि; एतय सामयिक प्रमाण आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मिथिलाक लिपि, मौखिक कथा आ लिखित शास्त्रक परस्पर स्थानक अनुसन्धान लेल एहि बहसक उपयोग हो सकैत अछि। मुदा देरिदाक वाणी-लेखनकें स्थानीय इतिहासक सीधा वर्णन मानब सीमा-पार भऽ जायत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे वाणी आ लेखन अलग माध्यम अछि, मुदा वाणी ‘शुद्ध उपस्थित अर्थ’ आ लेखन ‘द्वितीयक प्रतिलिपि’—एहन कठोर पदानुक्रम दार्शनिक रूपेँ टिकैत नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “आठम तर्क—लेखक अर्थक महत्त्वपूर्ण स्रोत अछि, अन्तिम स्रोत नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that speech and writing are different media, but the rigid hierarchy 'speech = purely present meaning' and 'writing = secondary copy' does not hold philosophically. Both operate within structures of signs, repetition, social rules, and context.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 31; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 32 — विखण्डन की अछि—आ की नहि अछि?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *What Is Deconstruction—and What Is It Not?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

विखण्डन नष्टिकरण, व्याख्याक मनमानी अथवा केवल कठन शब्दक प्रदर्शन नहि—ई पाठक भीतर स्थापित भेद आ आश्रयक परीक्षण अछि। प्रतिज्ञाक आलोचना ओकर विपक्षकें असत्य साबित करबाक सामान्य तरीका नहि; सत्ता प्रदान कएल गेल पद अपन गौण मानल घटकक उपर कतेक आश्रित अछि, से देखबाक काज अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

विखण्डनक उपयोग सार्वजनिक बहस मे तखन विश्वसनीय रहत जखन मूल वाक्य, तर्कगत क्रम, प्रसंग आ परिणाम देखाओल जाए। पाठक सूक्ष्म पाठ-परीक्षा बिना “सभ अस्थिर अछि” कहब व्याख्याक बहाना बनि सकैत अछि। आलोचनाक बाद निर्णय होयत कि नहि, ई प्रश्न नैतिक संस्थामे टारल नहि जा सकैत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

देरिदाक पूर्व अध्यायसभकें ई एकटा पद्धतिगत पुनर्लेखन दैत अछि। समानान्तर दर्शन अपन स्रोत-सापेक्ष प्रतिपक्ष-रचना सँ विखण्डनक उपयोगी कार्य ग्रहण करैत, ओकर अतिरेककें रोकैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे विखण्डन पाठक भीतरक दार्शनिक तनाव खोलबाक पद्धति अछि; ई नष्टिकरण नहि, वरन् अवधारणा, भेद, पदानुक्रम आ अर्थक शर्तक सूक्ष्म परीक्षण अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “दोसर तर्क—पदानुक्रम पहचानब आवश्यक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that deconstruction is a method for opening philosophical tensions within a text; it is not destruction, but a fine-grained examination of concepts, distinctions, hierarchies, and the conditions of meaning.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 32; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 33 — भारतीय दर्शन आ विखण्डन

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Indian Philosophy and Deconstruction*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भारतीय दर्शन आ विखण्डनक संवाद शून्य, अपोह, अद्वैत, प्रतीत्यसमुत्पाद अथवा नव्य-न्यायक सम्बन्ध-विवेचनक बीच सम्भव प्रश्न-समानताक क्षेत्र अछि। तथापि एहि शब्दसभक परम्परागत मोक्षलक्ष्य, प्रमाणमीमांसा आ तत्त्वगत मतभेद अलग-अलग छथि। लेखक आधुनिक यूरोपीय पद्धतिक “प्राचीन भारतीय खोज”क विजयवादी दावा अस्वीकार करैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

भाषिक समानता सभसँ पैघ जाल अछि: शून्यता अवश्य “किछु नहि” नहि, आ देरिदाक अनुपस्थिति नागार्जुनक शून्यताक पर्याय नहि। यदि तुलना केवल असमानता गनलासँ समाप्त भऽ जाए तँ बौद्धिक संवादो अवरुद्ध होयत; मुदा प्रश्नसमानताक साथ मूल प्रतिपक्षक प्रकाशन आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अध्याय ६क पाँच तुलनात्मक स्तर एतय फेर लागू होइत अछि। मिथिलाक शास्त्रार्थ शैलीक बल अन्य मतकेँ ओकर सर्वश्रेष्ठ तर्कसहित प्रस्तुत करब अछि, ओकरा आधुनिक नाम दऽ कऽ सहज जीतब नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे भारतीय दर्शन आ विखण्डनक बीच ऐतिहासिक पहचान नहि, मुदा अनेक गम्भीर समस्या-संवाद सम्भव अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे ऐतिहासिक भिन्नता पर एतेक जोर देलासँ तुलना निष्फल भऽ जाएत।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that there is no historical identity between Indian philosophy and deconstruction, but many serious dialogues at the level of problems are possible. The correct level of comparison is: 'What question is being raised?' and 'By what method is it answered?'"

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 33; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 34 — नव्य-न्याय विखण्डनक प्रतिपक्ष?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Is Navya-Nyāya a Counterposition to Deconstruction?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

नव्य-न्यायक स्पष्टता, पद-सीमांकन आ प्रमाणभार तथा विखण्डनक केन्द्र-संशय दूनू गम्भीर आलोचनात्मक उपकरण छथि। पहिल अर्थक विवादकें नियंत्रित करबाक सूक्ष्म नियम माँगैत अछि; दोसर प्रश्न करैत अछि जे नियमक स्थापना ककरा बाहर रखैत अछि। एतय विरोधक लक्ष्य एक परम्पराकें दोसरसँ खण्डित करब नहि, परस्पर आत्मसमीक्षा अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

परिभाषाक कठोरता स्वयं सत्यक अन्तिम गारण्टी नहि; विखण्डनक अस्थिरता स्वयं प्रत्येक प्रमाणकें बराबर नहि बनवैत। मूल संस्कृत आ आधुनिक फ्रांसीसी ग्रन्थक इतिहास अलग; एहन स्थिति मे तुलनाक इकाई पूर्ण सिद्धान्त नहि, विशेष अर्थ-संबन्धी कठिनाई होयबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

एहि संवादक निचोड़ “स्पष्टता बिना बन्दीकरण; आलोचना बिना मनमानी”क दोहरे अनुशासनमे देखब सम्भव अछि। समानान्तर दर्शनक स्वतन्त्र दावीक पहिल परिपक्व परीक्षा एतय सफलतापूर्वक उत्पन्न होइत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे नव्य-न्याय विखण्डनक ऐतिहासिक अथवा सरल सिद्धान्तगत प्रतिपक्ष नहि; ओ एक स्वतंत्र यथार्थवादी-ज्ञानमीमांसक विश्लेषण-पद्धति अछि जे विखण्डनक प्रश्नसभ लेल शक्तिशाली संवाद-सहचर आ आलोचक बनि सकैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे नव्य-न्याय आ विखण्डनक तुलना असमान अछि—एक शास्त्रीय भारतीय तर्क-ज्ञानमीमांसा, दोसर आधुनिक यूरोपीय पाठ-तत्त्वमीमांसक आलोचना।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Navya-Nyāya is not the historical or simple theoretical counterposition of deconstruction; it is an independent realist-epistemological method of analysis that can become a powerful interlocutor and critic for the questions raised by deconstruction.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 34; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 35 — समानान्तर उत्तरपक्ष

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : The Parallel Uttarapakṣa

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

समानान्तर उत्तरपक्ष विखण्डनक उपयोगिता केँ सत्यक स्थायी असम्भवतामे नहि, सत्यक दाबीक शर्त स्पष्ट करबामे राखैत अछि। आलोचना पूछैत अछि जे संरचना कोना बनल, के बाहर रहल आ कोन साक्ष्य जाँचबाक आवश्यकता अछि। लेखक बहुप्रमाणीय विवेकवाद आ सहअस्तित्वात्मक यथार्थवादकेँ एहि बहसक माध्यम सँ संशोधित करबाक प्रस्ताव दैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

जखन बहु स्तरपर प्रमाण आउत, तँ परस्पर विरोधी दाबीक निर्णय कोना होयत? आत्मसमीक्षाक नामपर निष्कर्ष अनिश्चित काल धरि स्थगित राखल जा सकैत अछि, मुदा सामाजिक न्यायमे निर्णयक लागत वास्तविक अछि। पूर्वपक्षकेँ सुनब आ निष्कर्ष देबाक उत्तरदायित्व दूनू जोड़नाइ आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

उत्तर-संरचनावादक परीक्षणक ई समेकन प्रथम खण्डक सूत्रसभक दोसर जीवन दैत अछि। अगिला फूको-विवेचनमे सत्ता आ संस्थाक प्रश्न लेखकक प्रमाणाधारित विवेकवादकेँ आरो कठोर कसौटी पर राखत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “विखण्डनक सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षा ई नहि जे ‘किछु टिकैत नहि’; वरन् ई जे जे टिकैत अछि ओकर टिकबाक शर्त, सीमा, बहिष्कार, इतिहास आ प्रमाण स्पष्ट रहय।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “बारहम तर्क—धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता स्थिर धार्मिक केन्द्र आ पूर्ण धर्म-विरोध दुनूक अति सँ बचबैत अछि: मानबाक, नहि मानबाक आ बदलबाक स्वतंत्रता समान नागरिक गरिमाक भीतर।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of the Parallel Uttarapakṣa is this—the final aim of philosophical critique is not emptiness, but error-correctable reconstruction. Deconstruction is necessary when a concept conceals its exclusions; reconstruction is necessary when questions of public decision, knowledge, justice, and history stand ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 35; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 36 — ज्ञान आ सत्ता अलग अछि की?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Are Knowledge and Power Separate?

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

ज्ञान आ सत्ता परस्पर सम्बन्धित छथि, विशेषतः जखन स्कूल, अस्पताल, कारागार, जनगणना अथवा प्रशासकीय व्यवस्था व्यक्ति केँ वर्गीकृत करैत अछि। लेखक फूकोक प्रश्नकेँ “सत्य नहि अछि”क सरल दाबी बनबैत नहि; ओ पूछैत छथि जे वैध ज्ञानक निर्मिति ककर अधिकार, साधन आ नियमद्वारा होइत अछि। वर्गीकरण वस्तुक वर्णन होइतहुँ सामाजिक परिणाम उत्पन्न करैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

यदि सत्ता-ज्ञानक सम्बन्ध सर्वत्र मानि ली तँ कोन तथ्यक सम्बन्ध विशिष्ट अछि, से अस्पष्ट रहि सकैत। वैज्ञानिक परिमाणक वस्तुगत वैधता आ संस्थागत उपयोगक अन्याय एकहि प्रश्न नहि। अनुसन्धानक मापदण्ड, स्वतंत्र प्रतिवाद आ पहुँचक असमानता अलग-अलग परखी जायत तखन आलोचना न्यायसंगत रहत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

पूर्ववर्ती विखण्डनक भाषिक प्रश्न एतय वास्तविक संस्था आ निर्णयक दायरा पबैत अछि। समानान्तर इतिहासक स्रोत-शुचिता सत्ता-विश्लेषणक आधार होयत, विकल्प नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्थ : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे ज्ञान आ सत्ता अनेक मानवीय संस्थामे परस्पर-निर्माणकारी सम्बन्ध रखैत अछि, विशेषतः जखन ज्ञान व्यक्ति/समुदायकेँ मापैत, वर्गीकृत करैत, सामान्यीकृत करैत आ प्रशासित करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे सत्ता-ज्ञान अवधारणा स्वयं अत्यधिक व्यापक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that knowledge and power have a mutually constitutive relation in many human institutions, especially when knowledge measures, classifies, normalizes, and administers individuals or communities.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 36; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 37 — फूकोक पुरातत्त्व

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Foucault's Archaeology

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

फूकोक पुरातत्त्व विचारक युगानुक्रमक बदला एहन विमर्शात्मक नियम देखैत अछि जे कोन कथन वैध, कोन विषय सम्भव आ के अधिकृत वक्ता बनत, तकर निर्धारण करैत अछि। व्यक्तिक अभिप्रायकँ एक क्षण कोष्ठकित कऽ कथन-व्यवस्थाक आन्तरिक नियमितता खोजनाइ एक अनोखी इतिहास-पद्धति अछि। लेखक एहि पद्धतिक शक्ति वर्गीकरणक दृश्य-अदृश्य नियम चिन्हबाक रूपमे देखबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

लेखक आ प्रतिरोधकर्ता कँ अत्यधिक स्थगित कएल जाए तँ सृजनशीलता आ परिवर्तनक कारण न बुझायल जा सकैत अछि। नियमक सीमा केना चिन्हब, जखन अभिलेख स्वयं चयनित अछि? ई दोसर प्रश्न पुरातत्त्वक आत्मपरीक्षाक माध्यम अछि। ऐतिहासिक कालखण्डक खण्डित रूपरेखा स्वतंत्र अभिलेखीय प्रमाण माँगैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

वर्तमान शब्दकोश, शैक्षिक वर्गीकरण आ क्षेत्रीय अभिलेखमे एहि दृष्टिक उपयोग सम्भव अछि। फूकोक वंशावली अगिला अध्यायमे नियमक इतिहासकँ संघर्ष आ आकस्मिकतासँ पुनः जोड़त।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्थ : “फूकोक पुरातत्त्वक मूल प्रतिपादन ई अछि जे ज्ञान-क्षेत्र केवल व्यक्तिक अभिप्राय वा विचारक प्रत्यक्ष इतिहाससँ नहि बनैत; कथनसभ एहन नियमबद्ध विमर्शात्मक संरचनामे प्रकट होइत अछि जे कोन विषय बोलल जा सकैत अछि, के बोलि सकैत अछि, कौन अवधारणा मान्य, आ कौन सम्बन्ध ज्ञानयोग्य अछि—ई सीमित करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे विषय/कर्ता (subject) आ लेखक (author) केँ कोष्ठकित/अस्थायी रूपेँ स्थगित (bracket) करैत पुरातत्त्व मानवीय सक्रियता (agency), अभिप्राय (intention) आ सृजनशीलता (creativity) कम अकैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of Foucault's archaeology is that a field of knowledge is not constituted only by individual intentions or by a direct history of ideas. Statements appear within rule-governed discursive structures that delimit what topics can be spoken about, who can speak, which concepts are valid, and which ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 37; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 38 — वंशावली: इतिहास लिखबाक दोसर ढंग

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Genealogy: Another Way of Writing History*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

वंशावली-पद्धति वर्तमान संस्थाकें प्राकृतिक, शाश्वत अथवा पूर्वनिर्धारित प्रगतिक अन्तिम चरण मानबाक विरोध करैत अछि। वैकल्पिक मार्ग, संघर्ष, सत्ता-संबंध आ अनपेक्षित परिणतिक अभिलेख सँ अवधारणाक जन्म-परिवर्तन देखल जाइत अछि। लेखक “मूल उद्गम”क एकमात्र शुद्ध कहानी पर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

इतिहासक आकस्मिकता पर बल देबैत कारण-सम्बन्ध समाप्त नहि होइत। वर्ग-संघर्ष, राज्यनीति अथवा विधि-परिवर्तनक ठोस समयरेखा बिना प्रत्येक संस्था मात्र संयोगक परिणाम लगि सकैत अछि। विरोधी स्रोत, वित्तीय लेखा आ स्थानीय अभिलेख संग परीक्षा करब वंशावलीक अनिवार्य शर्त अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूकोक पुरातत्त्व नियमक एक कालखण्डक पहचान करैत अछि; वंशावली ओकर सामाजिक उत्पत्ति आ संघर्षक प्रश्न उठबैत अछि। समानान्तर इतिहास-दृष्टिमे एहि दू पद्धतिक उपयोग स्रोत-परीक्षणक संग होयबाक चाही।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “वंशावलीक मूल प्रतिपादन ई अछि जे वर्तमान संस्था/अवधारणाकें अपरिहार्य, प्राकृतिक वा एकरेखीय प्रगतिक परिणाम मानब गलत हो सकैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल तर्क—वंशावली उद्गम/मूल (origin) क खोजक विरोध करैत अछि जखन उद्गमकें शुद्ध सार, स्थायी पहचान अथवा इतिहासक पूर्वनिर्धारित बीज मानल जाए।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of genealogy is that it can be mistaken to treat present institutions or concepts as inevitable, natural, or the outcome of linear progress. Their history is often made through contingent turns, struggles, relations of power, and changes of use.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 38; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 39 — अनुशासन, निगरानी आ सामान्यीकरण

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Discipline, Surveillance and Normalization

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

अनुशासनात्मक सत्ता शरीर, समय, कार्य, दृष्टि आ आत्मनिगरानीक व्यवहारिक व्यवस्थामे काम करैत अछि। केवल दण्डक दृश्य हिंसा सत्ता नहि; परीक्षा, श्रेणी, नियमित समयतालिका आ अनवरत नापजोख व्यक्तिक प्रशिक्षणक माध्यम बनैत अछि। अध्याय सामान्यीकरणक नैतिक आ ज्ञानात्मक अर्थकै एक साथ प्रश्नांकित करैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

प्रत्येक मानक दमनकारी नहि: चिकित्सकीय प्रशिक्षण, सार्वजनिक सुरक्षा आ समान नियमक आवश्यकता सेहो रहैत अछि। ताहि कारण अनुशासनक आलोचना करत काल ककर अधिकार बनल, के अपील करि सकैत, आ ककरा पर असमान निगरानी पडैत—ई भेद स्पष्ट होयत। मानकक निर्माण आ ओकर अन्यायपूर्ण प्रयोगक अन्तर बिना निष्कर्ष अति सामान्य बनत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

विद्यालय, डिजिटल निगरानी आ राज्यक प्रशासनमें फूकोक विमर्श पुनर्परीक्षण योग्य अछि। अध्यायक कसौटी “निगरानी अस्तित्वमे अछि” नहि, “सत्ता ककरा कोन प्रकार सामान्य बनबैत अछि” अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणंश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे अनुशासनात्मक सत्ता व्यक्ति केर शरीर, समय, गति, आदत, कौशल आ आत्म-निरीक्षणक आकार देबयवला सूक्ष्म सत्ता-रूप अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणंश : “बारहम तर्क—अनुशासनक आलोचना मानक-विरोध नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that disciplinary power is a subtle form of power that shapes a person's body, time, movement, habits, skills, and self-observation.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 39; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 40 — शरीर, संस्था आ ज्ञान

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Body, Institution and Knowledge*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

शरीर एक साथ जैविक वास्तविकता, निजी जीवनक अनुभव आ संस्थागत वर्गीकरणक स्थल अछि। रोगक निदान प्रयोगशालाक प्रमाण माँगैत अछि, मुदा शरीरपर अस्पताल, कानून, परिवार आ सामाजिक नियमक प्रभाव ओकर जीवनगत अर्थ बदलैत अछि। लेखक एहि भिन्न स्तरकें एकहि अपरिभाषित “निर्मिति” शब्दमे नहि गलाबय चाहैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

चिकित्सा-विज्ञानक वस्तुगत निष्कर्षकें सत्ता-कथन कहि निरस्त करब रोगीक हानि करि सकैत अछि। ओहि उलट संस्थागत भेदभाव, पीडा पर अविश्वास आ अभिगमक असमानता जैविक मापनसँ स्वतः दूर नहि होइत। उपचारक प्रभावक प्रमाण आ मरीजक गरिमाक मूल्यांकन अलग होइतहुँ संयुक्त उत्तरदायित्व बनबैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अध्याय ३६क ज्ञान-सत्ता सम्बन्ध शरीरपर वास्तविक रूप धारण करैत अछि। फूकोक सामान्यीकरणक विवेचन आगामी ऐतिहासिक आत्मसमीक्षामे स्रोत आ अनुभवक परीक्षा माँगैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे शरीर जैविक यथार्थ, जीवित अनुभव आ संस्थागत वर्गीकरण—तीनू स्तर पर एकसंग उपस्थित अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “पूर्वपक्षक पहिल रूप जैव-चिकित्सकीय अछि—रोगक सत्य शरीरमे अछि; अनुभव, संस्था आ सत्ता पर अत्यधिक बल चिकित्सा-विज्ञानक वस्तुनिष्ठता कमजोर करि सकैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that the body is present simultaneously on three levels—biological reality, lived experience, and institutional classification. Treating any one level as the whole produces an incomplete philosophy.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 40; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 41 — फूको आ समानान्तर इतिहास-दृष्टि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Foucault and the Parallel
Historical Perspective

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

फूकोक पुरातत्त्व आ वंशावली हाशियाक स्रोत खोलबाक शक्तिशाली उपाय दैत अछि; मुदा हाशियामे रहल वचन स्वतः प्रमाणित सत्य नहि। लेखक समानान्तर इतिहासमे अभिलेखीय मौन, वर्गीकरणक सत्ता आ विरुद्ध स्मृतिक महत्त्व स्वीकारैत छथि। सत्यापनक आधार घटनाक कालक्रम, स्रोतक निर्भरता आ परस्पर विरोधी गवाहीक परीक्षा रहैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सत्ता-पठन अधिक व्यापक भेला पर प्रत्येक इतिहास केवल प्रभुत्वक बखान बनबाक खतरा अछि। संस्था किछु दमनकारी काज संग वास्तविक जनहितक काज सेहो करि सकैत अछि, तँ एकतर्फी निष्कर्ष उचित नहि। मिथिलाक स्थानीय इतिहासक दस्तावेज, मौखिक स्मृति, राजकीय अभिलेख आ वैज्ञानिक आँकड़ा एकसमान विश्वसनीय नहि; स्रोत-प्रकार अनुसार परीक्षा आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

ज्ञान-सत्ता विभागक ई अन्तिम पाठ प्रथम खण्डक समानान्तर इतिहास-दृष्टिकेँ एक नूतन विधिसँ संशोधित करैत अछि। अगिला उत्तर-आधुनिक बहस प्रश्न करैत अछि जे स्रोतक आलोचना करत काल सत्य-मानदण्ड कोना बनल रहत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “फूकोक प्रेरणा हाशियाक इतिहास खोलैत अछि, मुदा ‘हाशिया’ स्वयं सत्यक प्रमाण नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप कहैत अछि जे फूको-प्रेरित इतिहास सत्ता/विमर्शपर एतेक बल दैत अछि जे घटना, व्यक्ति, कारण, कालक्रम आ संस्थागत उपलब्धि गौण भऽ जाइत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “Foucault's inspiration opens histories of the margins, but the 'margin' is not itself proof of truth. Oral memory, women's songs, workers' experience, defeated communities, non-state documents, and local languages are important sources; their date, context, version, transmission, bias, and mutual corroboration must ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 41; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 42 — उत्तर-आधुनिकता की अछि?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : What Is Postmodernity?

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

उत्तर-आधुनिकता केँ एकटा विद्यालयक घोषणापत्र नहि, सार्वभौमिक प्रगति-कथा, स्थिर केन्द्र आ पारदर्शी प्रतिनिधित्वपर विविध संशयक परिवार मानल गेल अछि। लेखक आलोचनाक वैध क्षेत्र स्पष्ट करैत छथि—प्रभुत्वशाली व्याख्या ककर अनुभवकेँ बाहर राखैत अछि? एतय पद्धतिगत संशय जाँचक बाट खोलैत अछि, स्वतन्त्र सत्यक स्वतः अन्त नहि करैत।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

“सर्वे कथा समान” अथवा “सभ प्रमाण सत्ता-द्वारा बनल” जकाँ दावीसँ सामूहिक दायित्वक मापदण्ड हरायब सम्भव अछि। उल्टा आधुनिकताक प्रत्येक सार्वभौमिक विचारकेँ अचूक मानबो अन्यायपूर्ण बहिष्कार बचा सकैत अछि। स्थानिक अनुभवक मान्यता आ सामान्य मानवाधिकारक सार्वजनिक कसौटीक बीच तनाव निरन्तर परीक्षणयोग्य रहत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

देरिदा आ फूकोक भिन्न आलोचना एक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे भेटैत अछि, मुदा एक-दोसराक पर्याय नहि होइत। समानान्तर दर्शन प्रमाणक विविधता बचबैत संशोधनक सामान्य नियम चाहैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे उत्तर-आधुनिकता एकल सिद्धान्त नहि; आधुनिक सार्वभौमिकता, प्रगति-कथा, केन्द्र, स्थिर पहचान, एकल व्याख्या आ प्रतिनिधित्वक पारदर्शितापर उठल विविध संशयसभक परिवार अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “तालिका 77 — समानान्तर दर्शन उत्तर-आधुनिक आलोचनासँ बहुलता, केन्द्र-समीक्षा, हाशियाक संवेदनशीलता

आ आत्मसमीक्षा ग्रहण करैत अछि; मुदा सत्य-अराजकता, प्रमाण-विहीनता आ गरिमा-विरोधी सापेक्षतावाद अस्वीकारैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणंश : “The central thesis of this chapter is that postmodernity is not a single doctrine; it is a family of diverse doubts raised against modern universality, narratives of progress, the centre, stable identity, single interpretation, and the transparency of representation.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 42; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 43 — ल्योटार आ महाख्यानपर अविश्वास

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Lyotard and Incredulity toward Metanarratives*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

ल्योटारक महाख्यान-विषयक अविश्वास आधुनिक समाजमे ज्ञानक एकल वैधतादाता—प्रगति, मुक्ति वा सर्वज्ञान—पर प्रश्न उठबैत अछि। लेखक एहि आलोचनाकेँ ज्ञानक अराजकता नहि, वैधताक अधिकारक पुनर्वितरणक समस्या मानैत छथि। भिन्न भाषिक खेल आ संस्थागत न्यायकेँ एक सूत्रमे बलपूर्वक न बाँधबाक आग्रह एहि दृष्टिक बौद्धिक बल अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

महाख्यानक अतिरेकसँ बचनाइ उपयोगी, मुदा साझा न्याय-सिद्धान्त छोड़ि देलासँ अल्पसंख्यक अधिकार वा हिंसाक विरोधक आधार केना बनेत? कोनो कष्टक सार्वजनिक उत्तरदायित्व लेल आंशिक सामान्य मानक अनिवार्य हो सकैत अछि; ओ मानक अनिवार्य ऐतिहासिक प्रगतिक महान कथा नहि बनबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

उत्तर-आधुनिक संशयक एहन प्रयोग पहिल खण्डक गरिमा-आधारित नैतिकता सँ जुड़ैत अछि। आगाँ माध्यम आ प्रतिरूपक विश्लेषण देखाओत जे वैधता केवल पुस्तकक ग्रन्थमे नहि, दृश्य-डिजिटल चिन्हमे सेहो संघर्षक विषय अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे ल्योटारक महाख्यान-विरोध ज्ञानक अराजकता नहि; वैधता केर एकाधिकार-विरोध अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्षक उत्तर—साझा नैतिक सिद्धान्त आवश्यक हो सकैत अछि, मुदा हुनका महाख्यानक ऐतिहासिक अपरिहार्यता दाबी नहि चाही।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Lyotard's opposition to metanarratives is not anarchy of knowledge; it is opposition to monopoly over legitimacy. No single narrative—scientific progress, nation, class emancipation, civilizational destiny, market, religion, or technological development—can become the final ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 43; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 44 — बौद्रियारः प्रतिरूप, माध्यम आ अधि- यथार्थता (hyperreality)

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Baudrillard: Simulacra, Media and Hyperreality

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

बौद्रियारक प्रतिरूप आ संकेत-मूल्यक विचार देखबैत अछि जे उपभोक्ता-संस्कृतिमे वस्तु उपयोगसँ अतिरिक्त छवि, प्रतिष्ठा आ सामाजिक भेदक माध्यम बनैत अछि। माध्यमक बारम्बार प्रस्तुति अनुभवक सामान्य मानक निर्माण करि सकैत अछि; प्रतिनिधित्वक स्वतंत्र प्रभावक आलोचना एहि अध्यायक केन्द्र अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अधि-यथार्थताक वाक्यकें “भौतिक जगत समाप्त”क घोषणा मानल जाए तँ बीमारी, भूख, हिंसा वा पर्यावरणक पदार्थगत परिणाम उपेक्षित होयत। डिजिटल प्रतिरूपक अध्ययन जरूरी अछि, मुदा कोन छवि व्यवहार बदलेलक, तकर प्रमाण अलग अनुसंधानसँ भेटत। प्रत्येक माध्यम-प्रभाव स्वयं सर्वशक्तिमान नहि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

संरचनावादक संकेत-विमर्श एतय उपभोक्ता-सत्ता आ मीडिया विश्लेषण बनैत अछि। प्रथम खण्डक यथार्थवादी आधारकें आगाँ डिजिटल युगक चर्चामे एहि आलोचनाक संग मिलाकऽ देखल जाएत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे बौद्रियार आधुनिक/उत्तर-आधुनिक उपभोक्ता-माध्यम समाजमे चिह्नक शक्ति पर बल दैत अछि: वस्तु केवल उपयोग अथवा कीमत कारण नहि, सामाजिक संकेत-मूल्य (sign-value) कारण सेहो उपभोगित होइत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्षक उत्तर—बौद्रियारक उपयोग ‘जगत नहि’ दाबी रूपमे नहि, प्रतिनिधित्व/संकेतक स्वायत्त प्रभावक आलोचना रूपमे अधिक फलदायी।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Baudrillard emphasizes the power of signs in modern and postmodern consumer-media society: objects are consumed not only for utility or price, but also for social sign-value.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 44; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 45 — सत्यक अन्त भेल की?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Has Truth Ended?

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

उत्तर-आधुनिक आलोचनाक कारण सत्य समाप्त नहि भेल; सरल, निष्पक्ष, पारदर्शी पहुँचक दाबीक परीक्षण कठोर भेल। लेखक घटना, ओकर अभिलेख, भाषा आ व्याख्याक भिन्न स्तर बचबैत छथि। कोनो स्रोत पक्षधर होइतहुँ तथ्यात्मक साक्ष्य रखि सकैत अछि—मुदा पक्षधरता चिन्हलासँ प्रतिपक्ष आ स्रोत-जाँचक आवश्यकता हटैत नहि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

यदि प्रत्येक सूचना केवल सत्ता-रचना अछि, तँ झूठ आ सत्यक भेद करबाक नैतिक शक्ति घटत। उल्टा विशिष्ट स्रोत उपलब्ध भेलासँ पूर्ण अर्थ-सिद्धि मानबो भ्रम अछि। वैज्ञानिक मापन, प्रत्यक्ष अनुभव आ ऐतिहासिक स्मृति अलग प्रमाण-पद्धति माँगैत छथि; निरपेक्षताक आदर्श अपन त्रुटि-सुधारक व्यवस्थासँ परखल जाए।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

समानान्तर दर्शनक संशोध्य विवेकवाद एहि अध्यायमे स्पष्ट रूपसँ पुनः स्थापित होइत अछि। विज्ञान आ इतिहासपर उत्तर-आधुनिक प्रश्नक विशेष क्षेत्र अगिला अध्याय खेलैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे सत्यक अन्त नहि भेल; सत्य-दाबी पर पुरान निष्कपट भरोसा समाप्त/कमजोर भेल।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “पहिल पूर्वपक्षक उत्तर—तथ्य स्वतंत्र हो सकैत अछि, मुदा मनुष्यक पहुँच स्वतः पारदर्शी नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The central thesis of this chapter is that truth has not ended; rather, the old naive confidence placed in truth-claims has ended or weakened. Language, institutions, power, and media mediate access to truth; they do not abolish the existence of truth.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 45; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 46 — विज्ञान, इतिहास आ उत्तर-आधुनिक आलोचना

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Science, History and
Postmodern Critique

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

विज्ञान एक सामाजिक संस्था आ प्रयोग-जाँचक विशिष्ट ज्ञान-पद्धति दुनू अछि। वैज्ञानिक उपकरण, वित्तपोषण, प्रतिष्ठा आ प्रकाशनक सत्ता-संरचना शोधक दिशा प्रभावित करैत अछि; तथापि प्रकृतिक मापनक वस्तुगत प्रतिरोध एहि सामाजिक निर्माणसँ समाप्त नहि। लेखक विज्ञानक इतिहासक आलोचनाकें विज्ञान-विरोधी निष्कर्षमे नहि बदलैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

वैज्ञानिक सहमतिक इतिहास देखेबाक अर्थ रोगाणु वा ग्रहक अस्तित्वक मनमाना चुनाव नहि। एही प्रकार अभिलेखीय इतिहासमे मौन खोजब महत्त्वपूर्ण, मुदा मौनसँ वाञ्छित घटना उत्पन्न नहि कएल जा सकैत। स्वतंत्र पुनरुत्पादन, विरोधी साक्ष्य, पद्धतिगत पारदर्शिता आ त्रुटि-प्रकाशन अन्तिम निर्णायक कसौटी बनबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

पूर्ववर्ती “सत्यक अन्त?” प्रश्नक एतय व्यवहारिक उत्तर भेटैत अछि। डिजिटल सत्य, वैज्ञानिक यथार्थवाद आ कृत्रिम बुद्धि सम्बन्धी अन्तिम खण्डसभ एहि विभाजनक पुनर्परीक्षा करत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्थ : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे विज्ञान सामाजिक संस्था सेहो अछि आ यथार्थ-जाँचक विशिष्ट पद्धति सेहो।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप वैज्ञानिक यथार्थवादी अछि—इतिहास/समाज पर अत्यधिक बल विज्ञानक वस्तुगत उपलब्धि कम आँकैत; इलेक्ट्रॉन (electron), विषाणु (virus), ग्रह, जीन (gene) वा विवर्तनिक पट्ट (tectonic plate) सामाजिक कथा नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that science is both a social institution and a distinctive method for testing reality. Its social history does not make scientific facts arbitrary; nor does its methodological power exempt it from social criticism.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 46; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 47 — समानान्तर दर्शनक उत्तर

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Response of Parallel Philosophy*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

समानान्तर दर्शनक उत्तर दू अतिवादकें अस्वीकार करैत अछि: एक केन्द्रक अचूक प्रमाणाधिकार आ प्रत्येक दृष्टिकोणक अचूक निजी सत्य। हाशियाक अनुभव नूतन स्रोत हो सकैत अछि, पर स्वयं परीक्षणसँ मुक्त विशेषाधिकार नहि। लेखक असहमति, गरिमा आ सार्वजनिक निर्णयक बीच संचरित होयबाक योग्य मानदण्ड बनबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

बहुप्रमाणीयता मतसभक साधारण गिनती नहि। जँ एक स्रोत प्रत्यक्ष अनुभव आ दोसर दीर्घ प्रमाणित आँकड़ा दैत अछि, तँ दुनूक बल बराबर किएक होयत? सामाजिक पीड़ा केँ तथ्यक सामान्यीकरणक पर्याप्त प्रमाण मानबो अनुचित, मुदा पीड़ितक आवाज न सुननाइ नैतिक अन्याय अछि। एहि भेदक मापन पहिने होयत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

उत्तर-आधुनिक विवादक अन्तमे प्रथम खण्डक सात आधार फेर कार्यकारी पद्धति बनैत अछि। हर्मेन्यूटिक्सक प्रश्न एहि मानदण्डक पाठ-व्याख्यात्मक रूप खोलैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “दोसर सम्भावना अछि अति-सापेक्षतावाद —हर दृष्टिकोण अपन सत्य, हर इतिहास अपन कथा, हर नैतिकता अपन समुदाय, हर विज्ञान अपन प्रतिमान, हर पहिचान अपन नियम।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “चारिम तर्क—हाशिया ज्ञानमीमांसक संसाधन (epistemic resource) हो सकैत अछि, ज्ञानमीमांसक विशेषाधिकार (epistemic privilege) स्वतः नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “A second possibility is extreme relativism—each perspective has its own truth, each history its own story, each morality its own community, each science its own paradigm, each identity its own rules. Such a position can weaken public evidence, justice, accountability, and shared criticism.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 47; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 48 — हर्मेन्यूटिक्स: बुझब स्वयं समस्या किएक?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Hermeneutics: Why Is Understanding Itself a Problem?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

हर्मेन्यूटिक्सक मूल विषय बुझबाक क्रिया स्वयं प्रश्न, भाषा, प्रसंग, पूर्वबोध आ पुनःपाठक सम्बन्धमे बनब अछि। पाठक अर्थ केवल लेखकक मनक प्रतिलिपि नहि, पाठक मनमाना आविष्कारो नहि। लेखक एहि मध्यस्थ प्रक्रियाक दार्शनिक पक्षकें ऐतिहासिक समझ, अनुवाद आ सार्वजनिक संवादसँ जोड़ैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

व्याख्याक ऐतिहासिकता स्वीकार कएलापर उचित/अनुचित पठनक आधार स्पष्ट करब आवश्यक अछि। मूल वाक्य, प्रसंग, ग्रन्थ-प्रकार आ विरोधी अर्थ-साक्ष्यक परीक्षा बिना “क्षितिज-संयोग” सुंदर रूपक मात्र रहि सकैत अछि। जे पाठ सामाजिक अन्यायकें वैध ठहरबैत अछि, ओकर परम्परागत अर्थक सम्मान आ आलोचना बीच निर्णयक नियम चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूकोक कथन-नियमक पाछाँ हर्मेन्यूटिक्स अर्थ-निर्माणक सक्रिय प्रक्रिया जाँचैत अछि। गाडामर आ रिकोयर एहि प्रक्रिया मे परम्परा, दूरी आ आलोचनाक भिन्न भार रखैत छथि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे बुझब निष्क्रिय प्रतिलिपि नहि; प्रश्न, पूर्वबोध, पाठ/घटना, प्रसंग, भाषा आ पुनर्परीक्षणक संवादात्मक प्रक्रिया अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्षक पहिल रूप पद्धतिवादी अछि—यदि व्याख्या ऐतिहासिक/पूर्वबोध-सापेक्ष, तखन सही पठनक वस्तुगत पद्धति (objective method) कहाँ?”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that understanding is not passive copying; it is a dialogical process of question, fore-understanding, text or event, context, language, and re-examination.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 48; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 49 — गाडामर: परम्परा आ पूर्वबोध

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Gadamer: Tradition and Fore-understanding*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

गाडामरक “पूर्वनिर्णय” केवल अन्ध पक्षपात नहि; बुझबाक प्रारम्भिक अपेक्षा आ परम्परासँ प्राप्त प्रश्नक आधार सेहो अछि। क्षितिज-संयोगक अर्थ अपन इतिहास बिसरि एक तटस्थ स्थान पाबि लेब नहि, बल्कि भिन्न ऐतिहासिक भाषासँ संवादमे पूर्वबोधकें संशोध्य बनायब अछि। लेखक ई सूक्ष्म अन्तर देखबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

परम्परा प्रश्न पूछबाक संसाधन होएब आ प्रचलित अन्यायकें अधिकार देब अलग स्थिति अछि। यदि परम्पराक मूल विश्वसनीयता स्वतः मानि ली, तँ जाति, लिंग अथवा समुदाय-बहिष्कारक प्रतिवाद कमजोर पड़त। मूल ग्रन्थसँ मतभेदक ऐतिहासिक कारण आ समकालीन पीड़ितक अनुभव समान गंभीरतासँ परखबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

हर्मेन्यूटिक्सक आरम्भिक समस्या एतय ऐतिहासिक पूर्वधारणाक रूप ग्रहण करैत अछि। रिकोयरक पाठदूरी आ आलोचनात्मक विवेचन अगिला अध्यायमे एहि भरोसाक सीमा परखैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “गाडामरक ‘पूर्वनिर्णय’ (prejudice/Vorurteil) शब्दक अर्थ अन्ध पक्षपात मात्र नहि; बुझबाक आरम्भिक पूर्वधारणा सेहो।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “पूर्वपक्षक पहिल रूप ज्ञानोदयवादी अछि—परम्परा आ पूर्वनिर्णयक सकारात्मकता अन्धविश्वास, रूढ़ि आ अधिकार-पूजा कें पुनःवैध बना सकैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “Gadamer's term 'prejudice' (prejudice/Vorurteil) does not mean blind bias alone; it also means the prior assumption from which understanding begins. We do not read any text with a completely empty mind—language, education, tradition, prior experience, questions, genre, and historical knowledge are already active. The ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 49; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 50 — रिकोयर: पाठ, प्रतीक आ व्याख्या

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Ricoeur: Text, Symbol and Interpretation

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

रिकोयर पाठकें लेखकक निजी अभिप्राय आ पाठकक स्वच्छन्द इच्छा दुनूसँ अलग सार्वजनिक अर्थक क्षेत्र मानैत छथि। प्रतीकक बहुस्तरीयता आ व्याख्याक दूरी पाठकें नूतन प्रसंगमे प्रश्न करबाक योग्यता दैत अछि। एहि बीच मूल संदर्भक प्रमाण छोड़े बिना पाठक नव अर्थक सम्भावना खोजि सकैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

पाठ लेखकसँ अलग भेला परो इतिहास-विहीन नहि। साहित्यिक रूपक आ विधिक दस्तावेजक प्रमाण-भार समान नहि, आ गूढ़ प्रतीकक एक सम्भावित अर्थकें स्रोतक निश्चित घोषणा मानब अनुचित। समकालीन पाठकक हानि-लाभ आ मूल लेखकक अभिप्राय अलग परखल जाए तँ व्याख्या अधिक उत्तरदायी बनत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

गाडामरक पूर्वबोधक संवादक संग रिकोयरक दूरी-विश्लेषण जुड़ैत अछि। आगे लेखक-पाठक अधिकारक अलग परीक्षा एहि तनावकें व्यवहारिक रूप देत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “रिकोयरक मूल प्रतिपादन ई अछि जे पाठ लेखकक निजी अभिप्रायसँ पूर्णतः बँधल नहि, मुदा लेखक/इतिहास/भाषा सँ पूर्णतः काटल सेहो नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “व्याख्या बुझबाक विरोधी नहि; बुझबाक अनुशासित विस्तार अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “Ricoeur's central thesis is that a text is not completely bound to the author's private intention, but neither is it completely cut off from author, history, or language. Written text creates distance; because of this distance, the structure of the text and its possible meanings can be examined independently.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 50; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 51 — लेखकक अभिप्राय बनाम पाठकक अर्थ

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Authorial Intention versus the Reader's Meaning*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

लेखकक अभिप्राय अर्थक महत्त्वपूर्ण प्रमाण अछि, अन्तिम न्यायालय नहि; पाठकक नव अर्थ एक सम्भावना अछि, प्रमाणविहीन अधिकार नहि। लेखक एहि दोसर सीमा केँ स्पष्ट करैत छथि। विधानक पाठ, कविता, दर्शनग्रन्थ आ लोककथा मे अभिप्राय-प्रसंगक भार अलग हो सकैत अछि; एही भेद बिना अर्थक सामान्य सिद्धान्त कमजोर पड़त।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

लेखकक पत्र वा प्रस्तावना भेटलासँ मूल पाठक प्रत्यक्ष व्याकरण नष्ट नहि होइत; पाठकक अनुभव प्रभावशाली भेला परो ऐतिहासिक दावा स्वतः प्रमाणित नहि। अनुवादकक हस्तक्षेप लेखकीय अभिप्राय, मूल पदावली आ लक्षित भाषाक नैतिक दायित्वक तेसर कोण बनबैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मौलिक समानान्तर दर्शनक मैथिली-अंग्रेजी रूपान्तरक समीक्षामे ई अध्याय अत्यन्त आवश्यक अछि। एकहि दार्शनिक शब्दक अंग्रेजी चयन मूल तर्कक स्वर बदलि सकैत अछि; अर्थगत मिलान शीर्षकक समानतासँ नहि ठहरत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्शः : “समानान्तर दर्शनक मूल प्रतिपादन ई अछि: लेखकक अभिप्राय अर्थक महत्त्वपूर्ण प्रमाण अछि, परमाधिकार नहि; पाठकक अर्थ व्याख्यात्मक सम्भावना अछि, प्रमाणविहीन स्वच्छन्दता नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्शः : “दोसर तर्क—लेखकक निजी अभिप्राय आ सार्वजनिक भाषिक अर्थ अलग भऽ सकैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “Parallel Philosophy's central thesis is this: authorial intention is important evidence for meaning, but not supreme authority; the reader's meaning is an interpretive possibility, but not evidence-free licence. The text is a public mediating structure between author and reader.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 51; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 52 — भारतीय भाष्य-परम्परा

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : The Indian Commentary Tradition

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भारतीय भाष्य-परम्परा मूल ग्रन्थक शब्दार्थ सुरक्षित करबाक साथ आपत्ति-समाधान, अवधारणाक नूतन सीमांकन आ सिद्धान्तक विकासक स्थल अछि। पूर्वपक्ष-उत्तरपक्षक नियम प्रतिपक्षकें सबल रूपमे प्रस्तुत करबाक माँग करैत अछि। लेखक मूल शास्त्र, भाष्य, टीका आ अनुवादक बीच परस्पर श्रेणीभेदकें बौद्धिक नवोन्मेषक संरचना रूपमे देखैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

भाष्य-परम्पराक समृद्धि मानलासँ एकर सभ संस्था समान सामाजिक प्रवेश देलक—ई निष्कर्ष नहि निकलैत। मूल लेखक आ परवर्ती व्याख्याकारक वचन मिश्रित कएल जाए तँ प्रमाण-शृंखला टूटि सकैत अछि। मूल संस्कृतक तर्क-रचना आ मैथिली अनुवादक शब्द-चयनक भेद अलग अभिलेखित करब आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

गाडामर-रिकोयरक प्रश्नसभक संवादमे भारतीय भाष्य स्वतंत्र प्रणालीक रूपमे प्रवेश करैत अछि। आगाँ मिथिलाक शास्त्रार्थकें हर्मेन्यूटिक्सक सीधा पूर्वरूप नहि, तुलनीय व्यवहार मानल जाएत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणंश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे भारतीय भाष्य-परम्परा अर्थ-संरक्षण मात्र नहि, अर्थ-परीक्षण, तर्क-विस्तार, प्रतिपक्ष-निर्माण, पुनर्परिभाषा आ बौद्धिक नवोन्मेषक संस्थागत पद्धति सेहो अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्ष-उत्तरपक्षक पद्धति समानान्तर दर्शन लेल विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: विरोधी मतकेँ जानबूझि कमजोर बनायब नहि; पहिने ओकर सबल रूप पुनर्निर्मित करू, तखन आलोचना करू।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that the Indian commentary tradition is not only a method of preserving meaning, but also an institutional method of testing meaning, expanding argument, constructing counter-positions, redefining concepts, and generating intellectual innovation.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 52; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 53 — मिथिलाक शास्त्रार्थ एकटा व्याख्यात्मक अभ्यास (hermeneutic practice) केर रूपमे?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Mithila's Śāstrārtha as a Hermeneutic Practice?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मिथिलाक शास्त्रार्थमे पाठ-बुझाइ, पूर्वपक्षक स्थापन, शब्दक सीमा आ तर्क-निर्णय एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। लेखक शास्त्रार्थकेँ आधुनिक व्याख्याशास्त्रक ऐतिहासिक आरम्भ नहि, अर्थ-परीक्षणक स्वतन्त्र शास्त्रीय अभ्यास मानैत छथि। प्रतिपक्षक अभिप्राय बुझि आलोचना करब मात्र औपचारिक विजय नहि, विधिगत ईमानदारी अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

शास्त्रार्थक ऐतिहासिक भागीदार ककरा अनुमति पवैत छलाह, की सामाजिक अधिकारक भिन्नता तर्कक बराबरीकेँ सीमित करैत छल, से जाँच जरूरी अछि। तर्क-संवादक उत्कृष्ट आदर्श आ संस्थागत व्यवहारक अन्तर नहि मेटायल जाए। प्रामाणिक शास्त्रीय उद्धरणक बिना आधुनिक “समावेशिता” शब्दकेँ प्राचीन मतक स्वतः उद्देश्य बनायब अनुचित।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

हर्मेन्यूटिक्स विभागक उपसंहार भारतीय-पाश्चात्य संवादक बौद्धिक शर्त पुनः स्पष्ट करैत अछि। अगिला आलोचनात्मक सिद्धान्त ज्ञानक सामाजिक तथा आर्थिक अवस्थाक परीक्षण करैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे मिथिलाक शास्त्रार्थकेँ आधुनिक हर्मेन्यूटिक्सक ऐतिहासिक पूर्वरूप नहि, वरन् अर्थ-बुझाइ, तर्क-परीक्षण आ प्रतिपक्ष-संवादक एक स्वतंत्र शास्त्रीय अभ्यास रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “तेसर तर्क—व्याख्या शास्त्रार्थक पूर्वशर्त अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The central thesis of this chapter is that Mithila's śāstrārtha should not be read as a historical precursor of modern hermeneutics, but as an independent śāstric practice of understanding meaning, testing arguments, and engaging with counter-positions. Comparison is fruitful at the level of problems; claims of ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 53; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 54 — फ्रैंकफर्ट स्कूल

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : The Frankfurt School

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

फ्रैंकफर्ट स्कूलक महत्त्व केवल एक संयुक्त सिद्धान्त नहि, समाजक प्रत्यक्ष तथ्यकेँ अर्थतन्त्र, संस्कृति, सत्ता आ चेतनाक सम्बन्धमे जाँचबाक आलोचनात्मक अनुशासन अछि। सामाजिक विज्ञानक तटस्थताको लेखक प्रश्नक विषय बनबैत छथि, कारण अनुसन्धानक विषयक चुनावो ऐतिहासिक आवश्यकता सँ संबंधित होइत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

आलोचना नैतिक दिशा बिना केवल निराशा बनि सकैत अछि; मुदा पूर्वनिर्धारित मुक्ति-कथा प्रमाणक विकल्प बनलासँ अनुसन्धान पक्षधर प्रचार बनत। आर्थिक कारण, सांस्कृतिक संकेत आ व्यक्तिक अनुभवक सम्बन्ध विशिष्ट इतिहासपर परखी जाए। विद्यालयक भीतरक विविध मतकेँ एक संघटित सिद्धान्तक रूपमे न मेटायल जाए।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूकोक सत्ता-विश्लेषणक पाछाँ फ्रैंकफर्ट स्कूल एक भिन्न सामाजिक आलोचनाक पद्धति दैत अछि। आधुनिक विवेकक आत्मविरोध अगिला अध्यायमे मुख्य विषय बनैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे फ्रैंकफर्ट स्कूलक स्थायी महत्त्व कोनो एक सूत्रमे नहि, वरन् आलोचनात्मक अनुसन्धानक एक अनुशासनमे अछि: समाजक प्रत्यक्ष तथ्यकेँ ओकर ऐतिहासिक निर्माण, आर्थिक हित, संस्थागत सत्ता, सांस्कृतिक अर्थ, मनोवैज्ञानिक गठन आ घोषित नैतिक आदर्श सभक संग जोड़ि पढ़; आ निष्कर्षकेँ मुक्तिदायी सम्भावनाक प्रश्नसँ अलग नहि करू।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “1930 दशकमे नाजी सत्ता-विस्तार संस्थानक इतिहासकें प्रत्यक्ष रूपें बदलि देलक।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The second problem concerned the limits of Marxist theory. Economic exploitation and class conflict remained important, but relations of production alone did not fully explain the attraction of fascism, the psychological discipline of the family, mass culture, nationalism, antisemitism, consumerism, or the deeper ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 54; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 55 — होर्खाइमर आ अडोर्नो: आधुनिक विवेकक आत्मालोचना

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Horkheimer and Adorno: The Self-Critique of Modern Reason*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

होर्खाइमर आ अडोर्नो क आधुनिक विवेक आलोचना विवेकक समग्र परित्याग नहि, ओकर साधनवादी संकुचनक विरोध अछि। प्रकृति आ मनुष्यकेँ केवल नियन्त्रणयोग्य साधन मानबाक प्रवृत्ति तकनीकी प्रगतिसँग हिंसाक जोखिम जोड़ैत अछि। लेखक ज्ञानक दक्षता आ नैतिक उद्देश्यक भिन्नता पर बल दैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सभ वैज्ञानिक वा प्रशासनिक नियोजनकेँ दमनक एकहि रूप मानब इतिहासगत अतिरेक अछि। प्रलयकारी हिंसाक विश्लेषणक लेल विशिष्ट राजनीति, संस्थागत प्रचार आ जिम्मेवार व्यक्तिक साक्ष्य जरूरी अछि; अमूर्त “विवेक”केँ एकल अपराधी बना देब पर्याप्त नहि। कला आ आलोचनाक भूमिका पर सेहो सफल प्रतिकारक ठोस मानदण्ड चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

बीसम शताब्दीक आरम्भिक ऐतिहासिक रूपान्तरणक अध्याय २ एतय नैतिक संकटमे फेर उपस्थित होइत अछि। संवादात्मक विवेकक अगिला विकास एहि निराशावादी प्रवृत्तिकेँ आंशिक चुनौती दैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे होर्खाइमर आ अडोर्नो आधुनिक विवेककेँ नकारैत नहि, ओकर संकुचित रूपक आलोचना करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “सातम तर्क—(antisemitism) क विश्लेषणमे (irrational hatred) केँ सामाजिक संरचना, (projection), (authoritarian personality) आ प्रचारसँ जोड़ल गेल।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The second problem concerns the broad use of the word ‘Enlightenment’. Horkheimer and Adorno do not treat it merely as an eighteenth-century European movement; they extend the term to the much older tendency to use knowledge to classify the unknown and make it predictable and controllable. This breadth strengthens ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 55; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 56 — मार्क्यूजे: उपभोक्ता समाज आ एक-आयामी मनुष्य

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Marcuse: Consumer Society and One-Dimensional Man

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मार्क्यूजेक एक-आयामी मनुष्यक विचार आधुनिक औद्योगिक उपभोगक इच्छा-निर्माणक संस्था रूपमे परीक्षा करैत अछि। समाज विरोधकेँ प्रतिबन्धित करबाक संग कखनो विज्ञापन, मनोरंजन आ बाजारद्वारा अपना भीतर समाहितो करैत अछि। जरूरतक निर्माण आ वास्तविक मानवीय उन्नतिक अन्तर एहि अध्यायक प्रश्न अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

उपभोक्ताक सभ निर्णय झूठ चेतना नहि; कुछ उपभोग वास्तविक सुरक्षा, अवकाश, ज्ञान आ गरिमा बढ़ा सकैत अछि। “सच्ची जरूरत”क निर्णय ककर अधिकारमे होयत? ई प्रश्न आलोचनाकेँ अभिभावकीय नैतिक नियंत्रण बनबाक खतरा सँ बचबैत अछि। भिन्न वर्ग आ भूगोलमे उपभोगक अनुभव समान मानल नहि जाए।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फ्रैंकफर्ट स्कूलक समग्र आलोचना एतय व्यक्तिक जीवनक इच्छा-संरचना धरि पहुँचैत अछि। आधुनिक मंच-आधारित विज्ञापन आ डिजिटल अनुशंसा अध्यायक विचारकेँ नूतन परीक्षण देत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे मार्क्यूजे आधुनिक औद्योगिक समाजकेँ केवल आर्थिक व्यवस्था नहि, इच्छा-निर्माणक व्यवस्था रूपमे पढ़ैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “मार्क्यूजेक अनुसार उन्नत औद्योगिक समाज विरोधकेँ केवल दबबैत नहि; ओ विरोधक किछु तत्त्वकेँ अपन भीतर समाहित सेहो करैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “Marcuse’s problem is not simply ‘buying more goods’. In consumer society, production, advertising, work discipline, entertainment, mass communication, political language, and technological organisation can combine to produce needs that an individual experiences as his or her own, but that are in fact socially formed. ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 56; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 57 — हाबर्मास: संवादात्मक विवेक

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Habermas: Communicative Reason*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

हाबर्मास संवादात्मक विवेकद्वारा आधुनिक तर्ककेँ केवल साधनगत गणनासँ अलग करैत छथि। कथन पर सहमति-असहमतिक सम्भावना, तर्क देबाक उत्तरदायित्व आ आलोचकक भागीदारी आदर्श संवादक केन्द्र अछि। लेखक एहि मानदण्डकेँ लोकतन्त्रक सार्वजनिक निर्णयसँ जोड़ैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

संवादक सिद्धान्त जँ असमान भाषा, संपत्ति, लिंग, जाति आ शिक्षाकेँ अनदेखैत अछि तँ “समान भागीदारी” औपचारिक रहि सकैत अछि। बलप्रयोगक अभाव मात्र पर्याप्त नहि, बोलबाक वास्तविक अवसर आ प्रतिशोधक भय परखबाक आवश्यकता अछि। विवेकपूर्ण निर्णय सदैव सहमतिसँ समाप्त होयत—एहन दावा सभ मतभेदक न्याय नहि करैत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

होर्खाइमर-अडोर्नोकेँ विवेकसंकटक पाछाँ हाबर्मास पुनर्निर्माणक अलग मार्ग प्रस्तुत करैत छथि। शास्त्रार्थक सार्वजनिक आदर्शसँ संवाद एहि क्षेत्रमे होयत, सम्पूर्ण सिद्धान्तगत तादात्म्य नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे हाबर्मास आधुनिक विवेककेँ त्यागैत नहि, ओकर पुनर्गठन करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “तेसर तर्क—भाषा मे ‘(yes/no position)’ केर सम्भावना सत्ता-विरोधी बीज अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The basic problem then becomes this: are all forms of human action governed by the same type of rationality?”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 57; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 58 — सार्वजनिक क्षेत्र आ लोकतन्त्र

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Public Sphere and Democracy*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

लोकतन्त्रकें केवल मतदानक संख्या नहि, सार्वजनिक मतनिर्माण आ सामूहिक इच्छानिर्माणक निरन्तर प्रक्रिया मानल गेल अछि। संस्थागत सञ्चार, स्वतंत्र विचार-विनिमय, अल्पसंख्यक अधिकार आ जवाबदेही दूनू नागरिक स्वतंत्रता आ प्रभावी निर्णयक आधार बनैत अछि। लेखक सार्वजनिक क्षेत्रक वास्तविक प्रवेशशर्त पर प्रश्न उठबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

जनमत बनाबयवला मंच ककर नियन्त्रणमे अछि, पत्रकारिता केना वित्तपोषित अछि आ वंचित आवाज कतय सुनाइत अछि? औपचारिक मताधिकार एहि असमानताकें स्वतः हल नहि करैत। सर्वेक्षणक संख्या मतदाताक वास्तविक प्रबुद्ध संवादक पर्याय सेहो नहि। अपील आ त्रुटि-संशोधनक संस्थागत उपाय बिना लोकतान्त्रिक वैधता कमजोर पड़त।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्रक प्रथम खण्डक आधार एतय संवादात्मक अधिष्ठान प्राप्त करैत अछि। नेटवर्क-सत्ता आ डिजिटल प्रचार पर अन्तिम अध्याय एहिसँ आवश्यक प्रश्न उठाओत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे लोकतन्त्र केवल मतगणनाक व्यवस्था नहि; ई (opinion-formation) आ (will-formation) केर सतत प्रक्रिया अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “चौदहम तर्क—अल्पसंख्यक अधिकार ‘बहुमत-विरोधी अवरोध’ मात्र नहि; ओ भविष्यक (democratic participation) सुरक्षित करैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The problem is not merely whether democracy exists, but how democratic legitimacy is formed. Elections can produce a majority; but if that majority is formed through confusion, fear, money, propaganda, caste pressure, or informational inequality, numbers alone cannot take the place of justified reasons.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 58; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 59 — शास्त्रार्थ, वाद आ संवादात्मक विवेक

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Śāstrārtha, Debate and Communicative Reason*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

न्यायीय वाद आ हाबर्मासक संवादात्मक विवेकमे तर्कक उत्तरदायित्वक समान प्रश्न भेटैत अछि, पर दुनूक लक्ष्य, स्रोत आ सामाजिक संस्था भिन्न अछि। लेखक प्रतिपक्षक न्यायसंगत निरूपण आ असहमतिक सार्वजनिक सम्भावनाकें तुलनाक वैध एकाइ मानैत छथि। एहि तरहें शास्त्रार्थक पद्धति आधुनिक लोकतन्त्र लेल संवादक संसाधन भऽ सकैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

प्राचीन शास्त्रार्थक अनुशासन आधुनिक सार्वभौमिक नागरिक भागीदारीक सीधा समकक्ष नहि; ऐतिहासिक प्रवेशाधिकार जाँचने बिना दावा औचित्यहीन अछि। शास्त्रार्थमे विजयक लक्ष्य आ संवादमे सहमतिक आदर्शक असमानता आलोचनाक मुख्य विषय अछि। अतिरेकसँ दुनूकें “प्राचीन लोकतन्त्र”क एकटा आख्यानमे मिलायब अनुचित।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

तुलनात्मक दर्शनक प्रारम्भिक पाँच भेद एहि अध्यायमे सर्वाधिक फलदायी छथि। लेखकक वैध उपलब्धि समान पद्धतिगत कठिनाई देखब, न गढ़ल ऐतिहासिक प्रभाव।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे न्यायिक ‘वाद’ आ (Habermasian communicative reason) बीच उपयोगी समानता ‘समान सिद्धान्त’क नहि, वरन् (reason-responsive interaction) क अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्ष—ई तुलना अनिवार्य रूपेँ (anachronistic) अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “In an online forum, a ‘steelman before rebuttal’ rule is useful: the responder first writes the opponent’s central claim in a form the opponent would approve, and only then offers criticism. This does not guarantee an end to trolling, but it makes misunderstanding visible.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 59; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 60 — स्त्रीवादी दर्शनक अनेक स्वर

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Many Voices of Feminist Philosophy*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

स्त्रीवादी दर्शन दर्शनक विषय-सूचीमे केवल “स्त्री” जोड़ैत नहि; ज्ञाता, संस्थान, पाठ्यक्रम, प्रमाण, न्याय आ शरीरक अधिकारक पुनर्परीक्षण करैत अछि। विविध स्त्रीवादी धाराक मतभेद स्वीकार करब महत्वपूर्ण, किएक तँ एक जनसमूहक अनुभूति एकटा दार्शनिक आवाज नहि बनैत। लेखक ज्ञान-उत्पादनक असमान पहुँचपर बल दैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

व्यक्तिगत अनुभव महत्वपूर्ण स्रोत होइतहुँ सामान्य सामाजिक नियमक पर्याप्त सांख्यिकीय प्रमाण नहि। लिंग, जाति, वर्ग आ क्षेत्रक पारस्परिक संबंध मानबासँ विमर्शक विशिष्ट तुलना आवश्यक बनैत अछि। स्त्रीवादक नामपर समाजक भीतरक अन्य असमान समूहक विचार दबि जाए तँ आलोचना अपन उद्देश्यसँ भटक सकैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

हाबर्मासक समान संवादक शर्त एतय सामाजिक असमानताक कसौटी पर अबैत अछि। अगिला अध्यायसभ अनुभव, लिंग-निर्मिति आ अन्तर्संबद्ध असमानताकें अलग-अलग विश्लेषित करत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे (feminist philosophy) केवल ‘स्त्री सम्बन्धी दर्शन’ नहि; ई दर्शनक विषय, पद्धति, (canon), (institution) आ दार्शनिक (subject)—सभकें पुनः जाँचबाक आलोचनात्मक परियोजना अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणश : “अठारहम तर्क—(violence) केवल (individual crime) नहि; (fear mobility), (education), (work), (speech) आ (public participation) सीमित करैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The second problem concerns the relation between sex and gender. Biological difference, social role, symbolic meaning, legal classification, self-identification and embodied experience create confusion when they are placed on a single level. Feminist philosophy has itself sustained a long dispute over the meanings of ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 60; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 61 — सिमोन द बोउवार: स्त्री बनाओल जाइत अछि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Simone de Beauvoir: Woman Is Made*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

सिमोन द बोउवारक विचारमे स्त्रीत्व जैविक तथ्यक नकार नहि, सामाजिक-ऐतिहासिक अर्थनिर्माणक परीक्षणक विषय अछि। “स्त्री बनाओल जाइत अछि” कथन स्त्रीजीवनक शिक्षा, भूमिका, श्रम आ स्वतंत्रताक व्यवस्था पर प्रश्न उठबैत अछि। लेखक देहक वस्तुगत स्थिति आ देहकें जीवाक सामाजिक परिस्थिति बीच भेद राखैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

यदि सामाजिक निर्मिति पर अत्यधिक बल देल जाए तँ देहक विशिष्ट अवस्था वा व्यक्तिगत भिन्न अनुभवक अवमूल्यन होयत। ओहि उलट जैविक तथ्यसँ सामाजिक अधिकारक नियति निकालब असंगत अछि। स्त्रीक विकल्पक वास्तविक परास आर्थिक निर्भरता, हिंसा, शिक्षा आ सार्वजनिक भागीदारी सँ बदलैत अछि; “चयन” शब्दक वास्तविकता एहि ठाम परीक्षणीय अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

आधुनिक अस्तित्ववादक स्वतंत्रता स्त्रीवादी सामाजिक आलोचनामे परिवर्तित होइत अछि। प्रथम खण्डक गरिमा-आधारित नैतिकता एतय लैंगिक सत्ता-विषमता सँ भिडैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे बोउवारक (feminist) दर्शनक केन्द्र ‘स्त्रीक सार’ खोजब नहि, वरन् ई देखब अछि जे स्त्रीत्व सामाजिक-ऐतिहासिक परिस्थिति भीतर कोना बनैत, जीयल जाइत आ बदलल जा सकैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “दसम तर्क—(sexual double standard) स्त्रीकेँ (simultaneously desirable) आ (respectable) रहबाक विरोधी माँग दैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The third problem is the relation between freedom and situation. Beauvoir’s person is not an absolute, disembodied free being outside society. Human beings are free, but this freedom is exercised amid circumstances, the body, history, economic resources and the conduct of others. Oppression is therefore not merely an ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 61; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 62 — देह, अनुभव आ सत्ता

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Body, Experience and Power*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

देह मनुष्यक पास रहल साधारण वस्तु नहि, जगतमे रहबाक अनुभवगत आधार अछि। स्त्रीवादी प्रघटनावाद शरीरक जीयल अवस्था केँ फूकोक संस्थागत नियमनसँ संयुक्त रूपमे जाँचैत अछि। दर्द, श्रम, वस्त्र, भय, सार्वजनिक स्थान आ चिकित्सा एक साथ देहक जटिल अनुभव निर्मित करैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

निजी अनुभूतिकेँ सर्वसामान्य तथ्य बनायब उचित नहि, मुदा जैव-चिकित्सकीय मापनक नामपर अनुभवक आवाज नकारबो अनुचित। अस्पतालक सामान्य मानक आ व्यक्तिक विशिष्ट देहगत अवस्था बीच संवादक नीति आवश्यक अछि। शरीरक सामाजिक व्याख्या जैविक प्रक्रिया स्वतः बना दैत अछि—एहन निष्कर्ष लेखकक बहुस्तरीय यथार्थवादसँ असंगत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूकोक अनुशासन-शरीर विषयक अध्याय ४० एतय नूतन स्त्रीवादी दृष्टि पबैत अछि। आन्तरिक अनुभव आ सार्वजनिक सत्ता बीच विरोध मात्र नहि, परस्पर आलोचनाक नूतन क्षेत्र खुलैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे देह मनुष्यक ‘पास रहल वस्तु’ नहि, वरन् दुनिया मे होयबाक तरीका अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “(feminist phenomenology) आ (Foucauldian analysis) विरोधी होयबाक जरूरत नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The third problem is that the body is simultaneously subject and object. Through the body we see, move, touch and desire; yet we also encounter our own bodies as objects in a mirror, a camera, a medical scan, another person’s gaze, a dress code or a biometric database. Power enters into this double experience.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 62; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 63 — जूडिथ बटलर: लिंग (gender), प्रदर्शनात्मकता (performativity) आ पहचान

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Judith Butler: Gender,
Performativity and Identity

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

जूडिथ बटलरक प्रदर्शनात्मकताक विचार लिंगकेँ पहिनेसँ पूर्णतः बनल भीतरी सारक प्रस्तुति नहि, नियमक पुनरावृत्ति आ सामाजिक मान्यताक प्रक्रिया मानैत अछि। “प्रदर्शन” शब्दकेँ साधारण अभिनय कहि छोड़लासँ मूल अवधारणा बिगड़ि जाइत अछि। पहिचान प्रतिदिनक व्यवहार, अधिकार आ दण्डद्वारा स्थिर देखाइत अछि, मुदा पुनरावृत्तिमे परिवर्तनक सम्भावना रहैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

यदि व्यक्ति पूर्ण सामाजिक नियमक निर्माण अछि, तखन असहमति आ परिवर्तनक स्रोत केना बनत? लेखक बाहरी शुद्ध स्वतन्त्र आत्मक कल्पनासँ बचैत नियमक भीतरक विचलन देखैत छथि। तथापि अधिकारक प्रश्नमे वास्तविक कानून, हिंसा, सेवा आ सामाजिक सुरक्षा केना बदलैत अछि, तकर परीक्षण आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

बोउवारक ऐतिहासिक स्त्रीत्व-विवेचन आ देह-अनुभवक अगिला विस्तार बटलरक नियम-निर्मिति सँ संवाद करैत अछि। एहि अवधारणाकेँ एकै भाषा वा समुदायक अनुभवपर सामान्यीकृत करब अनुचित अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्शः : “बटलरक प्रथम मूल प्रतिपादन ई जे (gender) कोनो भीतरी सारक बाहरी अभिव्यक्ति नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्शः : “(Agency)क स्रोत “सत्ता-बाह्य शुद्ध स्व” खोजब नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “In the conventional sex/gender distinction, sex was often treated as biological foundation and gender as social role. Butler destabilises this distinction: if gender is socially constituted, on what basis can sex be treated as a pure, pre-linguistic fact outside sociality?”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 63; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 64 — अन्तर्संबद्ध असमानता (intersectionality): जाति, वर्ग, लिंग, धर्म आ क्षेत्र

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Intersectional Inequality: Caste, Class, Gender, Religion and Region

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

अन्तर्संबद्ध असमानताक पद्धति देखबैत अछि जे जाति, वर्ग, लिंग, धर्म आ क्षेत्रक अलग-अलग सूची संयुक्त हानि-वितरण नहि पकड़ि सकैत। कोनो व्यक्तिक अधिकार-स्थिति एक श्रेणीक मात्र फल नहि; कानूनी सुरक्षा, सार्वजनिक आवाज आ संस्थागत व्यवहार अनेक कारकक सम्बन्धमे बदलैत अछि। एहि कारण एकर लक्ष्य प्रतिनिधित्वक सटीकता अछि, केवल अधिक श्रेणी जोड़ब नहि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

प्रत्येक नूतन अन्तरवर्गकें अलग पहचान मानलासँ विश्लेषणक अनन्त विस्तार हो सकैत अछि। न्यायसंगत नीति लेल परिभाषित समूह, पर्याप्त प्रमाण, गोपनीयता आ व्यक्तिगत गरिमाक संतुलन चाही। सर्वमान्य अधिकार आ विशिष्ट सुधारात्मक कार्यक्रम अनिवार्य विरोधी नहि—एहि बातक व्यवहारिक मानक आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

स्त्रीवादी अध्यायसभक अन्दर ई अवधारणा जाति-आधारित अनुभवकें गम्भीर स्थान दैत अछि। मिथिलाक क्षेत्रीय इतिहास आ सामाजिक असमानताक समीक्षा मे ई विधि विशेष महत्त्व रखैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “(Intersectionality) एहि अदृश्यताक विरोध करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “पन्द्रहम प्रतिपादन—(policy universalism) आ (targeted justice) विरोधी नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “Intersectionality resists this invisibility. Its question is: what framework can capture the experience of a person affected simultaneously by several structures when no single category expresses that person’s entire situation?”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 64; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 65 — भारतीय स्त्रीवादी दर्शनक प्रश्न

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Questions of Indian Feminist Philosophy

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भारतीय स्त्रीवादी दर्शनक प्रश्न “भारतक स्त्री” नामक एकटामात्र अनुभव बनौनाइ नहि, इतिहास, धर्म, जाति, श्रम, औपनिवेशिक संस्था आ कानूनक परस्पर सम्बन्ध जाँचब अछि। सार्वभौमिक गरिमाक मानक स्थानीय अन्यायकें अनदेखि नहि सकैत, आ विशिष्ट सांस्कृतिक अनुभवक नामपर सर्वसामान्य अधिकार स्थगितो नहि कएल जा सकैत।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

प्रतिनिधित्वक प्रश्न एतय निर्णायक अछि: शैक्षिक प्रकाशन, सामाजिक आन्दोलन आ राज्यक दस्तावेज ककर आवाज लेल भाषिक मार्ग खोलैत छथि? उच्चवर्गीय अनुभव कें सर्वमान्य बनौलासँ बहुस्तरीय इतिहास धुँधला पड़त। परम्पराक भीतरक प्रतिरोध आ परम्परागत असमानता दुनूक मूल साक्ष्य देखब आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अन्तर्संबद्ध असमानता एतय भारतीय इतिहासक विशिष्ट प्रश्न पबैत अछि। अगिला मिथिलाक स्त्री-दृष्टि एहि पद्धतिक क्षेत्रीय परीक्षा होयत, स्थानीय अस्मिताक पक्षपाती अपवाद नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “तेसर समस्या प्रतिनिधित्वक अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “पन्द्रहम प्रतिपादन—भारतीय स्त्रीवादी दर्शन सार्वभौमिक अधिकार आ (contextual difference) कें विरोधी नहि मानए।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The third problem concerns representation. Whose voice is to count as the voice of “women”?”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 65; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 66 – मिथिलाक समानान्तर स्त्री-दृष्टि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Mithila's Parallel Feminist Perspective

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मिथिलाक समानान्तर स्त्री-दृष्टि ककर लेखन, मौखिक इतिहास, श्रम, गीत, घरेलू अनुभव आ सार्वजनिक आन्दोलन अभिलेखमे जगह पबैत अछि, तकर प्रश्न उठबैत अछि। क्षेत्रीय संस्कृति एकर प्राथमिक शोधभूमि अछि, न नैतिक अपवादक अधिकार। लेखकक आग्रह जँ प्रमाण आ प्रतिपक्ष सहित पढ़ल जाए तँ क्षेत्रीय इतिहास स्त्रीविहीन शास्त्रीय वंशावलीक पुनरुत्पादनसँ बचि सकैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

लोकगीत अथवा परम्परागत पात्रक प्रतिनिधित्वक आधारपर सम्पूर्ण सामाजिक वास्तविकता सिद्ध नहि होइत। स्रोतक वर्ग, काल, भाषिक परिवर्तन आ लिखित-मौखिक अन्तर बिना “मिथिलाक स्त्री”क स्थिर प्रतिमा बनबाक खतरा अछि। सामाजिक सुधारक लेखाजोखा मे महिला स्वयं कथक आ निर्णायक कतेक छलथि, तकर जाँच आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

लैंगिक विमर्शक एहि समेकनमे समानान्तर इतिहास-दृष्टिक पद्धति लागू होइत अछि। स्थानीय इतिहास सार्वभौमिक गरिमासँ बाहरक क्षेत्र नहि, ओहि मानकक विशेष कठिन परीक्षा अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “तेसर समस्या स्रोतक अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “पहिल उत्तर—(regional feminism universal right)क विरोधी तखन होएत जखन (locality) कँ नैतिक (exception) बना देल जाए।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The third problem concerns sources. State documents, Panji records, genealogies, land records, legal papers and writings by men are more often preserved, whereas women’s experience may remain dispersed across folk songs, wedding songs, sohar, samdaun, letters, memoirs, oral history, household objects, memories of ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 66; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 67 — औपनिवेशिक ज्ञान की करैत अछि?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *What Does Colonial Knowledge Do?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

औपनिवेशिक ज्ञानक सत्ता वर्गीकरण, सर्वेक्षण, जनगणना, मानचित्र, विद्यालय आ कानूनद्वारा समाजकें प्रशासकीय रूपमे दृश्य बनबैत अछि। ई दृश्यता केवल मिथ्याकरण नहि; किछु स्थितिमे सार्वजनिक स्वास्थ्य आ पहुँचक वस्तुगत साधन सेहो बनि सकैत अछि। लेखक “औपनिवेशिक शासन सभ किछु बनौलक” दावीक अतिरेक रोकेत स्थानीय पूर्ववर्ती श्रेणीसँ ओकर सम्बन्ध जाँचेत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

शासकीय अभिलेखक पक्षधरता मानलापर दस्तावेजक प्रत्येक संख्या असत्य बनि नहि जाइत। परिभाषा, गिनती, दर्ज कएल अपवाद, उद्देश्य आ चुप्पी अलग परखी जाए। ओहि समयक समाजक अंदरक जाति, पितृसत्ता वा आर्थिक असमानता केँ मात्र औपनिवेशिक शासकक नामपर टारब ऐतिहासिक दायित्वक स्थानान्तरण होयत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूकोक वर्गीकरणक सत्ता-विवेचन आ भारतीय आधुनिक इतिहासक औपनिवेशिक संस्था एतय संवाद करैत अछि। क्षेत्रीय इतिहासक स्रोत-परीक्षाक लेल ई अध्याय आधार बनैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “तेसर समस्या “औपनिवेशिक ज्ञान सभ किछु बनौलक” कथन अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “दोसर प्रतिपादन—(legibility) स्वयं सत्यक विरोधी नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The third problem is the claim that “colonial knowledge created everything”. Caste, religious distinctions, lineage, local hierarchies, linguistic diversity and land relations existed before the colonial state. Colonial influence often took the form not of creation ex nihilo but of reclassification, standardisation, ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 67; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 68 — एडवर्ड सईद: प्राच्यवाद (Orientalism)

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Edward Said: Orientalism

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

सईदक प्राच्यवादक आलोचना व्यक्तिगत पश्चिमी पूर्वाग्रह गनबामे सीमित नहि; अध्ययन-संस्था, साहित्यिक छवि, भूगोल आ साम्राज्यक अधिकारक दीर्घ सम्बन्ध खोलैत अछि। “पूर्व” विषयक कथन ककर अधिकारसँ सामान्य ज्ञान बनैत अछि, ई प्रश्न लेखकक मुख्य केंद्र अछि। ताहि संग वास्तविक एशियाई समाजक विभिन्न आवाजकें एक अन्य “एकरूप पूर्व”मे मिलायब निवारणीय अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सईदक आलोचना पढ़ैत पश्चिमी परम्परासभक आन्तरिक मतभेद आ स्थानीय विद्वानक सक्रिय सहयोग छिपि सकैत अछि। अध्ययन-संस्था कखनो सटीक भाषावैज्ञानिक खोज सेहो प्रस्तुत करैत अछि; ओकर परीक्षण स्रोत अनुसार होयत। प्रभावक ठोस अभिलेख बिना प्रत्येक व्याख्या तत्कालीन शासनक सोझे उपकरण घोषित नहि हो।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

उत्तर-औपनिवेशिक विभागक पहिल प्रतिमान समानान्तर दर्शनकें सत्ता-ज्ञानक व्यावहारिक कसौटी दैत अछि। स्पिवाकक प्रतिनिधित्वक प्रश्न एहि आलोचनाक हाशिये पर फेर प्रश्न उठाओत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे (Orientalism) कोनो व्यक्तिगत पूर्वाग्रहक सूची मात्र नहि, वरन् एहन दीर्घकालीन ज्ञान-व्यवस्था अछि जाहिमे (geographical distinction), (scholarly authority), (cultural imagination) आ (political power) एक-दोसराकें मजबूत करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्ष: (Said) “(West)” केँ स्वयं एकरूप बना दैत अछि, जखन ब्रिटिश, फ्रांसीसी, जर्मन, अमेरिकी आ अन्य (scholarly traditions) ऐतिहासिक रूपेँ भिन्न छल।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The second problem is that Orientalism is used at three distinct levels—an academic discipline that studies the East, a style of thought that assumes a fundamental distinction between East and West, and an institutional discourse that speaks authoritatively about the “East” and thereby acquires the capacity to ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 68; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 69 — गायत्री स्पिवाक: अधीनस्थ बोलि सकैत अछि?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Gayatri Spivak: Can the Subaltern Speak?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

स्पिवाकक “अधीनस्थ बोलि सकैत अछि?” प्रश्न जैविक वाणी-क्षमता नहि, प्रतिनिधित्वक संस्था आ आवाज सुनबाक राजनीतिक शर्तक प्रश्न अछि। हाशियापर रहल अनुभव केना अभिलेख बनैत, के अनुवाद करैत आ ककर नामपर सार्वजनिक निष्कर्ष निकैलैत—ई परतसभ लेखकक विश्लेषणमे उपस्थित अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अधीनस्थक आवाज सुनबाक कठिनाई ओकर सदा मौन होएबाक अन्तिम घोषणा नहि। प्रत्यक्ष गवाहीक शक्ति, सामाजिक मध्यस्थता आ अनुवादक सीमाकेँ अलग राखनाइ जरूरी अछि। औपनिवेशिक सुधारक आलोचना करत कोई ऐतिहासिक हिंसाकेँ सही ठहराओल जाए—ई दार्शनिक अतिरेक रोकबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

सईदक प्रतिनिधित्व-व्यवस्थाक आलोचना एतय आवाजक दार्शनिक संकट बनैत अछि। मिथिलाक मौखिक स्मृति आ जाति-लिंग वंचनाक अध्ययन लेल एहि पाठक सन्दर्भ महत्वपूर्ण अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे (subaltern speech)क समस्या (vocal capacity)क नहि, वरन् (representation) आ (reception)क संरचनाक अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “आठम तर्क ई नहि जे (sati-)विरोध (colonial) छला कारण स्वतः गलत छल।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The third problem concerns the difference between speech and audibility. A person may produce sound, resist, write letters or narrate an autobiography; yet if a dominant interpretive code rewrites that utterance as crime, madness, tradition, ignorance, a family matter or “authentic culture,” the sign of agency may ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 69; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 70 – होमी भाभा: संकरता आ औपनिवेशिक अन्तराल

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Homi Bhabha: Hybridity and the Colonial Interstice

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

होमी भाभाक संकरता आ औपनिवेशिक अन्तराल सत्ता-संबंधकें शासक बनाम शासितक एक स्थिर द्वैत नहि मानैत। अनुकरणमे पुनरावृत्ति आ भिन्नता एक साथ रहैत अछि; उपनिवेशी अधिकार जकरा स्थिर मानब चाहैत अछि ओ सांस्कृतिक पहचान स्वयं परिवर्तनीय अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

संकरताकें सभ असमान स्थिति लेल उत्सवक शब्द बना देलासँ बलप्रयोगक ठोस इतिहास धुँधला पड़त। प्रत्येक सांस्कृतिक मिश्रण समान स्वेच्छासँ नहि होइत; भाषा, कानून, शिक्षा आ संपत्तिक भिन्न अधिकार ओकर परिणाम बदलैत अछि। “शुद्ध परम्परा”क आलोचना परम्परागत समुदायक वास्तविक राजनीतिक हितक नकार नहि बनबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

स्विवाकक आवाजक कठिनाई एतय अर्थ-निर्माणक अन्तरालक रूपमे आगाँ बढैत अछि। क्षेत्रीय संस्कृति कें भीतरे सँ अपरिवर्तित एकक मानब लेखकक बहुलवादी दृष्टिक प्रतिकूल अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे (colonial authority) पूर्णतः एकरूप आ आत्मविश्वासी नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणश : “सतरहम तर्क: “(pure tradition)”क आलोचना स्वयं (tradition-)विरोध नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The second problem concerns the stereotype. A stereotype is not merely a false belief; it is a form of representation that presents its claim as fixed truth and yet must be repeated again and again. If the colonised were truly fixed, knowable, homogeneous and unchanging, the continual reiteration of their alleged ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 70; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 71 — अधीनस्थ अध्ययन (Subaltern Studies) आ इतिहासक हाशिया

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Subaltern Studies and the Margins of History*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

अधीनस्थ अध्ययन इतिहासक नायकक सूचीमे अधिक नाम जोड़बासँ आगाँ बढ़ि कारण-दर्शनक व्याकरण बदलबाक प्रयास अछि। किसान, श्रमिक, स्त्री आ उपेक्षित समुदायक कृत्यकेँ केवल अभिजात राजनीतिक निर्णयक प्रतिक्रिया नहि मानबाक आग्रह एतय केन्द्रीय अछि। स्थानीय अभिलेख आ मौखिक इतिहासक तर्कदशा महत्वपूर्ण बनैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अधीनस्थक स्वतन्त्र क्षेत्र स्वीकार करैत सामाजिक सम्बन्धक परस्पर निर्भरता नकारल जाए तँ इतिहास कृत्रिम भागमे बाँटि सकैत अछि। आन्दोलनक वास्तविक संस्थागत कारण, नेतृत्वक असमानता आ अभिलेखक बहुल स्रोत एक संग परखबाक आवश्यकता अछि। “हाशिया” शब्द स्वयं नैतिक निर्दोषता प्रदान नहि करैत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

सईदक ज्ञानव्यवस्था, स्पिवाकक प्रतिनिधित्व आ भाभाक संकरता एतय इतिहास-लेखनक विधिक प्रश्नमे मिलैत अछि, मुदा तीनूकेँ एकल प्रतिमान नहि मानल जाए।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे इतिहासक लोकतन्त्रीकरण केवल अधिक नाम जोड़लासँ नहि होइत; (causal grammar) बदलल आवश्यक होइत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणान्श : “पूर्वपक्ष 1: “(autonomous domain)” (social reality)क अत्यधिक विभाजन करैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “Agency lies at the centre of this critique. The term “subaltern” draws inspiration from Gramsci, but in South Asian historiography it came to be used for several forms of social subordination. If “subaltern” is turned into a loose residual category meaning simply “whoever is not elite,” the analysis becomes weak.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 71; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 72 — उत्तर-औपनिवेशिकतासँ औपनिवेशिकता-मुक्त (decolonial) विचार धरि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *From Postcoloniality to Decolonial Thought*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

औपनिवेशिकताक राजनीतिक समाप्ति आ ज्ञान, भाषा, अर्थनीति तथा मूल्यांकनक औपनिवेशिक संरचनाक स्थायित्व बीच अन्तर करब एही अध्यायक उपयोगी प्रतिज्ञा अछि। उपनिवेशोत्तर राज्य स्वतन्त्र भेला परो अधिकार-वितरणक पुरान प्रारूप बचि सकैत अछि। उपनिवेशी अनुभवक अध्ययन एही कारण इतिहासक औपचारिक तिथि सँ आगू सामाजिक सम्बन्धमे प्रवेश करैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

“औपनिवेशिकता” जँ सभ वर्तमान असमानताक एकमात्र कारण बनि जाए तँ स्वतंत्र राज्यक वर्तमान निर्णय आ घरेलू प्रभुत्वक जिम्मेवारी ओझार होयत। स्थानीय इतिहासक हर वर्गक अगिला संकट ओकर प्रमाणित कारण माँगैत अछि। औपनिवेशिक सम्बन्धक वैश्विक तुलना करत विरोधी अपवाद आ भिन्न कालसीमा दर्ज रहबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

एहि प्रश्नक बाद भारतीय दर्शनक औपनिवेशिक वर्गीकरण आ मिथिलाक क्षेत्रीय इतिहास विशेष परीक्षणयोग्य होइत अछि। ज्ञानक स्वतंत्रता बिना पूर्ववर्ती स्थानीय असमानता जाँचने अधूरी रहत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे (coloniality)क विचार औपचारिक साम्राज्य समाप्ति आ (domination) समाप्ति बीचक अन्तर देखाबय लेल उपयोगी अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “दसम तर्क (coloniality of being)क अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “Aníbal Quijano’s concept of the “coloniality of power” reads the modern world-system as a combined structure of race-organised social classification, labour control and Eurocentric knowledge. From this perspective, “modernity” is not merely a narrative of emancipation, science or progress; its formation cannot be ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 72; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 73 — भारतीय दर्शनक औपनिवेशिक वर्गीकरण

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Colonial Classification of Indian Philosophy

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

औपनिवेशिक कालमे भारतीय दर्शनक शैक्षिक, ग्रन्थ-संपादनात्मक आ प्रशासकीय वर्गीकरण बदलल, मुदा पुरान सम्प्रदायसभक आन्तरिक अन्तर पूरासँ समाप्त नहि भेल। लेखक देखबैत छथि जे “छओ दर्शन”, “धर्म” वा “भारतीय दर्शन”क परिचित श्रेणीसँ ज्ञान-सुविधा होइतहुँ ऐतिहासिक बहुलता दबी सकैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

वर्गीकरणक उपयोगिता आ ओकर ऐतिहासिक तटस्थता समान बात नहि। वर्तमान विश्वविद्यालयी अनुक्रमणिकाक सुविधा देखलासँ पुरान साहित्यक स्वतंत्र वर्गविभाजन प्रमाणित नहि होइत। यदि किछु पद स्थानीय विद्वाने सँ सहनिर्मित भेल, तँ औपनिवेशिक राज्यकेँ एकल कर्ता मानल जाए तँ इतिहास अपूर्ण रहत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

भारतीय ज्ञानपरम्पराक स्रोत-समीक्षाक ई परीक्षा पहिल खण्डक न्याय-मीमांसाक इतिहाससँ जुड़ैत अछि। मिथिलाक विशेष कालक्रम अपन दस्तावेजक आधारपर रखब आवश्यक अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणानि : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे औपनिवेशिक शासन भारतीय दर्शनक पूर्ववर्ती भेदसभकेँ समाप्त नहि कएलक; ओ अपन (philological), (educational), (religious) आ (administrative) जरूरत अनुसार किछु भेदकेँ (amplify),

(standardize) आ (globalize) कएलक, किछु केँ (subordinate) कएलक, आ किछु नूतन (composite categories) बनौलक।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणश : “पहिल पूर्वपक्ष: (colonial classification)क आलोचना अनावश्यक अछि; आखिर “(six systems),” “(Hinduism),” “(Indian philosophy)” जकाँ (labels) आज उपयोगी आ (widely accepted) छथि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The second caution is that precolonial classification and colonial classification are not the same thing. In the colonial age, printing, census, university curricula, Orientalist philology, missionary polemic, museums and archives, translation, comparative religion, comparative philology, and the European ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 73; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 74 — मिथिला: साम्राज्य, राष्ट्र आ क्षेत्रक बीच

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Mithila: Between Empire, Nation and Region*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मिथिलाकें स्थिर प्राकृतिक सीमाक चिरकालीन राष्ट्र नहि, भाषा, स्मृति, परिवार, व्यापार, शिक्षा, नदी आ राजनीतिक दावीक परिवर्तनीय सम्बन्धात्मक क्षेत्र मानल गेल अछि। एहि अवधारणासँ ऐतिहासिक भूगोल आ वर्तमान सामाजिक अस्मिता बीच कालभेद सुरक्षित रहैत अछि। समानान्तर इतिहासक अर्थ मिथिलाक परम्परा कें एक अधिकारपूर्ण सीमारेखामे बन्द करब नहि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

पुरान ग्रन्थक स्थान-नाम आ आधुनिक जिलाक प्रशासनिक सीमा समान नहि; नदीक मार्ग, प्रवास आ राजनीतिक अधिकार बदलैत रहल। क्षेत्रीय समुदायक आन्तरिक जाति, भाषा आ लिंग-विषमता “मिथिला”क एकवचन आवाजसँ ढँक सकैत अछि। स्रोतक तिथि, नक्सा आ स्थानीय उच्चारण बिना वर्तमान दावा प्राचीन तथ्य नहि बनत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

उत्तर-औपनिवेशिक समूहक क्षेत्रीय समेकन पहिल खण्डक विदेह-मिथिला चर्चा संग जोडल जाइत अछि। अगिला मन-दर्शन विभाग क्षेत्रीय इतिहाससँ अलग प्रमाण-प्रकारक परीक्षा खोलैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन अछि: मिथिला एक “(relational region)” अछि—जकर ऐतिहासिक अस्तित्व (language), (memory), (knowledge networks), (kinship), (markets), (ecology), (institutions) आ (political claims)क

बदलैत सम्बन्धमे बनैत रहल; ओकरा एक स्थिर (timeless polygon) वा एक मात्र समुदायमे कैद नहि कएल जा सकैत।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणश : “पहिल पूर्वपक्ष कहत: “मिथिला प्राचीन कालसँ निश्चित प्राकृतिक सीमा बला राष्ट्र अछि; आजुक सीमा मात्र राजनीतिक दुर्घटना।” आपत्ति ई जे (ancient textual geography)क (symbolic authority) हो सकैत अछि, मुदा (modern cadastral precision) ओकरा सँ स्वतः नहि निकलैत।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “It would be a methodological error to project historical Mithila directly onto the present administrative map of Bihar or Nepal. In different periods, political jurisdictions, revenue districts, linguistic spread, pilgrimage networks, scholarly circuits and marriage spheres did not fully coincide with one another.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 74; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 75 — मन-दर्शन (Philosophy of Mind) केर नूतन प्रश्न

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *New Questions in Philosophy of Mind*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मन-दर्शनकेँ “मन कोन पदार्थ?”क एकटा प्रश्नमे सीमित नहि कएल जा सकैत। अनुभव, तन्त्रिका-प्रक्रिया, कार्य, देह, पर्यावरण आ सामाजिक मानक भिन्न व्याख्यात्मक स्तर पर काम करैत अछि। लेखक ई बहुस्तरीयता केँ मतसभक एक सांत्वनात्मक मिश्रण नहि, प्रत्येक दावीक भिन्न परीक्षणक आवश्यकता मानैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

न्यूरोसाइंसक प्रगति मानलापर चेतनाक दार्शनिक समस्या स्वतः समाप्त नहि मानल जा सकैत। एहि विपरीत प्रथमपुरुष अनुभवक उपस्थिति तन्त्रिका-अध्ययनकेँ असंगत नहि बनबैत। प्रमाणक श्रेणी बदलैत प्रश्नक परिभाषा बदलैत अछि; व्यावहारिक उपचारक सफलता मनक पूर्ण तत्त्वमीमांसा सिद्ध नहि करैत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

प्रथम खण्डक आत्मा आ अनात्माक प्रश्न एतय समकालीन विज्ञानसँ संवादक पथ पबैत अछि। मन-देहक द्वैत अगिला अध्यायमे विशेष स्पष्ट होयत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन अछि: मनक नूतन दर्शनकेँ “एक पदार्थ की?” प्रश्न सँ आगे बढ़ि बहुस्तरीय (explanatory framework) बनब आवश्यक—(phenomenal), (functional), (neural), (bodily), (environmental), (social) आ (normative) स्तरक दाबी अलग-अलग कसौटी पर जाँचल जाए।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्ष 1: (neuroscience) पर्याप्त तेजी सँ प्रगति करि रहल अछि; (Philosophy of Mind)क अलग भूमिका धीरे-धीरे समाप्त होएत।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The first source of the new questions is neuroscience. Correlations between neural activity and mental states are increasing, but correlation, mechanism, constitution, cause and explanation are not the same thing. The ability to display a brain scan does not by itself determine the philosophical meaning of experience.”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 75; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 76 — मन-देह समस्या

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : The Mind-Body Problem

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मन-देह समस्या अनुभवक आत्मीयता आ शरीरक परिमाणात्मक भौतिक प्रक्रिया बीच सम्बन्धक प्रश्न अछि। द्वैतवाद, भौतिकवाद आ कार्यात्मक व्याख्याक भिन्न रूप तर्कगत कठिनाईकें बदलैत छथि; एक-दोसरक साधारण पर्याय नहि। लेखक तन्त्रिका-विज्ञानक कार्यकारण साक्ष्य कें गम्भीरता सँ स्वीकारैत, ओकरा अनुभवक सम्पूर्ण तत्त्वमीमांसा नहि मानैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

“मस्तिष्क सक्रिय अछि, अतः अनुभूतिक अन्तिम उत्तर भेटल” एक अधूर अनुमान भऽ सकैत अछि। ओहि उलट चेतनाक निजीपना के आधार बनाकऽ भौतिक कार्यकारणक प्रमाण नकारब अनुचित। द्वैतवादी अन्तःक्रियाक कारण प्रश्न आ भौतिकवादी अनुभव-व्याख्याक समस्या अलग प्रमाणभार रखैत छथि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

प्रथम खण्डक सांख्य-आत्मा बहसक तुलना एतय सम्भव अछि, मुदा पुरुष-प्रकृति भेद आधुनिक मानसिक अवस्था-मस्तिष्कक समस्याक ऐतिहासिक पर्याय नहि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “मुदा जतेक तेज (distinction), ततेक कठिन (interaction)।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्ष 1: “(neuroscience) साबित कए देलक जे (mind brain) मात्र अछि; दार्शनिक समस्या समाप्त।” उत्तरक पहिने ई मानब उचित जे (neuroscience dualist intuition)पर भारी (empirical) दबाव दैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “But the sharper the distinction, the harder the interaction becomes. If mind is spatially unextended and body extended, how does a wish raise a hand?”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 76; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 77 — व्यवहारवाद, तादात्म्य सिद्धान्त (identity theory) आ कार्यात्मकतावाद (functionalism)

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Behaviourism, Identity Theory and Functionalism

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

व्यवहारवाद, तादात्म्य सिद्धान्त आ कार्यात्मकतावाद मनक विवरण लेल तीन भिन्न परीक्षण-पद्धति प्रस्तुत करैत अछि। व्यवहारवाद प्रत्यक्ष आचरणक मानक चाहैत अछि, तादात्म्य सिद्धान्त मानसिक अवस्थाकें मस्तिष्क-स्थितिसँ जोड़ैत अछि, कार्यात्मकतावाद अवस्थाक भूमिका-सम्बन्ध पर बल दैत अछि। एहि मतसभक अन्तरकें वैज्ञानिक बनाम अवैज्ञानिकक एक सरल क्रम मानल नहि जाए।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अदृश्य मानसिक अवस्था वैज्ञानिक पद्धतिसँ निषिद्ध नहि, जँ ओकर अनुमानक परीक्षण सम्भव अछि। व्यवहारगत समानता अनुभवगत समानता सिद्ध नहि करैत; कार्यात्मक अनुरूपता चेतनाक मूल अनुभूति सिद्ध करैत अछि कि नहि, से खुला प्रश्न अछि। साधारण तन्त्रिका-सहसम्बन्धसँ मानसिक अवस्था पूर्णतः व्याख्यायित होयब अलग दाबी अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मन-देहक व्यापक समस्या एतय विशिष्ट सिद्धान्तक प्रतिस्पर्धा बनैत अछि। कृत्रिम बुद्धिकें मानसिक अवस्थाक दर्जा देबाक विवादमे कार्यात्मकता विशेष नूतन कठिनाई आनत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : ““व्यवहारवाद” शब्द स्वयं बहुअर्थी अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “पूर्वपक्ष 1: “(Mental state) सीधे देखाइत नहि; वैज्ञानिकता लेल केवल (observable behavior) मानू।”

उत्तरक चुनौती—(science electron), (gene), (black hole),
(latent variable) जकाँ (unobservable entity) सेहो (indirect
evidence) सँ मानैत ।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणः : “The term “behaviourism” is
itself multivalent. Methodological behaviourism
emphasises a research method in psychology centred on
publicly observable variables, stimulus, response, and
learning history. Psychological or radical behaviourism
gives a larger role to environmental contingencies in
explaining behaviour. ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 77; मूल
मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 78 — चेतनाक कठिन समस्या

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Hard Problem of Consciousness*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

चेतनाक कठिन समस्यामे कार्यात्मक, व्यवहारगत अथवा तन्त्रिका-सम्बन्धक सफल व्याख्या आ अनुभूतिक “केहन लगैत अछि” पक्षक बीच अवधारणात्मक अन्तर उठैत अछि। “सहज” वैज्ञानिक समस्यासभ वास्तवमे जटिल भऽ सकैत अछि, मुदा हुनका कार्यकारणीय मॉडलद्वारा सिद्धान्ततः समझबाक आशा अछि। लेखक एहि नामकरणक तकनीकी अर्थ बचबैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

व्याख्याक अन्तर मानलासँ अनिवार्य द्वैतवादी सत्ता सिद्ध नहि होइत; एही प्रकार पूर्ण भौतिकवादी निश्चयकें उपलब्ध प्रयोगक निष्कर्ष मानब अतिरेक अछि। प्रथमपुरुष रिपोर्ट, चेतना-मापन आ दार्शनिक सम्भावनाकें अलग स्रोत मानबाक आवश्यकता अछि। अन्य प्राणी वा मशीनक अनुभूतिक दावा पर अनिश्चितता सार्वजनिक रूपें स्वीकार करब उचित अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मन-दर्शनक एहि केन्द्रबिन्दु सँ उद्देश्यता आ आत्मबोधक अगिला प्रश्न जुड़ैत अछि। प्रथम खण्डक आत्मतत्त्व-विवाद आधुनिक दार्शनिक संवादक एक स्वतंत्र समकक्ष बनि सकैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्थ : “(Chalmers) “(easy problems)” शब्द तकनीकी अर्थमे उपयोग करैत अछि: एहन (problems) जे (functional/causal mechanism) चिन्हि सिद्धान्ततः (explain) कएल जा सकैत अछि—(stimulus discrimination),

(information integration), (verbal report), (behavioural control), (access to internal state)।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणश : “(Naturalistic dualism Chalmers)क अनुसार (consciousness fundamental property/law) माँगि सकैत, विज्ञान-विरोध नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “Chalmers uses the phrase “easy problems” in a technical sense: problems that can in principle be explained by identifying functional or causal mechanisms—stimulus discrimination, information integration, verbal report, behavioural control, and access to internal states. These may be scientifically extremely difficult; ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 78; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 79 — उद्देश्यता (intentionality) आ आत्मबोध (self)

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Intentionality and Self*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

उद्देश्यता मानसिक अवस्थाक “कोनो वस्तु वा अर्थक प्रति” निर्देशित होयबाक दार्शनिक प्रश्न अछि। विश्वास, स्मृति, आशा, डर आ कल्पनाक विषय वस्तुक अस्तित्वसँ भिन्न हो सकैत अछि। आत्मबोध केँ केवल स्थिर पदार्थ-स्वरूप नहि, अनुभवक एकता, सामाजिक पहिचान आ स्मृतिक सम्बन्धसँ जाँचल गेल अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

मानसिक प्रतिनिधित्वक तन्त्रिका-व्याख्या सम्भव हो, मुदा “ककरा विषयक” अर्थ कोना निश्चित होइत अछि, ई स्वतन्त्र विश्लेषण मागैत अछि। स्थायी व्यक्तिगत पहिचानपर जोर देबैत स्मृतिक त्रुटि, देहगत परिवर्तन आ सामाजिक कथनक भिन्नता बिसरब अनुचित अछि। अनुभवक रहस्यक नामपर प्रायोगिक निष्कर्ष केँ अकारण अस्वीकारो नहि कएल जाए।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

विद्गेन्स्टाइनक निजी भाषाक विमर्श एहि अध्यायक प्रथमपुरुष पक्षसँ संवाद करैत अछि। अगिला भारतीय आत्मा-अनात्मा परम्परा एहि प्रश्नसभक अलग इतिहास प्रस्तुत करत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “(Franz Brentano) आधुनिक बहसमे (intentionality) केँ मानसिक घटनाक विशिष्ट लक्षण रूपमे पुनः प्रस्तुत कएलनि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पूर्वपक्ष 1: (Intentionality metaphysical mystery) बनाबयक आवश्यकता नहि; (mature neuroscience causal coding) पूर्ण (explain) कऽ देत।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “Franz Brentano reintroduced intentionality into modern debate as a distinctive mark of mental phenomena. But Brentano’s formula alone does not answer two further questions: “Are all instances of mental phenomena intentional?” and “How does a physical or computational system acquire intentional content?””

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 79; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 80 — भारतीय आत्मा-अनात्मा-चित्त विवाद

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Indian Debates on Ātman, Anātman and Citta*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

आत्मा, अनात्मा आ चित्तक भारतीय विवाद बहु भिन्न ज्ञानमीमांसक तथा मोक्षसम्बन्धी पद्धतिसँ जुड़ल अछि। न्यायीय आत्मा-सत्ता, बौद्ध अनात्मा आ वेदान्तीय चैतन्य केँ आधुनिक “self” शब्दक एक अर्थमे गलाबयब उचित नहि। लेखक अनुवादकेँ स्वयं दार्शनिक निर्णय मानैत छथि: पद-चयन बदललासँ तर्कक सीमा बदलि सकैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

स्मृति लेल अनिवार्य अपरिवर्तित आत्मा आवश्यक अछि—ई दाबी परीक्षा माँगैत अछि; दोसर दिस क्षणिक प्रवाह मात्र कहला सँ स्मृतिक निरन्तरता स्वतः स्पष्ट नहि होइत। बौद्ध मतक विविधता आ न्याय परम्पराक मतभेद सुरक्षित रखब चाही। संस्कृत, पालि, मैथिली आ अंग्रेजी पदावलीक समरूप अनुवाद असल प्रतिपक्ष लुका सकैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मन-दर्शनक समकालीन अध्यायसभ एतय भारतीय मतक स्वतंत्र तर्कदर्शनसँ मिलैत अछि। आगामी त्रिकोणीय संवादक औचित्य शास्त्रीय वचनक पाठाधार आ आधुनिक प्रयोगक प्रमाणभार अलग राखबमे अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “एहि बहसक (translation) स्वयं दार्शनिक समस्या अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “पूर्वपक्ष 1: स्थायी (self) बिना (memory impossible)।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “Advaita’s language of sākṣin, the witness, does not mean a Cartesian inner observer. The witness names a principle of consciousness through which mental modifications are disclosed while it is not itself turned into an object. If it is imagined as a small observer inside the brain, the theory’s central claim of ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 80; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 81 — न्याय, बौद्ध आ आधुनिक मन-दर्शन (philosophy of mind) केर त्रिकोणीय संवाद

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : A Triangular Dialogue among
Nyāya, Buddhism and Modern Philosophy of Mind

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

न्यायीय स्थायी आत्मा, बौद्ध अनात्मा आ आधुनिक मन-दर्शनक विभाजित सिद्धान्तसभ बीच संवादक आधार पूर्वनिर्णीत समान उत्तर नहि, स्मृति, अनुभूति, कारण, आत्मबोध आ पहचानक साझा प्रश्न अछि। लेखक स्वतन्त्र परम्परासभक प्रमाण-पद्धति अलग राखैत छथि, जाहिसँ त्रिकोणीय विमर्श प्रतिद्वन्द्वी मतक वास्तविक बल देखबैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

न्यायक आत्मा-सत्ता आ बौद्ध अनात्माक असहमति दूर करबाक लेल आधुनिक मस्तिष्क-अध्ययनकें अन्तिम निर्णायक कहब अतिरेक होयत; जैविक साक्ष्य जतेक समाधान दैत अछि, ततेक अवधारणात्मक प्रश्न छोड़ैत अछि। भारतक परम्परामे आत्मा-अनात्माक मतभेद मूल पाठसहित देखायल जाए; असमान पारिभाषिक पदक शाब्दिक अंग्रेजी अनुवाद तर्कक मतभेद लुका सकैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मन-दर्शन समूहक उपसंहार प्रथम खण्डक आत्म-मीमांसाकें नव्य शास्त्रीय आ आधुनिक ज्ञानक संयोजित प्रश्नक्षेत्रमे रखैत अछि। समकालीन वैज्ञानिक यथार्थवाद अगिला अध्यायमे प्रमाणक श्रेणी बदलैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे न्याय, बौद्ध आ आधुनिक मन-दर्शनक बीच सर्वाधिक फलदायी संवाद सिद्धान्त-समानता पर नहि, समस्या-समानता पर आधारित होयत।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्षः न्याय स्थायी आत्मा मानैत अछि आ बौद्ध अनात्मा; तें वास्तविक संवाद सम्भव नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “The first difficulty concerns the bearer of subjectivity. If there is cognition, whose cognition is it?”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 81; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 82 — वैज्ञानिक यथार्थवादक नूतन विवाद

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *New Debates in Scientific Realism*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

वैज्ञानिक यथार्थवाद “विज्ञानक सभ वर्तमान वाक्य अन्तिम सत्य” जकाँ सरल मत नहि; विज्ञानक सिद्धान्त, अनदेखल सत्ता आ सफल मापन बीच कारणसम्बन्धक व्याख्या अछि। लेखक यथार्थवाद आ विरोधी-यथार्थवादक भीतरी अनेक मतभेद स्वीकार करैत छथि। प्रयोगक सफलता आ अवधारणात्मक अस्तित्व-दाबी बीच अन्तर आलोचनाक केन्द्र बनैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सफल भविष्यवाणी कोन वस्तुक वास्तविक अस्तित्व प्रमाणित करैत अछि? इतिहासमे सिद्धान्त बदलला पर पूर्व सफलताक अर्थ कोना समझब? एहि कठिनाईक उत्तर न विज्ञानक सम्पूर्ण अस्वीकृति, न जाँच-विहीन अन्तिम विश्वास। उपकरणक स्वतंत्र जाँच, पूर्वानुमानक संगति आ विरोधी साक्ष्यक बल अनुसार दाबी निर्धारित होयत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

भाषा-यथार्थवादक पहिनुक प्रश्न एतय प्रयोगजन्य विज्ञानपर लागू होइत अछि। प्राकृतिक आ सामाजिक विज्ञानक आगामी तुलना प्रमाणक एकता आ पद्धतिक भिन्नता परखत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे वैज्ञानिक यथार्थवादक सर्वाधिक समर्थ रूप सरल “विज्ञान जे कहैत अछि, ओ सभ सच अछि” एहन मत नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “एहि कारण “यथार्थवाद बनाम विरोधी-यथार्थवाद” एक सीधा द्वैत नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The success of science is extraordinary. From planetary motion to gene editing, from semiconductors to immunology, from telescopes to particle accelerators, scientific theories make possible prediction, control and explanation far beyond ordinary conjecture. The question is whether this success occurs because science ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 82; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 83 – प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञान

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Natural Science and Social Science*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञानमे विश्वसनीय प्रमाण, कारण-विश्लेषण आ त्रुटि-सुधारक साझा आग्रह अछि, मुदा विषयक प्रतिक्रिया आ मानवीय अभिप्राय भिन्न पद्धति माँगैत अछि। सामाजिक वर्गीकरणक नियम स्वयं अध्ययनकर्ता आ सहभागीक व्यवहार बदलि सकैत अछि; प्राकृतिक वस्तु एही अर्थमे सामाजिक संज्ञा पर निर्भर नहि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

एकहि संख्यात्मक मापनक आग्रह लगाबला पर अनुभव, संस्था आ व्याख्यात्मक कारण छूटि सकैत अछि; केवल अनुभूतिपर भरोसा करलासँ प्रतिनिधि आँकड़ा आ तुलनात्मक प्रमाण दबि जाएत। ककरा लेल कोन प्रकारक प्रमाण उचित, तकर निर्णय प्रश्न-सापेक्ष होयत। सामाजिक अनुसन्धानमे पूर्वनिर्धारित नैतिक निष्कर्षक स्थानपर प्रतिपक्ष आ सार्वजनिक समीक्षा अनिवार्य अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

बहुप्रमाणीय विवेकवादक नूतन रूप तैयार करबाक लेल ई विज्ञानसम्बन्धी आधार विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। तकनीकक अध्ययनमे सामाजिक-पदार्थगत दोसर प्रकारक संयोग अगिला अध्याय खोलैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे प्राकृतिक विज्ञान आ सामाजिक विज्ञानक बीच साझा ज्ञानमीमांसक अनुशासन अछि, मुदा एकहि सर्वमान्य विधि नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “एहि कारण विधिगत एकता आ विधिगत बहुलताक बीच संतुलन चाही।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “One old position holds that the social sciences should imitate the methods of the natural sciences. In this naturalist view, causation, laws, measurement, testing and prediction are treated as ideals. A second position argues that human action is not merely an external event; its meaning, purpose, understanding of ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 83; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 84 — तकनीक केवल औजार नहि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Technology Is Not Merely a Tool*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

तकनीक के केवल निष्प्रभावी औजार कहब पर्याप्त नहि; ओकर डिजाइन मानवीय क्रिया, अवसर, जोखिम आ सामाजिक संस्थाक व्यवस्था बदलत अछि। सड़क, मोबाइल, अस्पताल अथवा डिजिटल मंचक पदार्थगत विन्यास मानवीय इच्छा बाहर स्वतन्त्र शक्तिसभ नहि, मुदा ओकर परिणाम केवल व्यक्तिगत इरादा सँ निश्चय नहि होइत।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

तकनीकी नियतिवाद व्यक्ति आ समाजक निर्णय समाप्त करैत अछि; साधनवाद उपकरणक भीतरक मूल्य-निर्णय अनदेखैत अछि। कोन तकनीक ककरा फायदा, ककरा जोखिम, कोन समुदाय अपन आपत्ति जता सकैत अछि, से ठोस जाँच माँगैत अछि। हाइडेगरक आलोचना प्रत्येक यन्त्रक नैतिक नकारक पर्याय नहि बनाओल जाए।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

पहिल खण्डक सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद एतय भौतिक वस्तु, मानव क्रिया आ संस्थागत अर्थक सम्बन्धमे नूतन रूप पवैत अछि। डिजिटल सूचना आ एल्गोरिदमक प्रश्न क्रमशः एहि प्रभावकें मापनयोग्य बनवैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे तकनीक केवल बाहरी औजार नहि; ओ मानव क्रिया, अनुभूति, संस्था आ मूल्यकें मध्यस्थित करयवला पदार्थगत-सामाजिक व्यवस्था अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “एगारहम तर्क—हाइडेगरक आलोचना तकनीक-विरोधी नारा नहि मानबाक चाही।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “Technology is not a single object. Any device is bound up with materials, energy, knowledge, standards, training, capital, labour, repair, supply chains, law, institutions and users. A ‘mobile phone’, therefore, is not merely one device; it forms part of an extensive sociotechnical system of communication networks, ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 84; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 85 – डिजिटल जगतमे सत्य

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Truth in the Digital World

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

डिजिटल जगत सत्यक प्रकृति नहि बदलैत, मुदा स्रोतक उत्पत्ति, संपादन, प्रसार आ प्रमाण-परीक्षाक परिस्थिति बदलैत अछि। प्रतिलिपि, संशोधित दृश्य, असत्य खबर आ मंचद्वारा प्राथमिकता-परीक्षणक प्रश्न एहि अध्यायमे उठैत अछि। लेखक स्रोतकें साक्ष्य मानबाक पहिने ओकर निर्माण-श्रृंखला जाँचबाक आग्रह करैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

डिजिटल दृश्य बनाओल जा सकैत अछि, ताहिसँ सभ दृश्य असत्य नहि भऽ जाइत। ओहिना प्रामाणिक डिजिटल हस्ताक्षर अथवा मेटाडेटा मात्रसँ घटना-दाबीक सत्यता सिद्ध नहि होइत। छविक स्रोत, संपादन इतिहास, स्वतंत्र प्रत्यक्ष प्रमाण आ अधिकार-हस्तक्षेप अलग-अलग परखल जाए। दुर्लभ घटनाकें लोकप्रियता सँ असत्य वा सत्य मानब विवेकहीन अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अध्याय ४५क “सत्यक अन्त?” प्रश्न एतय डिजिटल व्यवहारक कठिन परीक्षामे अबैत अछि। एल्गोरिदमक सत्ता-विमर्श एही सत्यापित सूचनाक सामाजिक वितरणपर आगाँ विचार करत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे डिजिटल जगत सत्यक प्रकृति नहि बदलैत, मुदा सत्य-दाबीक परीक्षणक परिस्थितिकें गहन रूपेँ बदलि दैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “पहिल पूर्वपक्षः डिजिटल युगमे सत्य असम्भव भऽ गेल, किएक तँ किछुओ बनाओल जा सकैत अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The question of truth in the digital world is more difficult than it first appears. In a printed page, oral testimony or direct observation, source and context were often visible to some extent; in digital media, the same material can be copied thousands of times, its title can be changed, an image can be cropped, its ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 85; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 86 — एल्गोरिदम, वर्गीकरण आ सत्ता

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Algorithms, Classification and Power

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

एल्गोरिदम केवल गणितीय क्रम नहि; लक्ष्य-निर्धारण, प्रशिक्षण सामग्री, वर्गीकरण, परिणामक सामाजिक उपयोग आ अपीलक नियमसहित एक निर्णय-व्यवस्था अछि। लेखक संख्यात्मक निष्पक्षता आ न्यायसंगत निर्णयक भिन्नता देखबैत छथि। ककर जीवनक अवसर वर्गीकरणद्वारा बदलैत अछि, एहि प्रश्नक संग सत्ता प्रत्यक्ष बनैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

औसत सफलता अनेक छोट समूहक असमान हानि ढँकि सकैत अछि। केवल सूत्र सार्वजनिक कएलासँ प्रशिक्षण-स्रोत, संस्थागत नीति आ प्रभावग्रस्त व्यक्तिक प्रतिकार-अधिकार स्वतः उपलब्ध नहि होइत। “मानव पक्षपाती छथि, ताहि कारण मशीन निष्पक्ष अछि” नामक पूर्वपक्ष प्रशिक्षणक सामाजिक इतिहास बिसरैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूकोक सामान्यीकरण, हाबर्मासक सार्वजनिक उत्तरदायित्व आ प्रथम खण्डक बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र एहि अध्यायमे संयुक्त परीक्षा पवैत अछि। कृत्रिम बुद्धिक दक्षताक प्रश्नक पहिने संस्थागत जवाबदेहीक आधार जरूरी अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्शः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे एल्गोरिदमकेँ केवल गणितीय क्रम नहि, सामाजिक-तकनीकी निर्णय-व्यवस्था मानि जाँचल जाए।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्शः : “पहिल पूर्वपक्ष: एल्गोरिदम मनुष्यसँ अधिक निष्पक्ष अछि, तें जहाँ सम्भव निर्णय ओकरा सौँपि देबाक चाही।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “In digital society, algorithms often function as invisible decision systems. Which result appears first in a search, which risk category receives a loan application, which application is prioritised in recruitment, which content reaches the foreground on a social platform, and who is labelled ‘high’, ‘medium’ or ‘low’ ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 86; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 87 — कृत्रिम बुद्धि: बुद्धि की अछि?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Artificial Intelligence: What Is Intelligence?

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

कृत्रिम बुद्धिक “बुद्धि” प्रश्न एकटा हँ-नहि कथन नहि, कार्यसम्पादन, सन्दर्भ-समझ, सामान्यीकरण, स्वतन्त्र संशोधन आ सामाजिक व्यवहारक अनेक कसौटी पर अलग क्षमता-जाँच अछि। मानव-जकाँ उत्तर देब आ मानवीय चेतना/अभिप्राय होएब समान निष्कर्ष नहि। लेखक कार्य-प्रोफाइलक आकलनकें दार्शनिक नामकरणसँ आगाँ राखैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

एक परीक्षा सफल भेलासँ परिवर्तित कार्यक्षेत्रमे विश्वसनीयता सिद्ध नहि। भाषा-प्रदर्शनक चमकदार उदाहरण दुर्लभ विफलता, असुरक्षित अधिकार-निर्णय आ स्रोतगुप्तता छिपा सकैत अछि। प्रत्येक मानवीय क्षमता मशीनमे एकहिसँ अनुरूप होयत एहन धारणा अनुभवसँ सिद्ध नहि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

मन-दर्शनक व्यवहारवाद आ कार्यात्मकतावादक विवाद एतय नूतन तकनीकी परिस्थिति पबैत अछि। “मशीन बुद्धिमान अछि”क संस्था-दाबी आ “मशीन अनुभूति करैत अछि”क दार्शनिक दाबी पृथक रहबाक चाही।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणांश : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि जे कृत्रिम बुद्धिकें एकल “अछि/नहि अछि” प्रश्नमे नहि, बहु-कसौटी क्षमता-प्रोफाइल रूपेँ जाँचल जाए।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्ष: जँ मशीन मानव-स्तरीय परीक्षा पास करैत अछि तँ ओकर बुद्धि मनुष्यक बराबर मानि लेब उचित।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The expression ‘artificial intelligence’ has become, at once, a technical name, a philosophical claim and a cultural metaphor. When a system plays chess, recognises images, writes language, translates, calculates or suggests a plan, it is easy to say that ‘the machine is intelligent’. But the philosophical question ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय ८७; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 88 — मशीन चेतना: प्रश्न खुलल अछि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Machine Consciousness: The Question Remains Open

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

मशीन चेतनाक प्रश्नमे अन्धस्वीकृति आ अन्धनिषेध दुनू दार्शनिक धैर्यक कमी अछि। अनुभवक प्रथमपुरुष पक्षक प्रमाण पराया प्रणालीमे कोना उपलब्ध होयत, कार्यात्मक बनावट आ चेतनाक सम्बन्ध कोना जाँचल जाए—एहि कठिनाईसभकेँ लेखक स्पष्ट रखैत छथि। अनेक सैद्धान्तिक सम्भावना स्वीकार करब निश्चितता न भएबाक प्रमाणिक घोषणा अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

यन्त्रमानवक भावपूर्ण वाक्य स्वयं अनुभूतिक अस्तित्वक पर्याप्त परीक्षण नहि। वैज्ञानिक मापनक अभावकेँ चेतना असम्भव होएबाक अन्तिम प्रमाण मानबो तर्कगत अतिरेक अछि। अतः व्यवहारिक अधिकार, कल्याणक सावधानी आ मनुष्यपर वर्तमान प्रभावक प्रश्न अलग नैतिक निर्णय माँगैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

चेतनाक कठिन समस्या आ कृत्रिम बुद्धिक क्षमता-परीक्षण एहि ठाम अलग प्रमाण स्तरपर भेटैत अछि। अगिला उत्तरदायित्व-विमर्श काल्पनिक मशीन-मनक दाबी सँ हटि वास्तविक मानवीय संस्था पर केन्द्रित होयत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन ई अछि: मशीन चेतना विषयमे उचित स्थिति न अन्ध-स्वीकृति अछि, न अन्ध-निषेध; वरन् स्तरबद्ध प्रमाण, सिद्धान्तीय बहुलता आ नैतिक सावधानीक संयुक्त पद्धति अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “दोसर तर्क (multiple realizability)क अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The question of machine consciousness is one of the hardest questions in modern philosophy because two uncertainties are superimposed upon one another. First, there is no complete agreement about what consciousness itself is. Second, even if a definition of consciousness is accepted, the other-minds problem remains: ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय ८८; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 89 – कृत्रिम बुद्धि (AI) युगमे प्रमाण आ उत्तरदायित्व

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Evidence and Accountability in the Age of Artificial Intelligence (AI)

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

कृत्रिम बुद्धिक युगमे प्रमाण केवल उत्तरक वाक्य नहि, स्रोत, डेटा, मॉडल, संपादन, परीक्षण आ उपयोगक उत्पत्ति-शृंखला अछि। जवाबदेही एक व्यक्ति पर समग्र दोष देबाक सरल व्यवस्था नहि; निर्माताक डिजाइन, संस्थाक प्रयोग, परीक्षकक समीक्षा आ अन्तिम निर्णयकर्ताक भूमिका अलग चिन्हबाक विषय अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

औसत शुद्धता देखला पर दुर्लभ उच्चहानि परिस्थिति, असमान समूह-फल आ निर्णय-विवाद नकारल नहि जा सकैत। मशीनक “व्याख्या” प्रभावित व्यक्तिक वास्तविक अपील अधिकारक पर्याय नहि। मानव पर्यवेक्षक नाममात्र रहला पर उत्तरदायित्वक खोखलापन बचैत अछि; तकर लेल संस्थागत अभिलेख आ प्रभावकारी प्रतिकार चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

डिजिटल सत्यक स्रोत-संरक्षण, एल्गोरिदमक वर्गीकरण आ मशीन बुद्धिक प्रश्न एहिमे संयुक्त नैतिक दायरा पबैत अछि। पहिल खण्डक गरिमा-आधारित नैतिकता डिजिटल संस्थाक व्यावहारिक नियम बनबाक माँग करैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणान्श : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन अछि: (AI) युगमे प्रमाणकें “उत्तरक सामग्री” नहि, “उत्पत्ति-शृंखला” रूपें बुझू; आ उत्तरदायित्वकें “एक व्यक्ति पर दोष” नहि, “भूमिका-विशिष्ट कर्तव्य आ अन्तिम जवाबदेही” रूपें रचू।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पहिल पूर्वपक्ष: “(AI) मानवसँ औसतन अधिक सही अछि, तें हर जगह मानवकेँ हटायब उचित।” औसत (performance context), (subgroup), (rare case) आ (accountability cost) नहि देखबैत।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “In the age of artificial intelligence, the crisis of knowledge is not merely a crisis of wrong answers; it is changing the location of evidence, the limits of authorship, the source of decisions and the structure of responsibility. Earlier, a reader could usually identify an author, institution, document or direct ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 89; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 90 — बहुप्रमाणीय विवेकवादक दोसर रूप

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Second Form of Multi-Evidential Rationalism*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

बहुप्रमाणीय विवेकवादक दोसर रूप स्रोतक अनेकता मात्र नहि, प्रमाणक स्वाधीनता, प्रासंगिकता, कमजोरी, बाधक साक्ष्य आ पुनर्परीक्षणक भार-विभाजन अछि। कोन दाबी लेल कुन ज्ञान-पद्धति सक्षम अछि, तकर निर्णय पहिने प्रश्नकें स्पष्ट कऽ करवाक चाही। लेखक स्रोतक बहुलता कें मतक समान भारक भ्रमसँ अलग करैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

बहुत स्रोत वास्तवमे एकहि मूल सूचना सँ नकल भेल हो सकैत अछि; संख्या स्वतन्त्र पुष्टि नहि। मौखिक स्मृति, प्रयोगशाला, ग्रन्थ, राज्यक अभिलेख आ डिजिटल चिह्न एक समान दावा-सिद्धि नहि करैत। बाधक प्रमाण सक्रिय रूपेँ खोजब आत्मसमीक्षाक व्यावहारिक नियम बनैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

खण्ड १क आधार डिजिटल निर्णय, ऐतिहासिक स्रोत आ सामाजिक न्यायसँ गुजरि अधिक जटिल रूप पवैत अछि। अगिला यथार्थवाद, गरिमा आ लोकतन्त्रक नव रूपसभ एहि पद्धतिक कार्यपर निर्भर छथि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “एहि अध्यायक मूल प्रतिपादन अछि: सत्य-दाबी पर अनेक सम्भावित प्रमाण-स्रोत खोलू, मुदा सभकें समान मत मानू; प्रत्येक स्रोतक क्षमता, सीमा, स्वतंत्रता, प्रासंगिकता आ बाधक प्रमाण जाँचि दाबी-विशिष्ट भार दिअ; निष्कर्षकें अस्थायी स्पष्टतासँ लिखू आ नूतन प्रमाण पर संशोधन स्वीकारू।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणंश : “पाँचम सिद्धान्त—बाधक प्रमाण (defeater) सक्रिय रूपेँ खोजू।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणंश : “The first illusion of modern knowledge-life is that more information automatically yields more knowledge. The internet, databases, research papers, news, statistics, archives, interviews, social media and artificial intelligence have enormously increased the number of available sources; yet a larger number of sources ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 90; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 91 — सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद आ भाषिक मोड़

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Coexistential Realism and the Linguistic Turn*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भाषिक मोड़ देखबैत अछि जे जगतक ज्ञान शब्द, वर्ग आ नियमद्वारा व्यक्त होइत अछि, मुदा भाषा पर निर्भर व्याख्या आ भाषा-सृजित पदार्थ एकहि बात नहि। सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद शरीर, समाज, पदार्थ, अनुभव आ प्रतीकक अलग सम्बन्धित स्तर स्वीकार करैत अछि। लेखकक मुख्य बल वास्तविकताक प्रतिरोध पर अछि—गलत नामकरण वास्तविक परिणामकें समाप्त नहि करैत।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अनेक स्तरकें एक साथ मानला पर विरोधी तथ्य-दाबीक निर्णय कोना होयत? “सहअस्तित्व” शब्दसँ परस्पर विरोधी अस्तित्वसम्बन्धी कथन स्वतः सुसंगत नहि बनैत। भाषिक श्रेणी अनुचित हो सकैत अछि, मुदा श्रेणी सुधारबाक आधार स्वतंत्र प्रमाण तथा प्रभावित व्यक्तिक अनुभवमे खोज्य पड़त।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

भाषिक मोड़क आरम्भिक अध्याय १ आ यथार्थवादक मूल प्रथम खण्डक प्रतिज्ञा एतय मिलैत अछि। अन्तिम अध्यायसमूह एहि पद्धतिक नैतिक आ ऐतिहासिक क्षमता परखैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “बीसम शताब्दीक “भाषिक मोड़” दर्शनकें एक आवश्यक सावधानी सिखौलक: हम संसारक चर्चा निर्वस्त्र दृष्टिसँ नहि करैत छी; हम शब्द, वाक्य, अवधारणा, व्याकरण, प्रतीक, वर्गीकरण आ व्यवहारक माध्यमसँ ओकरा ग्रहण करैत छी।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “पहिल तर्क प्रतिरोधक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “The twentieth-century “linguistic turn” taught philosophy an indispensable caution: we do not discuss the world through an unmediated gaze; we apprehend it through words, sentences, concepts, grammar, symbols, classifications and practices. Yet this achievement generated two opposite extremes. On one side, naive ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 91; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 92 — गरिमा-आधारित नैतिकता आ नूतन पहचान

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Dignity-Based Ethics and New Identities*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

गरिमा-आधारित नैतिकता नव पहचानक माँगकें सुनबाक संग अधिकारक सामान्य मानदण्ड बचबैत अछि। भाषा, लिंग, जाति, वर्ग आ धार्मिक पहिचान व्यक्तिक जीवनपर वास्तविक प्रभाव रखैत अछि; मुदा कोनो पहिचान मनुष्यक सम्पूर्ण नैतिक मूल्य निर्धारित नहि करैत। लेखक सम्मान आ आलोचनाक संयुक्त दायित्वपर बल दैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

पहचानक सार्वजनिक मान्यता अधिकार देबाक साधन भऽ सकैत अछि, मुदा शासकीय सूची नूतन बहिष्कारो बना सकैत अछि। दू अधिकार-दाबीक संघर्षमे “गरिमा” शब्द स्वयं निर्णायक निर्णय नहि; कारण, अनुपात, अपील आ हानि-निवारणक नियम चाही। समुदाय भीतर असहमत व्यक्तिक गरिमा सेहो सुरक्षित होयबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

स्त्रीवादी, उत्तर-औपनिवेशिक आ सामाजिक न्यायसम्बन्धी अध्यायसभक पुनर्पाठ एतय नैतिक कसौटी प्राप्त करैत अछि। अगिला नेटवर्क-सत्ता पर विमर्श एहि समान मानककें संस्थागत व्यवस्था तक पहुँचाओत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्शः : “आधुनिक समाजमे “पहचान” शब्द एक साथ अनेक प्रश्न वहन करैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्शः : “पहचानक राजनीति एक वास्तविक नैतिक उपलब्धि सेहो अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “In modern society, the word ‘identity’ carries several questions at once. How a person understands herself, how others recognise her, which category the state records her under, which role family and community assign her, which profile a digital platform constructs for her, and which memories history attaches to her ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 92; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 93 — बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र आ नेटवर्क-सत्ता

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Polycentric Democracy and Network Power*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

बहुकेन्द्रिक लोकतन्त्र केवल राज्यक भीतर शाखासभक वितरण नहि; नेटवर्क, डिजिटल मंच, स्थानीय समुदाय आ अन्तरराष्ट्रीय संस्था सँ प्रभावित निर्णयक जवाबदेहीक प्रश्न अछि। सत्ता अनेक स्थानपर फैलला परो प्रभावित नागरिकक अपील आ अधिकारक केन्द्र लुप्त नहि होयबाक चाही। लेखक सार्वजनिक शक्ति आ निजी मंचक भिन्न रूपकें संयुक्त शासन-संकट मानैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

केन्द्र कम भेला पर अन्याय स्वतः कम नहि; स्थानीय संस्था सेहो जातिगत वा आर्थिक प्रभुत्व राखि सकैत अछि। स्रोत-संहिता प्रकाशित कएलासँ प्रभावित निर्णयक वास्तविक समझ स्वतः सुनिश्चित नहि; प्रक्रिया, मनुष्यक उत्तरदायी भूमिका आ प्रतिकार आवश्यक अछि। बहुकेन्द्रिकता जँ जवाबदेहीक विखण्डन बना देत तँ लोकतन्त्रक घोषित उद्देश्य असफल होयत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

हाबर्मासक सार्वजनिक क्षेत्र आ कृत्रिम बुद्धिक निर्णय-विवेचन एहि अध्यायमे नूतन डिजिटल परिप्रेक्ष्य प्राप्त करैत अछि। प्रथम खण्डक मूल प्रस्ताव कें सार्वजनिक दायित्वक संस्था चाही।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “लोकतन्त्रक पारम्परिक कल्पनामे सत्ता मुख्यतः राज्यक भीतर खोजल जाइत अछि—विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, निर्वाचन आ प्रशासन।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “उत्तर 6: (transparency)क अर्थ (source code) सभकें खोलब नहि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “In the traditional picture of democracy, power is sought chiefly within the state—the legislature, executive, judiciary, elections and administration. These indispensable centres remain decisive in modern society, but citizens’ lives are not shaped by government orders alone. Employment opportunities can be altered by ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 93; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 94 — धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता आ उत्तर-धर्मनिरपेक्ष समाज

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Rational Plurality of Religion and the Post-Secular Society*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

धर्मक विवेकपूर्ण बहुलता धार्मिक अनुभवकेँ पूर्ण निजी मौन अथवा राज्यक सर्वोच्च नियम—एहि दू कठोर खाँचामे नहि बाँधैत। आस्था, अर्थ, सामुदायिक स्मृति आ व्यक्तिगत स्वतंत्रता नागरिक अधिकारक व्यापक क्षेत्रमे उपस्थित छथि। लेखक मानबाक, नहि मानबाक आ बदलबाक स्वतंत्रता एकहि नैतिक गरिमाक शर्त मानैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

धार्मिक सम्मानक नामपर समुदाय भीतर स्त्री, अल्पसंख्यक अथवा असहमत सदस्यक अधिकार सीमित करब अनुचित अछि। ओहि उलट धर्मक सार्वजनिक आवाजकेँ सिद्धान्ततः निषिद्ध करबो अन्यायपूर्ण भेदभावक साधन बनि सकैत अछि। सार्वजनिक नीति केना प्रमाण, सहमति, न्यायिक समीक्षा आ अधिकारक सामान्य कसौटी सँ गुजरत, ई निर्णय शेष रहैत अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

पहिल खण्डक धर्मबहुलता-विचार एतय धर्मोत्तर सार्वजनिक जीवनक कठिन सवाल सँ भिड़ैत अछि। गरिमा आ लोकतन्त्रक नियम मिलि धार्मिक बहुलताक नैतिक सीमा तय करबाक चाही।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “आधुनिक समाजमे धर्मक प्रश्न दूटा सरल खाँचामे नहि समाइत: “धर्म पूर्णतः निजी हो” अथवा “धर्म सार्वजनिक जीवनक सर्वोच्च निर्णायक हो।” व्यक्ति लेल आस्था पूजा-पद्धति मात्र नहि; अर्थ, मृत्यु, दुःख, आशा, व्रत, दया, परिवार, स्मृति, समुदाय, वस्त्र, भोजन, समय, भाषा आ नैतिक दायित्वक स्रोत हो सकैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “पाँचम कठिनाई धर्म-विरोधी पूर्वग्रहक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “In modern society, the question of religion does not fit into two simple boxes: “religion should be entirely private” or “religion should be the supreme arbiter of public life.” For a person, faith may be not merely a mode of worship but a source of meaning, reflection on death and suffering, hope, vows, compassion, ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 94; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय 95 — समानान्तर इतिहास-दृष्टि: वंशावली-पद्धति (genealogy), अभिलेखागार (archive) आ प्रमाण

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *The Parallel View of History: Genealogy, Archive and Evidence*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

समानान्तर इतिहास-दृष्टि अतीतकें तैयार पुस्तक नहि मानैत; स्रोत चयन, मौन, वर्गीकरण आ प्रमाणक विच्छेद इतिहासकारक निर्णयपर असर करैत अछि। वंशावली वर्तमान संस्थाक स्वाभाविकता पर प्रश्न करैत अछि; अभिलेखक आलोचना ओकर उत्पत्ति आ बहिष्कृत आवाज चिन्हैत अछि। तथापि इतिहासकारक नैतिक उद्देश्य घटनाक प्रमाण निर्माण नहि करि सकैत।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

मौन सँ इच्छा अनुसार घटना अनुमान करब असत्य इतिहास बना सकैत अछि। राज्यीय अभिलेखक पक्षधरता देखलापर ओकर प्रत्येक तिथि स्वतः असत्य नहि, आ मौखिक कथा लिखित दस्तावेजक निर्दोष विकल्प नहि। स्रोतक दिनांक, निर्भरता, विरोध, संस्करण आ स्थाननामक परिवर्तन क्रमबद्ध रूपेँ नोंदबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूकोक इतिहास-विमर्श आ मिथिलाक औपनिवेशिक भूगोलक आलोचना एतय स्रोत-शुचिताक कार्यकारी प्रावधान बनैत अछि। आखिरी आत्मसमीक्षामे लेखक अपनहि दावीसँ एहि मानकक प्रयोग माँगैत छथि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणशः : “इतिहास लिखब समय पहिल भ्रम ई अछि जे अतीत स्वयं पुस्तक जकाँ तैयार रूपमे पड़ल अछि, इतिहासकार केवल ओकरा पढ़ैत अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणशः : “तेसर कठिनाई मौनक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “The first illusion in writing history is that the past lies ready-made like a book and the historian merely reads it. In fact, the past leaves uneven traces of events, processes, memories, remains, documents, objects, landscapes, languages, oral traditions and institutional records. Some survive, some are destroyed, ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 95; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 96 — आत्मसमीक्षा: समानान्तर दर्शन स्वयं अपन विखण्डन कोना स्वीकारत?

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Self-Critique: How Will Parallel Philosophy Accept Its Own Deconstruction?*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

समानान्तर दर्शन जँ दोसरक तर्क पर संशय करैत अछि, तँ अपन सात आधारकेँ अचूक घोषणाक रूपमे राखलासँ पद्धति आत्मविरोधमे पड़त। लेखक प्रमाण, यथार्थ, गरिमा, सत्ता, धर्म, इतिहास आ आत्मसमीक्षाक सात दर्पण द्वारा स्वपरीक्षणक रूपरेखा प्रस्तुत करैत छथि। गलती स्वीकृति, स्रोत सुधरब आ बाधक प्रमाण प्रकाशित करब केवल विनम्र भाषा नहि, वास्तविक संस्थागत कर्तव्य अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

अदृश्य चयन-पक्षपात, अस्पष्ट गरिमा-मानक आ बहुकेन्द्रिक निर्णयक जिम्मेवारी-विभाजन स्वयं दार्शनिक सिद्धान्तकेँ कमजोर करि सकैत अछि। आलोचकक आलोचना स्वीकार कए, किन्तु मूल प्रतिज्ञा सदा अपरिवर्तित राखल जाए तँ आत्मसमीक्षा अभिनय बनत। सार्वजनिक संशोधनक रेखा, विरोधी साक्ष्य आ प्रभावित व्यक्तिक प्रतिवादक स्थान निर्दिष्ट होयबाक चाही।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

समग्र खण्डक ई सर्वाधिक आत्मालोचनात्मक बिन्दु अछि। पाछाँक तीन उपसंहारिक अध्याय संरचना, भाषा आ सत्ता पर एहि संशोध्य विवेकक क्रमिक परीक्षा बनैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणंश : “दार्शनिक प्रणाली बनिते एक जोखिम उत्पन्न होइत अछि: जे पद्धति प्रारम्भमे प्रश्न करबाक लेल बनल छल, ओ स्वयं उत्तरक स्थिर स्रोत बनि जाए।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणांश : “दोसर कठिनाई आत्मसंगतताक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणांश : “A philosophy that criticises others has a first ethical duty: it must not place its own theory beyond criticism. Self-critique in Parallel Philosophy is not decorative humility; it is the seventh foundation of its method. If the evidence changes, the conclusion must change; if language conceals an overlooked ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 96; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

अध्याय १७ — संरचना अछि, मुदा संरचना नियति नहि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Structure Exists, but Structure Is Not Destiny*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

संरचना व्यक्ति केँ परिस्थिति, संसाधन आ सामाजिक नियम दैत अछि; मुदा एतहि सँ पूर्वनिर्धारित नियति निकालब व्यक्तिक प्रतिरोध आ सामूहिक परिवर्तन अनदेखब अछि। ओहि उलट इच्छावादी व्यक्तिवाद विद्यालय, जाति, वर्ग, लिंग आ अर्थक वास्तविक विषमता नगण्य मानि लैत अछि। लेखक संरचना आ कर्तृत्वक पुनरावर्ती सम्बन्धक स्पष्टीकरण दैत छथि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

एक असाधारण सफलता संरचनात्मक दमन नकरैत नहि; एक व्यापक असमानता व्यक्तिक सभ चयन स्वतः समाप्त नहि करैत। राज्य तथा स्थानीय शासन मे अधिकारक वितरण सहायक हो, मुदा मूल गरिमा आ हिंसा-विरोधक सीमा स्थानीय बहुमतक विवेकपर मात्र छोड़ल नहि जा सकैत। कारणक कई स्तरक जाँच आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अध्याय २५क संरचना-व्यक्ति प्रश्न एतय नैतिक संस्थाक संशोधित निष्कर्ष प्राप्त करैत अछि। समानान्तर दर्शनक कर्तृत्वक धारणा आर्थिक आ सांस्कृतिक वास्तविकता सँ जुड़ल रहबाक चाही।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “पहिल अतिवाद संरचनात्मक नियतिवाद अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “उत्तर: (subsidiarity) महत्त्वपूर्ण, मुदा मूल गरिमा, हिंसा-विरोध, समान नागरिक अधिकार आ पुनर्विचार-अधिकार स्थानीय (majority)सँ ऊपर सुरक्षा माँगि सकैत।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “Human beings do not decide in a vacuum. Language, family, caste, class, gender, school, law, market, technology, geography, memory, institutions and historical inheritance shape the field of their options. Yet this does not eliminate choice. The maxim of Parallel Philosophy is: structure is real, but structure is not ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 97; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 98 — भाषा सीमा अछि, मुदा कारागार नहि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Language Is a Limit, but Not a Prison*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

भाषा मनुष्यक अर्थ-निर्माणक अनिवार्य माध्यम अछि, मुदा जकर शब्द नहि अछि ओकर अस्तित्व असम्भव—ई निष्कर्ष अनुचित। वर्गीकरण, वाक्य आ सांस्कृतिक व्यवहार अनुभवक रूप बदलैत अछि, तथापि भौतिक कष्ट, अनभिव्यक्त अनुभूति आ नूतन खोज भाषिक सीमाकें चुनौती दैत छथि। लेखक भाषा कें सीमा मानैत छथि, कारागार नहि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

भाषिक निर्धारणवाद व्याख्याक स्वातन्त्र्य नकारि सकैत; भाषाक पूर्ण पारदर्शिता मानव ऐतिहासिक पूर्वग्रह अनदेखैत अछि। ज्ञानक त्रुटि सुधार लेल नूतन शब्द, बहुभाषिक अनुवाद आ तथ्यगत परीक्षण दुनू आवश्यक अछि। अनुभवक नाम देब एक नैतिक काज हो, मुदा नामकरण मात्रसँ कष्ट दूर नहि होइत।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

आरम्भिक भाषिक मोड़क प्रतिज्ञाक ई परिपक्व उत्तर अछि। मिथिलाक पारिभाषिक नवाचार आ डिजिटल भाषा-व्यवहार एहि सिद्धान्तक अलग-अलग वास्तविक प्रयोग मानल जा सकैत छथि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणार्श : “पहिल कठिनाई भाषिक नियतिवादक अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणार्श : “नवम कठिनाई सत्यक अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “In this chapter, the word ‘limit’ does not mean prohibition alone; it means a horizon that gives shape. Language makes some distinctions clear and others blurred; it makes some experiences shareable while reducing the subtlety of others. Yet the limit is mobile—new words, translation, science, poetry, law, vernacular ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 98; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 99 — सत्ता ज्ञानकें प्रभावित करैत अछि, सत्यकें मनमाना नहि बनबैत अछि

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : *Power Influences Knowledge, but Does Not Make Truth Arbitrary*

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

सत्ता ज्ञानक उत्पादन, पहुँच, श्रेणी आ प्रकाशन प्रभावित करैत अछि, मुदा एहि कारण सत्य मनमाना कथा नहि बनैत। कोई संस्था तथ्य दबा सकैत अछि, घटना कें अनघटित नहि करि सकैत। लेखक सामाजिक समालोचना आ तथ्यगत यथार्थवादक बीच एहन अन्तर स्थापित करैत छथि जे अनुसन्धानक नैतिक आधार बचबैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

सत्ता-सम्बन्ध देखबैत प्रत्येक विरोधी तथ्य कें शासकक बनाओल कथा कहब आत्म-अप्रतिवाद बनि सकैत अछि। उल्टा प्रत्यक्ष आँकड़ा कें पूर्ण निष्पक्ष मानि लेब स्रोतक चयन, प्रतिनिधित्वक कमी आ मापन-त्रुटि अनदेखैत अछि। सत्य जाँचबाक प्रयत्न सत्तारहित असम्भव हो, तैयो विरोधी प्रमाणक सार्वजनिक व्यवस्था संभव आ आवश्यक अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

फूको सँ वैज्ञानिक यथार्थवाद आ डिजिटल सूचनाधिकार धरि दीर्घ संवाद एहि अध्यायमे एक साथ निचोड़ पवैत अछि। आत्मसमीक्षाक कसौटी बेगर एहि समन्वय कें स्थायी अन्तिम सत्यक दर्जा नहि भेटि सकैत।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणंश : “मुदा दोसर अतिवाद सेहो समान रूपेँ त्रुटिपूर्ण अछि: जँ सत्ता ज्ञान-उत्पादन प्रभावित करैत अछि, तँ सत्य केवल सत्ता-सँ बनाओल कथा अछि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणंश : “आठम समस्या (relativism)क अछि।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धर्णांश : “But the opposite extreme is equally mistaken: if power influences the production of knowledge, then truth is merely a story made by power. This conclusion conflates the ‘social conditions of knowledge’ with the ‘truth-value of a claim’. A government cannot stop rainfall by issuing an order against rain; a university ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 99; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय ।

अध्याय 100 – गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन: खण्ड-१ आ खण्ड-२ केर समेकित प्रतिपादन

अंग्रेजी अध्यायक शीर्षक : Gajendra Thakur's Parallel
Philosophy: Integrated Statement of Volumes I and II

मूल प्रतिज्ञा आ तर्कक मूल्याङ्कन

दुनू खण्डक समेकन एकटा नूतन अचूक विद्यालय स्थापित करबाक प्रयत्न नहि, संशोध्य सार्वजनिक तर्कक परिपक्व रूपरेखा अछि। प्रथम खण्डक बहुप्रमाणीय विवेकवाद, सहअस्तित्वात्मक यथार्थवाद, गरिमा, लोकतन्त्र, धार्मिक बहुलता, इतिहास आ आत्मसमीक्षाक आधार दोसर खण्डमे भाषा, संरचना, सत्ता, लिंग, औपनिवेशिकता, विज्ञान आ डिजिटल निर्णयक कठिन प्रश्न सँ गुजरैत अछि।

प्रतिपक्ष, सीमा आ आपत्ति

समेकनक जोखिम अछि जे सात आधार अपने परीक्षणक निष्कर्षक बदला ग्रन्थक स्थिर शपथ बनि जाए। “समानान्तर” शब्दकें नूतन केन्द्रक विशेषाधिकार नहि, विविध आरम्भबिन्दुक न्यायसंगत परीक्षा होयबाक चाही। उपयोगी निश्चय लेल स्पष्ट दावा, मुख्य प्रमाण, विरोधी साक्ष्य, भाषिक सीमा, सामाजिक परिणाम, संशोधनक रेखा आ सार्वजनिक प्रतिकारक क्रम आवश्यकता अछि।

अन्तराध्यायिक दार्शनिक सम्बन्ध

अन्तिम अध्यायक वास्तविक उपलब्धि पूर्ववर्ती अध्यायसभक श्रेणीबद्ध निष्कर्ष एक सूत्रमे मिलायब नहि, असहमत दावीपर लागू होयबाक प्रश्नात्मक कसौटी अछि। एही शर्तमे भाषा वास्तविकताक एक माध्यम रहैत अछि, सत्ता सत्यक एकाधिपति नहि, आ मानवीय गरिमा विवेकक सार्वजनिक सीमा बनैत अछि।

समीक्षाक मूल पाठ-साक्ष्य

मूल मैथिली पाठक उद्धरणश : “समानान्तर दर्शनक अर्थ दोसर केन्द्र स्थापित करब नहि।”

मूल मैथिली पाठक दोसर उद्धरणश : ““समानान्तर” शब्दक पहिल अर्थ अछि एकाधिक वैध आरम्भ-बिन्दु।”

अंग्रेजी समकक्ष : चयनित पाठ-परीक्षण

मूल अंग्रेजी पाठक उद्धरणश : “Parallel Philosophy does not mean establishing another centre. The aim of this project is not to create a permanent ‘alternative stream’ against the so-called mainstream and then turn it into the same kind of intellectual monopoly. Its loyalty is not to any permanent camp, but to evidence, truth, dignity, justice, ...”

पाठाधार : गजेन्द्र ठाकुर, समानान्तर दर्शन, खण्ड २, अध्याय 100; मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी अध्याय।

समग्र साहित्यिक आ दार्शनिक मूल्याङ्कन

पद्धतिक मौलिक प्रश्न

समानान्तर दर्शनक मूल विचार मुख्यधाराक विरोध करबाक नूतन एकाधिकार स्थापित करब नहि। ई प्रश्नक बहु आरम्भबिन्दु स्वीकार करैत अछि, मुदा प्रमाणक सार्वजनिक कसौटी ककरो लेल ढील नहि दैत। एहि कारण ग्रन्थक मूल्य भारत आ पाश्चात्य परम्पराक नामक मिलानमे नहि, ऐतिहासिक भेद सुरक्षित रखैत समस्या-संवाद चलाएबमे अछि।

भाषा आ यथार्थ

फ्रेगे, रसेल, विट्गेन्स्टाइन, सस्यूर आ देरिदाक प्रश्नसभकेँ एकहि भाषिक नियतिवादमे मिलायब ग्रन्थक विरुद्ध होयत। लेखक स्थिर नामकरणक आलोचना करैत छथि, मुदा नदी, शरीर, भूकम्प आ ऐतिहासिक हिंसाक भाषा-बाह्य प्रतिरोध पर बल सेहो दैत छथि। समीक्षा मे एहि दू शर्तक सम्बन्ध ज्ञानमीमांसा लेल निर्णायक मानल गेल।

सत्ता आ इतिहास

फूकोक पुरातत्त्व आ वंशावली संस्था तथा अभिलेखक चयनक समस्या खोलैत अछि। उत्तर-औपनिवेशिक चिन्तन प्रतिनिधित्वक शक्ति जाँचैत अछि, मुदा उपेक्षित स्रोत स्वतः सत्य नहि बनैत। मिथिलाक क्षेत्रीय इतिहास लेल कथनक तिथि, स्रोतक निर्भरता, स्थाननाम, प्रशासनिक वर्गीकरण आ मौखिक स्मृतिक अन्तर स्पष्ट रखब अनिवार्य अछि।

समाज, अनुभव आ गरिमा

स्त्रीवादी, अन्तर्संबद्ध असमानता आ अधीनस्थ अध्ययनक अध्यायसभ गरिमाकेँ अमूर्त शिष्टाचार नहि, वास्तविक सामाजिक अवसर आ श्रवणक अधिकारसँ जोड़ैत छथि। समान मानवीय सम्मानक दाबी स्थानीय विविधता सुनबाक विरोधी नहि। विशिष्ट दमनक प्रमाण आ साझा सार्वजनिक अधिकारकेँ एक साथ माननाइ एहि विमर्शक महत्त्वपूर्ण नैतिक परीक्षा अछि।

विज्ञान आ डिजिटल निर्णय

मन-दर्शनक अनेक स्तरक व्याख्या आ वैज्ञानिक यथार्थवादक संशोध्य दाबी डिजिटल सूचना सँ अलग नहि। एल्गोरिदमक कार्यकुशलता, डेटा-निर्माण, मानवीय नियंत्रण आ नैतिक परिणामक परीक्षण अलग-अलग होयत। कृत्रिम बुद्धिक उत्तरको लेखकीय तथा संस्थागत प्रमाण-श्रृंखलाक दायित्वसँ मुक्त नहि कएल जा सकैत अछि।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय

दूनु खण्डसँ प्राप्त सबसँ मजबूत प्रतिज्ञा आत्मसमीक्षाक अनिवार्यता अछि। सात दार्शनिक आधार जँ कोनो दुरुह अन्तिम सिद्धान्त बनि जाए, तँ मूल प्रस्ताव विफल होयत। मुदा ओहि आधारकेँ संशोधन, बाधक प्रमाण, प्रतिपक्षक सम्मान आ प्रभावित व्यक्तिक अधिकारक व्यावहारिक प्रश्न बनायब पर समानान्तर दर्शन अपना समक्ष ठोस तथा विचारोत्तेजक बौद्धिक पद्धति प्रस्तुत करैत अछि।

मूल ग्रन्थ-सन्दर्भ

गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन, खण्ड १। विदेह, २०२६। मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी द्विभाषिक पाठ।

गजेन्द्र ठाकुर। गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शन, खण्ड २। विदेह, २०२६। मूल मैथिली आ उपलब्ध अंग्रेजी द्विभाषिक पाठ।

प्रश्न — प्रमाण — प्रतिपक्ष

पुनर्परीक्षण

समानान्तर दर्शन

खण्ड २क समेकित आलोचना

एहि ग्रन्थमे गजेन्द्र ठाकुरक समानान्तर दर्शनक दोसर खण्डक एक सय अध्यायक पाठाधारित समीक्षा प्रस्तुत अछि। भाषाक दर्शन, संरचनावाद, विखण्डन, ज्ञान आ सत्ता, स्त्रीवादी विचार, उत्तर-औपनिवेशिक इतिहास, मन-दर्शन, विज्ञान, डिजिटल सत्य आ कृत्रिम बुद्धि धरि तर्कक यात्रा चलैत अछि।

प्रत्येक अध्यायमे मूल प्रतिज्ञा, प्रतिपक्ष आ सीमाक आलोचना; मूल मैथिली पाठ-साक्ष्य आ अंग्रेजी रूपान्तरक चयनित तुलनात्मक उद्धरण देल गेल अछि।

विदेहक दू आधिकारिक वेबसाइट



www.videha.co.in



videha-ejournal.github.io/videha